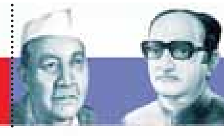

भारत का सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी दैनिक
''कलम, बलिदान और स्वाभिमान की परिभाषा''

संस्थापकः शहीद शिरोमणि लाला जगतनारायण जी, अमर शहीद रमेश चन्द्र जी एवं कलम के योद्धा अश्विनी कुमार जी

पंजाब केसरी

युवा भारत युवा अखबार!

PunjabKesari.com PunjabKesari.com @punjabkesaricom

शनिवार 21 दिसम्बर 2024 ◆ दिल्ली ◆ तदनुसार 6 पौष 2081 LD ****

Punjab Kesari, Delhi
वर्ष : 41 / अंक : 354
मूल्य ₹ 4.50
16 नेपाली रुपए/हवाई जहाज से ₹ 10.00
पृष्ठ संख्या 12
Ph. : 011-30712200, 45212200

QUALITY SINCE 1936
KANODIA
कानोडिया कोल्हू ब्रांड
कच्ची घानी और पीली सरसों का तेल

Lowest Gold Rate in all over Delhi
₹68500* Per 10g
Today's B.I.S. Hallmark 91.6/22CT Gold Rate
8% Making on all items
Gold Testing Machine Available
KAPIL JEWELLERS SINCE 2010.
F-24/35-36, Sec-7 Rohini
9999889969

राष्ट्रीय सर्राफा

	सोना		चांदी
दिल्ली 24K	76950	चांदी तैयार	90500
कोलकाता 24K	76800	चांदी तैयार	90500
मुम्बई 24K	7680	चांदी तैयार	90500
चेन्नई 24K	7680	चांदी तैयार	98000

विदेशी मुद्रा बनाम रुपया

करंसी	खरीद	बिक्री
अमरीकी डालर	83.65	86.75
पौंड स्टर्लिंग	104.18	108.43

शेयर सूचकांक

BSE	78041.59	-1176.46
NSE	23587.50	-364.20

मौसम
Min 6°c Max 23°c

पंजाब केसरी
युवा भारत युवा अखबार!
कूपन न. 72

सपा सांसद जिया के आवास पर चला बुल्डोजर

(पढ़ें पृष्ठ-2 पर)

हंगामा है क्यों बरपा, सत्र खत्म

इंडिया गठबंधन और भाजपा सांसदों ने किये प्रदर्शन, आरोप-प्रत्यारोप जारी

पंजाब केसरी/नई दिल्ली

संसद का शीतकालीन सत्र आज गर्मागर्मी के बीच समाप्त हो गया। आज संसद की कार्यवाही शुरू होते ही विपक्ष ने हंगामा किया, जिसके चलते लोकसभा और राज्यसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल तक स्थगित कर दी गई। वहीं, सदन के बाहर पक्ष-विपक्ष का संग्राम देखने को मिला। भाजपा सांसदों ने जहां महात्मा गांधी की प्रतिमा के पास राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी के खिलाफ प्रदर्शन किया, वहीं कांग्रेस और इंडिया गठबंधन के सांसदों ने विजय चौक से संसद की ओर मार्च किया। उधर, आज जैसे ही लोकसभा की कार्यवाही शुरू हुई विपक्षी सांसदों ने नारेबाजी शुरू कर दी। नारेबाजी को देखते हुए लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सदन की कार्यवाही अनिश्चितकाल तक स्थगित कर दी। वहीं, राज्यसभा की कार्यवाही 12 बजे तक स्थगित हो गई है। कांग्रेस और विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' (इंडिया) के कई अन्य घटक दलों के नेताओं ने बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर के संदर्भ में गृह मंत्री अमित शाह द्वारा की गई ''अपमानजनक'' टिप्पणी के खिलाफ शुक्रवार को यहां मार्च निकाला और शाह से माफी तथा इस्तीफे की मांग की।

विपक्षी दलों के सांसदों ने संसद के निकट विजय चौक से संसद भवन तक मार्च किया। उन्होंने बाबासाहेब की तस्वीर वाली तख्तियां लेकर नारेबाजी की। उन्होंने 'जय भीम', ''अमित शाह इस्तीफा दो'' और ''अमित शाह माफी मांगो'' के नारे लगाए। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी, पार्टी के कई सांसद, द्रमुक सांसद कनिमोझी, राष्ट्रीय जनता दल की नेता मीसा भारती, झारखंड मुक्ति मोर्चा की सांसद महुआ माझी और 'इंडिया' गठबंधन के कुछ अन्य घटक दलों के नेता इस विरोध प्रदर्शन में शामिल हुए। प्रियंका गांधी ने आरोप लगाया कि संविधान निर्माता बाबासाहेब आंबेडकर का अपमान किया गया है। उन्होंने कहा कि देश बाबासाहेब का अपमान सहन नहीं करेगा। विपक्षी दल संसद के शीतकालीन सत्र में, संसद भवन के मकर द्वार के निकट विरोध प्रदर्शन करते थे, लेकिन बृहस्पतिवार की 'धक्का-मुक्की' की घटना के बाद लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने निर्देश दिया कि कोई भी राजनीतिक दल, सांसद और सांसदों का समूह संसद के किसी भी द्वार पर प्रदर्शन नहीं कर सकते। गृह मंत्री अमित शाह की बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर से संबंधित टिप्पणी को लेकर विरोध जताते हुए कल विपक्षी सदस्यों ने मार्च निकाला तो भाजपा सांसदों ने कांग्रेस पर बाबासाहेब के अपमान का आरोप लगाते हुए प्रदर्शन किया। संसद भवन के 'मकर द्वार' के निकट सत्तापक्ष और विपक्ष के सदस्य एक दूसरे के सामने आ गए और जमकर नारेबाजी की। भारतीय जनता पार्टी का आरोप है कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने धक्का-मुक्की की जिस वजह से उसके बुजुर्ग सांसद प्रताप सारंगी चोटिल हुए। भाजपा सासंद मुकेश राजपूत को भी चोट लगी है।

(पृष्ठ-3 भी देखें)

गृहमंत्री अमित शाह के इस्तीफे की मांग को लेकर इंडिया गठबंधन के सांसद विजय चौक से संसद तक मार्च निकालते हुए। (दाएं) भाजपा सांसद धक्का-मुक्की को लेकर राहुल गांधी के खिलाफ प्रदर्शन करते हुए।

धक्का-मुक्की कांड की जांच क्राइम ब्रांच करेगी

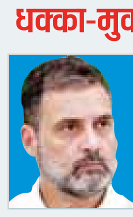

संसद परिसर में गुरुवार को हुए हंगामे और धक्का-मुक्की कांड को लेकर भाजपा और कांग्रेस की शिकायत की जांच क्राइम ब्रांच को सौंपी गई। बीजेपी की शिकायत में लोकसभा नेता राहुल गांधी के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। बीजेपी का आरोप है कि राहुल गांधी ने भाजपा सांसदों को धक्का दिया और 2 सांसद जख्मी हो गए। वहीं, कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि बीजेपी के सांसदों ने कांग्रेस अध्यक्ष को धक्का दिया। कांग्रेस के सांसदों पर हमला किया गया। अब मामला पुलिस थाने तक पहुंच चुका हैं। दोनों तरफ से एक दूसरे पर गंभीर आरोप लगाए हैं। (पढ़ें पृष्ठ-2 पर)

एलपीजी टैंकर में विस्फोट

12 की मौत, 35 झुलसे, 31 वाहन जले

बनवारी कुमावत (पंजाब केसरी)/ जयपुर

जयपुर के भांकरोटा इलाके में शुक्रवार अलसुबह एलपीजी टैंकर को एक ट्रक द्वारा टक्कर मारे जाने के बाद लगी आग ने 31 वाहनों को अपनी चपेट में ले लिया। इस दुर्घटना में 12 लोग जिंदा जल गए तथा 35 अन्य झुलस गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। चिकित्सा विभाग के अधिकारियों ने बताया कि हादसे में आठ लोगों की मौत हो चुकी है और आग में झुलसे लगभग 35 लोग अस्पताल में भर्ती हैं जिनमें से कुछ वेंटिलेटर पर हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हादसे पर शोक जताते हुए मृतक के परिजनों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से दो-दो लाख रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की है। राष्ट्रपति ने भी हादसे में लोगों की मौत पर दुख प्रकट किया है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने हादसे के बारे में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से बात कर जानकारी ली। मुख्यमंत्री शर्मा, उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा तथा गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढम घटनास्थल पहुंचे। मुख्यमंत्री ने कहा कि घटना की विस्तृत जांच करवाएंगे और घायलों के इलाज की व्यवस्था की गई है। अधिकारियों ने बताया कि हादसा अलसुबह करीब पौने छह बजे हुआ। शुरुआती जानकारी के अनुसार जयपुर-अजमेर राष्ट्रीय राजमार्ग पर भांकरोटा के पास एलपीजी टैंकर को एक ट्रक ने टक्कर मार दी जिससे आग लग गई। उन्होंने बताया कि देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया और वहां से गुजर रही एक बस सहित अनेक ट्रक, कार उसकी चपेट में आ गए। घटना के वीडियो में लोग जान बचाने के लिए भागते नजर आए और शुरुआत में स्थानीय लोगों ने उन्हें अस्पताल पहुंचाया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि आग की लपटें एक किलोमीटर दूर से नजर आ रही थीं और राष्ट्रीय राजमार्ग का एक बड़ा हिस्सा ''आग के गोले'' में तब्दील हो गया था।

पीएम ने शोक जताया

- पलभर में ही आग के गोले में तब्दील हो गया राष्ट्रीय राजमार्ग का एक हिस्सा

अधिकारियों ने बताया कि प्रारंभिक जानकारी में कम से कम 31 वाहनों के जलने की सूचना है जिनमें 29 ट्रक तथा दो बस शामिल हैं। पुलिस के अनुसार आशंका है कि संभवत: अचानक आग की चपेट में आने से कुछ लोग अपने वाहनों से बाहर नहीं निकल पाए और अंदर ही जल गए। उसने बताया कि सभी वाहनों की गहन जांच के बाद ही स्थिति स्पष्ट हो पाएगी।राज्य के स्वास्थ्य मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर ने बताया कि घायलों में से करीब आधे की हालत 'बेहद गंभीर' है। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और स्वास्थ्य मंत्री खींवसर सवाई मानसिंह (एसएमएस) अस्पताल पहुंचे, जहां झुलसे हुए लोगों को भर्ती कराया गया है।

मृतकों के परिजनों को 5 लाख : भजनलाल शर्मा

(पढ़ें पृष्ठ-2 पर)

भाजपा सांसद अपराजिता ने प्रियंका को तोहफे में '1984' लिखा बैग दिया

पंजाब केसरी/नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सांसद अपराजिता सारंगी ने शुक्रवार को कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी को एक बैग उपहार में दिया, जिस पर लाल रंग से '1984' लिखा है। सारंगी ने प्रियंका को यह बैग ऐसे समय में दिया है जब कुछ दिन पहले कांग्रेस सांसद फलस्तीन और बांग्लादेश पर लिखे संदेश वाला बैग लेकर संसद पहुंची थीं।भुवनेश्वर से भाजपा सांसद सारंगी ने संसद के गलियारे में प्रियंका गांधी को यह बैग दिया। सारंगी ने कांग्रेस नेता को यह बैग तब सौंपा, जब वह संसद के गलियारे से गुजर रही थीं। प्रियंका ने सारंगी से बैग लिया और आगे बढ़ गईं। भाजपा नेता ने कहा कि बैग पर ''1984'' लिखा हुआ है। उन्होंने कहा कि यह भी एक मुद्दा है, जिसे कांग्रेस नेता को उठाना चाहिए, क्योंकि वह अपने बैग पर बयान दे रही हैं।फलस्तीन के लोगों के प्रति समर्थन दर्शाते हुए वायनाड से सांसद सोमवार को एक बैग लेकर संसद पहुची थीं, जिस पर ''फलस्तीन'' लिखा था।कांग्रेस सांसद को बाद में मंगलवार को संसद में एक क्रीम रंग के हैंडबैग के साथ देखा गया था, जिस पर लिखा था, ''बांग्लादेश के हिंदुओं और ईसाइयों के साथ खड़े हों।''

डीएनडी फ्लाईवे टोलमुक्त बना रहेगा : सुप्रीम कोर्ट

पंजाब केसरी/नई दिल्ली

- अदालत ने खारिज की नोएडा टोल ब्रिज कम्पनी की याचिका

उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली को नोएडा से जोड़ने वाले दिल्ली-नोएडा-डायरेक्ट (डीएनडी) फ्लाईवे पर टोल वसूली के संबंध में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के 2016 के आदेश को चुनौती देने वाली एक निजी कंपनी की याचिका को शुक्रवार को खारिज करते हुए फैसला सुनाया कि डीएनडी फ्लाईवे टोलमुक्त रहेगा।इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने अपने आदेश में निजी कंपनी को डीएनडी फ्लाईवे पर यात्रियों से टोल वसूली बंद करने का आदेश दिया था।इस निर्णय से फ्लाईवे पर प्रतिदिन आवागमन करने वाले लाखों लोगों को लाभ होगा।

न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति उज्ज्वल भुइयां की पीठ ने कहा कि डीएनडी फ्लाईवे से यात्रा करने वाले यात्रियों से टोल वसूलने के लिए निजी कंपनी नोएडा टोल ब्रिज कंपनी लिमिटेड (एनटीबीसीएल) को ठेका देना अन्यायपूर्ण, अनुचित और मनमाना है।

डल्लेवाल को अस्पताल में भर्ती करने का फैसला डाक्टर और पंजाब सरकार करेगी

पंजाब केसरी/नई दिल्ली

- अधिकारी किसान नेता को मनाने का प्रयास जारी रख सकते हैं

उच्चतम न्यायालय ने आमरण अनशन पर बैठे किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल के अस्पताल में भर्ती होने का फैसला शुक्रवार को पंजाब सरकार के अधिकारियों और चिकित्सकों पर छोड़ दिया।

न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां की पीठ ने कहा कि डल्लेवाल के स्वास्थ्य की देखभाल करना पंजाब सरकार की जिम्मेदारी है, न्यायालय ने पंजाब के मुख्य सचिव और स्वास्थ्य अधिकारियों से डल्लेवाल की चिकित्सा स्थिति पर दो जनवरी तक रिपोर्ट मांगी है और कहा है कि अगर जरूरत पड़ी तो राज्य सरकार अदालत का रुख कर सकती है। पीठ ने कहा कि 70 वर्षीय डल्लेवाल को पंजाब और हरियाणा के बीच खनौरी सीमा पर प्रदर्शन स्थल से 700 मीटर के दायरे में स्थापित एक अस्थायी अस्पताल में स्थानांतरित किया जा सकता है।

पंजाब सरकार के महाधिवक्ता गुरमिंदर सिंह ने किसान नेता के स्वास्थ्य की स्थिति पर मुख्य सचिव को एक हलफनामा सौंपा और कहा कि डल्लेवाल को जबरन उस स्थान से हटाने से उन्हें आघात पहुंच सकता है तथा स्थिति और बिगड़ सकती है।

पीठ ने कहा कि अधिकारी उन्हें अस्पताल ले जाने के लिए मनाने के अपने प्रयास जारी रख सकते हैं।

नर्सरी में दाखिले की प्रक्रिया पूरी

नई दिल्ली : दिल्ली के करीब 1,741 निजी स्कूलों में शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए नर्सरी में दाखिले की प्रक्रिया शुक्रवार को संपन्न हो गई। दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशालय (डीओई) ने 12 नवंबर को एक परिपत्र में घोषणा की थी कि पंजीकरण फॉर्म जमा करने की अंतिम तिथि 20 दिसंबर है। (सम्पूर्ण कवरेज पृष्ठ-7 पर)

पीपी चौधरी की अध्यक्षता में जेपीसी गठित

पंजाब केसरी/नई दिल्ली

- एक देश एक चुनाव को लेकर गठित जेपीसी में लोकसभा से 27 और राज्यसभा से 12 सदस्य शामिल किए गए हैं

देश में संसदीय और विधानसभा चुनाव एक साथ कराने के प्रावधान वाले विधेयक पर विचार के लिए संसद ने शुक्रवार को 39 सदस्यीय संयुक्त संसदीय समिति का गठन कर दिया और इसकी अध्यक्षता की जिम्मेदारी पूर्व केंद्रीय मंत्री व भाजपा सांसद पी पी चौधरी को सौंप दी।

राज्यसभा में इस समिति के 12 सदस्यों को नामित करने के प्रस्ताव को ध्वनि मत से मंजूरी दिए जाने के साथ ही 39 सदस्यीय समिति के गठन का रास्ता साफ हो गया। इससे पहले, कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने निचले सदन में लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ कराने के प्रावधान वाले 'संविधान (129वां संशोधन) विधेयक, 2024' और उससे जुड़े 'संघ राज्य क्षेत्र विधि (संशोधन) विधेयक, 2024' को संसद की संयुक्त समिति के विचार के लिए भेजे जाने का प्रस्ताव रखा था, जिसे ध्वनिमत से मंजूरी दे दी गई। इन विधेयकों पर विचार के लिए बनी संयुक्त समिति में लोकसभा से 27 सदस्यों को नामित किया गया।

बाद में, लोकसभा सचिवालय की ओर जारी एक आदेश में समिति के गठन के साथ ही इसके सभी सदस्यों के नामों की घोषणा की गई और कहा गया कि चौधरी को इसका अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

समिति के 39 सदस्यों में भाजपा के 16, कांग्रेस के पांच, सपा, तृणमूल कांग्रेस और द्रमुक के दो-दो तथा शिवसेना, तेदेपा, जदयू, रालोद, लोजपा (रामविलास), जन सेना पार्टी, शिवसेना-यूबीटी, राकांपा-(सपा), माकपा, आप, बीजद और वाईएसआरसीपी के एक-एक सदस्य शामिल हैं।

समिति में राजग के कुल 22 सदस्य हैं जबकि विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन के 10 सदस्य हैं। बीजद और वाईएसआरसीपी सत्तारूढ़ या विपक्षी गठबंधन के सदस्य नहीं हैं।

प्रदूषण के बीच कोहरा, बारिश बढ़ाएगी मुश्किलें

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): राष्ट्रीय राजधानी में शुक्रवार को 24 घंटे का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 429 दर्ज किया गया जो ''गंभीर'' श्रेणी में आता है। इसमें पीएम 2.5 की अधिक मात्रा रही, जो सूक्ष्म कण पदार्थ है और स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा करता है। वहीं मौसम विभाग का कहना है कि आने वाले दिनों में घना कोहरा और बारिश भी दिल्ली वालों की परेशानी बढ़ा सकती है।

दिल्ली के 36 निगरानी केंद्रों में से 14 ने वायु गुणवत्ता का स्तर 'अति गंभीर' श्रेणी में दर्ज किया, जिसमें एक्यूआई 450 से अधिक था। शेष केंद्रों पर एक्यूआई का स्तर 401 से 450 के बीच 'गंभीर' श्रेणी में दर्ज किया गया। दिल्ली में शुक्रवार को अधिकतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। (पृष्ठ-7 भी देखें)

संघ प्रमुख भागवत का आह्वान राम मंदिर जैसे मुद्दे हर जगह खड़े मत कीजिए...एक-दूसरे के साथ मिलकर रहिए

हिन्दुओं का नेता बनने के लिए उछाले जा रहे हैं मंदिर-मस्जिद विवाद

पंजाब केसरी/पुणे (महाराष्ट्र)

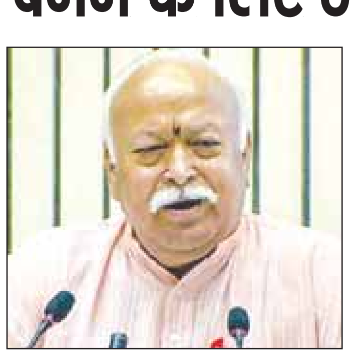

- हम दुनिया को सद्भावना प्रदान करना चाहते हैं तो हमें इसका एक मॉडल बनाने की जरूरत है
- भारत को यह दिखाने की जरूरत है कि हम एक साथ रह सकते हैं

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने कई मंदिर-मस्जिद विवादों के फिर से उठने पर चिंता व्यक्त की और कहा कि अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के बाद कुछ लोगों को ऐसा लग रहा है कि वे ऐसे मुद्दों को उठाकर ''हिंदुओं के नेता'' बन सकते हैं।भागवत ने सहजीवन व्याख्यानमाला में 'भारत-विश्वगुरु' विषय पर बृहस्पतिवार को व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने समावेशी समाज की वकालत की और कहा कि दुनिया को यह दिखाने की जरूरत है कि देश सद्भावना के साथ एक साथ रह सकता है।जून 2022 में भी मोहन भागवत ने मंदिर-मस्जिद विवाद से बचने की नसीहत दी थी। तब बनारस की ज्ञानवापी मस्जिद के सर्वे का मुद्दा काफी गरमाया हुआ था। ताज महल को भी मंदिर बताते हुए सर्वे की मांग हो रही थी। संघ प्रमुख ने तब कहा था, 'हर दिन एक नया मुद्दा नहीं उठाना चाहिए। झगड़े क्यों बढ़ाएं?... हर मस्जिद में शिवलिंग क्यों ढूंढना?'अब अगर भागवत को फिर से उसी तरह की नसीहत देनी पड़ी है तो इसकी वजह अलग-अलग जगहों पर नए-नए मंदिर-मस्जिद विवाद का सामने आना है।

भारतीय समाज की बहुलता को रेखांकित करते हुए भागवत ने कहा कि रामकृष्ण मिशन में क्रिसमस मनाया जाता है। उन्होंने यह भी कहा कि ''केवल हम ही ऐसा कर सकते हैं क्योंकि हम हिंदू हैं।''उन्होंने कहा, ''हम लंबे समय से सद्भावना से रह रहे हैं। अगर हम दुनिया को यह सद्भावना प्रदान करना चाहते हैं, तो हमें इसका एक मॉडल बनाने की जरूरत है। राम मंदिर के निर्माण के बाद, कुछ लोगों को लगता है कि वे नयी जगहों पर इसी तरह के मुद्दों को उठाकर हिंदुओं के नेता बन सकते हैं। यह स्वीकार्य नहीं है।''भागवत ने कहा कि राम मंदिर का निर्माण इसलिए किया गया क्योंकि यह सभी हिंदुओं की आस्था का विषय था। उन्होंने किसी विशेष स्थल का उल्लेख किए बिना कहा, ''हर दिन एक नया मामला (विवाद) उठाया जा रहा है। इसकी अनुमति कैसे दी जा सकती है? यह जारी नहीं रह सकता। भारत को यह दिखाने की जरूरत है कि हम एक साथ रह सकते हैं।''

हाल के दिनों में मंदिरों का पता लगाने के लिए मस्जिदों के सर्वेक्षण की कई मांगें अदालतों तक पहुंची हैं, हालांकि भागवत ने अपने व्याख्यान में किसी का नाम नहीं लिया।उन्होंने कहा कि बाहर से आए कुछ समूह अपने साथ कट्टरता लेकर आए और वे चाहते हैं कि उनका पुराना शासन वापस आ जाए। उन्होंने कहा, ''लेकिन अब देश संविधान के अनुसार चलता है। इस व्यवस्था में लोग अपने प्रतिनिधि चुनते हैं, जो सरकार चलाते हैं। आधिपत्य के दिन चले गए।''

हरियाणा के पूर्व सीएम ओम प्रकाश चौटाला का निधन

पंजाब केसरी/चंडीगढ़, गुरुग्राम

इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला का शुक्रवार को गुरुग्राम में निधन हो गया। वह 89 वर्ष के थे। पार्टी प्रवक्ता ने बताया कि पांच बार हरियाणा के मुख्यमंत्री रहे और पूर्व उप प्रधानमंत्री देवीलाल के बेटे चौटाला को गुरुग्राम में उनके घर में दिल का दौरा पड़ा, जिसके बाद उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया लेकिन उन्हें बचाया नहीं जा सका। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि उन्होंने मेदांता अस्पताल में दोपहर करीब 12 बजे अंतिम सांस ली। हरियाणा के एक प्रमुख राजनीतिक परिवार से ताल्लुक रखने वाले और एक प्रमुख क्षेत्रीय संगठन का चेहरा रहे चौटाला पिछले कुछ समय से उम्र संबंधी स्वास्थ्य समस्याओं का सामना कर रहे थे। उनके दो बेटे और तीन बेटियां हैं। उनकी पत्नी स्नेह लता का पांच साल पहले निधन हो गया था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी सहित कई नेताओं ने चौटाला के निधन पर शोक व्यक्त किया। चौटाला के निधन पर शोक जताते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, ''हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला जी के निधन से अत्यंत दुख हुआ है।

संसद धक्का-मुक्की कांड की जांच दिल्ली क्राइम ब्रांच करेगी

जल्द ही सीन रिक्रिएट करेगी पुलिस टीम

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) : संसद में धक्का-मुक्की कांड की जांच क्राइम ब्रांच को सौंप दी गई है। जल्द ही क्राइम ब्रांच सीन रिक्रिएट करेगी। दोनों मामलों (बीजेपी की शिकायत और कांग्रेस की शिकायत) की जांच शुरू हो चुकी है। बीजेपी की शिकायत में लोकसभा के नेता राहुल गांधी के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। बीजेपी ने कांग्रेस सांसद राहुल गांधी पर सांसदों को धक्का देने का आरोप लगाया था। धक्का-मुक्की में घायल सांसदों महेश राजपूत और प्रताप सारंगी के बयान दर्ज किए जाएंगे। वहीं घटना की सीसीटीवी फुटेज और मोबाइल वीडियो की पड़ताल होगी। मीडिया के कैमरे की फुटेज भी सबूत के तौर पर जुटाई जाएगी। फुटेज इकट्ठा करने के लिए लोकसभा स्पीकर से इजाजत ली जाएगी। बयान और फुटेज मिलने के बाद घटनास्थल पर सीन रिक्रिएट किया जा सकता है। राहुल गांधी और अन्य सांसदों को नोटिस भेजा जाएगा। बयान दर्ज करने के बाद राहुल गांधी से पूछताछ की जाएगी। कांग्रेस की शिकायत में बीजेपी सांसदों पर मल्लिकार्जुन खड़गे को धक्का देने और एससी/एसटी एक्ट के तहत आरोप लगाए गए है। पुलिस इस शिकायत की भी जांच कर रही है।

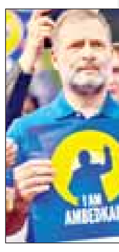

कौन-कौन सी धाराएं

पुलिस ने दर्ज की एफआईआरबीजेपी की शिकायत के आधार पर दिल्ली पुलिस ने एफआईआर दर्ज की है। संसद मार्ग पुलिस स्टेशन में भारतीय दंड संहिता (बीएनएस) की धारा 117 (गंभीर चोट पहुंचाने का प्रयास), 125 (दूसरों के जीवन या व्यक्तिगत सुरक्षा को खतरे में डालना), 131 (अपराधिक बल का उपयोग), 351 (आपराधिक धमकी) और 3(5) (सामान्य उद्देश्य) के तहत मामला दर्ज किया गया है।

पन्नू की भारतीय राजदूत को धमकी भारत ने अमेरिका के समक्ष उठाया मुद्दा

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): भारत सरकार ने खालिस्तानी अलगाववादी गुरपतवंत सिंह पन्नू की ओर से अमेरिका में भारत के राजदूत विनय मोहन क्वात्रा के खिलाफ ताजा धमकी को गंभीरता से लिया है। विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार को बताया कि इस मुद्दे को वाशिंगटन में अधिकारियों के समक्ष उठाया गया है। हाल ही में एक वीडियो में पन्नू ने धमकी दी कि क्वात्रा अमेरिका में खालिस्तान समर्थक सिखों के रडार पर है। खालिस्तानी अलगाववादी ने दावा किया कि क्वात्रा रूसी अधिकारियों के संपर्क में हैं, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में खालिस्तानी नेटवर्क पर भारतीय खुफिया एजेंसियों को इनपुट प्रदान कर रहे हैं। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने शुक्रवार को नई दिल्ली में साप्ताहिक मीडिया ब्रीफिंग के दौरान कहा, जब भी ऐसी धमकियां दी जाती हैं, हम उन्हें बहुत गंभीरता से लेते हैं और अमेरिकी सरकार के समक्ष उठाते हैं। इस विशेष मामले में भी, हमने इसे अमेरिकी सरकार के समक्ष उठाया है और हमें उम्मीद है कि संयुक्त राज्य सरकार हमारी सुरक्षा चिंताओं को गंभीरता से लेगी और इस पर कार्रवाई करेगी। पूर्व विदेश सचिव क्वात्रा ने इस साल अगस्त में तरनजीत सिंह संधू की जगह संयुक्त राज्य अमेरिका में भारत के राजदूत का पदभार संभाला था।

- वीडियो में पन्नू ने धमकी दी कि अमेरिका में भारत के राजदूत विनय मोहन क्वात्रा खालिस्तान समर्थक सिखों के निशाने पर हैं

क्वात्रा की नियुक्ति ऐसे समय में हुई है जब खालिस्तानी अलगाववादी अमेरिका में हिंदू समुदाय, हिंदू धार्मिक स्थलों और भारतीय दूतावास को निशाना बना रहे हैं। खालिस्तानियों को कैलिफोर्निया और न्यूयॉर्क सहित अन्य स्थानों पर मंदिरों को क्षतिग्रस्त करने की घटनाओं में शामिल रहे। उन्होंने सैन फ्रांसिस्को में भारतीय दूतावास में आगजनी और तोड़फोड़ की घटनाओं को भी अंजाम दिया।

भारत ने दी बांग्लादेश को कड़ी चेतावनी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): मुहम्मद यूनुस के सलाहकार महफूज आलम की टिप्पणी को लेकर भारत ने बांग्लादेश सरकार को चेताया है। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार में सलाहकार महफूज आलम ने सोशल मीडिया में एक पोस्ट शेयर कर भारत के कई इलाकों पर कब्जा करने की बात कही थी। भारत सरकार ने इस पर बांग्लादेश सरकार को चेतावनी दी है। विदेश मंत्रालय ने यूनुस सरकार को साफ-साफ बता दिया है कि ऐसी टिप्पणियां बर्दाश्त नहीं होंगी। इतना ही नहीं, विदेश मंत्रालय ने आतंकी कनेक्शन को लेकर भी बांग्लादेश को अलर्ट किया है। इससे पहले विदेश राज्य मंत्री कीर्तिवर्धन सिंह ने संसद को बताया कि भारत सरकार ने जगन्नाथ मंदिर में तोड़फोड़, तांतीबाजार, ढाका में एक पूजा मंडप पर हमले और दुर्गा पूजा के दौरान सतखिरा में जेशोरेश्वरी काली मंदिर में चोरी पर बांग्लादेश को सावधान किया है।

आपत्तिजनक टिप्पणियां बर्दाश्त नही

महफूज आलम की टिप्पणियों पर जब सवाल किया गया तो विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, हमने इस मुद्दे पर बांग्लादेश के सामने कड़ा विरोध दर्ज कराया है। जो पोस्ट लिखी गई थी, उसे हटा दिया गया है। हम सभी लोगों को सचेत करना चाहते हैं कि सार्वजनिक टिप्पणियां करते समय ध्यान रखें। भारत बार-बार बांग्लादेश के लोगों और वहां की अंतरिम सरकार के साथ रिश्ते बढ़ाने का संकेत दे चुका है।

राम रहीम को बड़ा झटका: हाई कोर्ट ने रद्द किया आदेश

चंडीगढ़, (पंजाब केसरी): हरियाणा के रोहतक की सुनारिया जेल में बंद डेरा सच्चा सौदा प्रमुख राम रहीम को पंजाब हरियाणा हाई कोर्ट से बड़ा झटका लगा है। साधुओं को ईश्वर से मिलवाने के नाम पर नपुंसक बनाने के मामले में शुक्रवार को उच्च न्यायालय में सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान हाई कोर्ट ने साधुओं को नपुंसक बनाने से जुड़े मामले की केस डायरी डेरा मुखी को सौंपने के सीबीआई स्पेशल कोर्ट के फैसले को पंजाब-हरियाणा हाई कोर्ट ने रद्द कर दिया है। हाई कोर्ट ने मामला दोबारा सीबीआई स्पेशल कोर्ट को भेजते हुए नए सिरे से इस पर निर्णय लेने का आदेश दिया है। सीबीआई ने 2019 में हाई कोर्ट में याचिका दाखिल करते हुए पंचकूला स्थित सीबीआई की विशेष अदालत के फैसले को चुनौती दी थी।

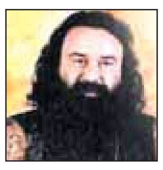

ब्लास्ट इतना भयावह कि उड़ते पक्षी भी जल गए

जयपुर, (पंजाब केसरी): जयपुर-अजमेर नेशनल हाईवे पर शुक्रवार सुबह हुए भीषण हादसा के बाद ट्रक और बस सहित कई वाहनों में आग लग गई। एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया, "जब हम सुबह 5.30 बजे उठे तो हमने एक धमाका सुना। जो लोग बस से बाहर कूद पाए, वे कूद गए और जो नहीं कूद पाए, वे वहीं जल गए. 100-200 मीटर की पूरी लेन जल गई।" बताया जा रहा है कि दुर्घटना वाले इलाके में अनेक पक्षी भी मृत मिले हैं। एक स्कूल वैन चालक ने बताया कि आग की लपटें एक किलोमीटर दूर से दिखाई दे रही थीं और वहां अफरातफरी मची हुई थी। एक अन्य प्रत्यक्षदर्शी ने बताया, "मैं और मेरा दोस्त राजसमंद से जयपुर जा रहे थे। सुबह करीब 5.30 बजे हमारी बस अचानक रुकी और हमने एक जोरदार धमाका सुना। बस के चारों ओर आग लगी हुई थी। बस का दरवाज़ा बंद था इसलिए हमने खिड़की तोड़ दी। बस से बाहर कूद गए। हमारे साथ, करीब 7-8 और लोग खिड़की से कूद पाए। एक के बाद एक लगातार धमाके हो रहे थे। पास में ही एक पेट्रोल पंप था।"

जयपुर के पुलिस आयुक्त बीजू जॉर्ज जोसेफ ने बताया, ''एलपीजी टैंकर से एक ट्रक टकरा गया। इससे टैंकर के पीछे का नोजल टूट गई और गैस लीक हो गई, जिससे भीषण आग लग गई।''उन्होंने कहा, ''टैंकर के पीछे के वाहनों में आग लग गई। दूसरे ओर से आ रहे अन्य वाहन भी इसकी चपेट में आ गए। अचानक हुई घटना के कारण वाहन आपस में टकरा गए।'' जोसेफ ने कहा, ''गैस लीक होने के कारण इलाका 'गैस चैंबर' जैसा बन गया। आग बहुत तेजी से फैल गई, जिससे वाहनों के अंदर बैठे लोगों को बाहर निकलने का मौका नहीं मिला।''घटना के वीडियो में आग की लपटों में घिरे कुछ लोगों को वाहन से बाहर भागते हुए और जलते कपड़े निकालते देखा जा सकता है। भांकरोटा पुलिस थाना के प्रभारी मनीष गुप्ता ने बताया कि शुरुआत में आग पर काबू पाना मुश्किल था। उन्होंने कहा, ''शुरू में दमकल की टीम जल रहे वाहनों तक नहीं पहुंच पाईं। इलाके में तीन पेट्रोल पंप हैं, लेकिन राहत की बात है कि उन्हें किसी तरह का नुकसान नहीं हुआ है।''

मृतकों के परिजनों को 5 लाख : भजनलाल शर्मा

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने घटनास्थल का दौरा किया और अस्पताल में घायलों से भी मिले। उन्होंने मृतकों के परिजनों को 5 लाख रुपए व गंभीर घायलों को एक लाख रुपए की सहायता राशि का ऐलान किया।

इम्पीरियल होटल की छत से कूदकर महिला ने दी जान

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) : साउथ वेस्ट जिले के वसंत कुंज नॉर्थ स्थित इम्पीरियल होटल की छत से कूदकर एक महिला ने खुदकुशी कर ली। मृतका की पहचान दीया सैनी के रूप में हुई है। पुलिस को मृतका के पास से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। शुरुआती जांच में पता चला है कि 10 वर्षीय बेटे की मौत के बाद से महिला काफी परेशान थी। सूत्रों के अनुसार, बेटे की मौत के बाद एक दो बार वह पहले भी आत्महत्या की कोशिश कर चुकी थी। आशंका जताई जा रही है कि इसी के चलते महिला ने अपनी जान दी है। फिलहाल पुलिस परिजनों से पूछताछ कर मामले की जांच कर रही है। जानकारी के मुताबिक, दीया सैनी, वसंत कुंज नॉर्थ इलाके में परिवार के साथ रहती थी। कुछ समय पहले उनके इकलौते 10 वर्षीय बेटे की कैंसर की चपेट में आने से मौत हो गई थी। बेटे के गम में वह चुपचाप रहने लगी थीं। गत 17 दिसंबर की सुबह करीब 10 बजे महिला क्लब पहुंचीं। इसके बाद वह छत पर गईं और चौथी मंजिल से नीचे की ओर छलांग लगा दी। महिला को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

बेटे की मौत के बाद परेशान थी महिला

राहुल का हो निलंबन, दुबे ने दिया नोटिस

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने विपक्ष के नेता राहुल गांधी के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का नोटिस दिया है। भाजपा सांसद ने कहा कि राहुल ने सदन का भी अपमान किया है। ओम बिरला को भेजे गए नोटिस में कहा गया है कि अमित शाह के बयान को तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया है। भाजपा नेता ने कहा कि मामले को विशेषाधिकार समिति के पास भेजना चाहिए और जब तक फैसला नहीं आता तब तक राहुल गांधी को लोकसभा से निलंबित किया जाना चाहिए।

सेना के लिए वज्र तोपें बनाएगा एलएंडटी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): रक्षा मंत्रालय ने भारतीय सेना के लिए 7,628 करोड़ रुपये की लागत से के9 वज्र तोपों की खरीद के लिए लार्सन एंड टुब्रो लिमिटेड के साथ शुक्रवार को एक करार पर मुहर लगाई, जिससे बल की मारक क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होने की संभावना है। अत्याधुनिक तकनीक से लैस यह तोप उच्च सटीकता के साथ लंबी दूरी के लक्ष्यों को निशाना बनाने में सक्षम है। बताया जा रहा है कि मंत्रालय चीन से लगी वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर तैनाती के लिए लगभग 100 वज्र तोपें खरीद रहा है। एक आधिकारिक बयान में कहा गया है, रक्षा मंत्रालय ने 7,628.70 करोड़ रुपये की कुल लागत से भारतीय सेना के लिए 155 मिमी/52 कैलिबर 'के9 वज्र-टी सेल्फ-प्रोपेल्ड ट्रैक्ड आर्टिलरी तोप' की खरीद के लिए लार्सन एंड टुब्रो लिमिटेड के साथ एक करार पर दस्तखत किए हैं। बयान में कहा गया है कि के9 वज्र-टी की खरीद से तोपखाने के आधुनिकीकरण को बढ़ावा मिलेगा और भारतीय सेना की समग्र परिचालन तैयारी मजबूत होगी। वक्तव्य के अनुसार, "यह बहुमुखी लंबी दूरी की तोप भारतीय सेना की मारक क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी और उसे सटीकता के साथ लक्ष्यों को भेदने में सक्षम बनाएगी।

सारंगी जी से अच्छी एक्टिंग कोई नहीं कर सकता : जया बच्चन

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): राज्यसभा सांसद जया बच्चन ने चोटिल भाजपा सांसद प्रताप सारंगी पर तंज कसा है। उन्होंने कहा कि वो एक्टिंग कर रहे हैं। सारंगी संसद भवन की सीढ़ियों से गिर कर जख्मी हो गए थे। शुक्रवार को संसद भवन परिसर में गृहमंत्री अमित शाह की माफी और इस्तीफे की मांग के साथ विपक्ष प्रदर्शन कर रहा है। प्रदर्शन में शामिल जया बच्चन ने कहा, "हम लोग सभी हाउस के अंदर जाने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन, इन लोगों ने हमें जाने नहीं दिया। सभी सीढ़ी मे मोटे-मोटे लोग खड़े थे। ऐसी स्थिति में अगर कोई दूसरे पर गिरेगा, तो उसके बगल वाला भी गिरेगा ही। मैं तो यही कहूंगी कि यह सब बेकार का ड्रामा है।" उन्होंने आगे कहा, "नारंगी जी, राजपूत जी और इस नागालैंड की महिला से अच्छी एक्टिंग कोई भी नहीं कर सकता है।

बक्से में बंद कर शव भेजा डेढ़ करोड़ रुपये की मांग

येंदागंदी (आंध्र प्रदेश),(पंजाब केसरी): आंध्र प्रदेश के पश्चिमी गोदावरी जिले में एक परिवार को एक बक्से में 45 वर्षीय अज्ञात व्यक्ति का शव सौंपा गया और उनसे एक करोड़ रुपये से अधिक की मांग की गई। साथ में भेजे एक पत्र में दावा किया गया है कि बरसों पहले लिए गए ऋण की यह ब्याज समेत राशि है और अगर किसी अमंगल से बचना है तो इसका भुगतान कर दें। पुलिस ने यह जानकारी दी। यह बक्सा बृहस्पतिवार रात को परिवार के निर्माणाधीन मकान पर पहुंचाया गया। जिला पुलिस अधीक्षक अदनान नईम आसमी ने बताया कि परिवार को बक्से के साथ एक पत्र दिया गया, जिसमें उनसे 1.3 करोड़ रुपये की मांग की गई है। परिवार में चार सदस्य हैं। उन्होंने कहा कि पुलिस मामले की विस्तृत जानकारी के लिए जांच कर रही है। पुलिस सूत्रों के अनुसार यह 'बक्सा' एक ऑटोरिक्शा में उंडी मंडल के येंदागंदी गांव में सागी तुलसी के निर्माणाधीन मकान पर पहुंचाया गया। संयोग है कि तुलसी का पति करीब 10 साल पहले लापता हो गया था जिसके कारण वह अपने माता-पिता के साथ रह रही थी। आसमी ने बताया कि वह (तुलसी) पहले अपने माता-पिता के साथ रहती थी लेकिन बाद में वह किराए के मकान में रहने लगी। बाद में तुलसी ने अपने माता-पिता के घर से लगभग एक किलोमीटर दूर एक नया घर बनाना शुरू किया। इस निर्माण में उसकी मदद एक व्यक्ति ने की जिसने उसे सितंबर महीने में उच्च गुणवत्ता वाली टाइल और पेंट भेजे थे। पुलिस के अनुसार सहायता करने वाले इस अज्ञात व्यक्ति ने तुलसी से कहा कि वे दोनों एक ही जाति के हैं और वह एक 'विधवा' है, इसलिए वह उसकी मदद कर रहा है।

भोपाल में 'एसयूवी' से 52 किलो गोल्ड-11 करोड़ कैश जब्त

भोपाल, (पंजाब केसरी): मध्यप्रदेश के भोपाल में आयकर विभाग और पुलिस ने एक लावारिस 'एसयूवी' कार से 40 करोड़ रुपये मूल्य की 52 किलोग्राम सोने की छड़ें और 11 करोड़ रुपये से अधिक की नकदी जब्त की है। एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। शहर में पिछले कुछ दिनों से आयकर विभाग द्वारा की जा रही कार्रवाई के बीच यह जब्ती हुई है।

अधिकारी ने बताया कि बृहस्पतिवार रात सूचना मिली थी कि कुशालपुरा रोड पर एक वाहन लावारिस हालत में खड़ा हुआ है और उसके अंदर कई बैग रखे हुए हैं। पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) प्रियंका शुक्ला ने बताया, "किसी व्यक्ति ने रातीबड़ थाने को सूचना दी कि कुशालपुरा रोड पर एक 'इनोवा क्रिस्टा' कार काफी समय से लावारिस हालत में खड़ी है और वाहन के अंदर करीब सात से आठ बैग रखे हुए हैं। सूचना मिलने के बाद पुलिस की एक टीम मौके पर पहुंची।" उन्होंने बताया कि पिछले कुछ दिनों से शहर में कुछ विभागों द्वारा की जा रही कार्रवाई के बीच किसी ने सोने और नकदी से भरे ये बैग छोड़े हो सकते हैं। अधिकारी ने बताया, "हमने आयकर विभाग को सूचित किया और उन्होंने 'एसयूवी' कार की खिड़कियां तोड़कर उसमें से 52 किलोग्राम सोने की छड़ें और भारी मात्रा में नकदी जब्त की।" उन्होंने बताया कि 'एसयूवी' कार ग्वालियर के रहने वाले चंदन सिंह गौर के नाम पर पंजीकृत है लेकिन वह चार वर्ष से भोपाल में रह रहा है। अधिकारी ने बताया कि आयकर विभाग मामले की जांच कर रहा है। आयकर महानिदेशक (जांच) सतीश के. गोयल ने बताया कि वन क्षेत्र में एक लावारिस कार खड़ी होने की सूचना मिलने पर विभाग के अधिकारियों ने वाहन की तलाशी ली और उसमें से 40 करोड़ रुपये मूल्य की 52 किलोग्राम सोने की छड़ें और 11 करोड़ रुपये से अधिक नकदी बरामद की। उन्होंने बताया कि जब्त की गई कुल राशि 52 करोड़ रुपये है। गोयल ने बताया, "अब तक यह स्पष्ट नहीं है कि यह नकदी और सोना किसका है और हम मामले की जांच कर रहे हैं।"

सपा सांसद जियाउर्रहमान के आवास पर चला बुलडोजर

संभल, (पंजाब केसरी): उत्तर प्रदेश के संभल में समाजवादी पार्टी (सपा) सांसद जियाउर्रहमान वर्क आवास पर नगर पालिका परिषद ने बुलडोजर चलाकर बाहर निर्मित अवैध सीढ़ियों को तोड़ दिया है।

श्री वर्क का संभल के मोहल्ला दीपा सराय में आवास है। शुक्रवार को पुलिस व प्रशासन के साथ नगर पालिका परिषद की टीम सांसद के आवास पर बुलडोजर लेकर पहुंची और आवास के बाहर बनी सीढ़ियों को बुलडोजर से तुड़वाया।

सपा सांसद पर शुक्रवार को दूसरे दिन बुलडोजर चलाने की बड़ी कार्रवाई की गई है, इससे पहले गुरुवार को सपा सांसद के विरुद्ध 16 किलोवाट से अधिक की बिजली चोरी का मुकदमा दर्ज हुआ था। बिजली चोरी में 1.91 करोड रुपए का जुर्माना बिजली विभाग ने सपा सांसद पर लगाया है तथा सपा सांसद के घर की बिजली भी काट दी गई है। बिजली चेकिंग के दौरान बिजली विभाग के अधिकारियों को धमकाने की रिपोर्ट भी गुरुवार को ही सपा सांसद के पिता ममलुकुर्रहमान वर्क के विरुद्ध बिजली विभाग के अधिकारियों ने दर्ज कराई थी। बीते माह जामा मस्जिद के सर्वे के दौरान हुए बवाल में भी सपा सांसद के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज हुई है।

- बिजली चोरी का आरोप, 1.91 करोड़ रुपये का जुर्माना

सोनीपत में करोड़ों की हेराफेरी, एनआईए की रेड

सोनीपत, (पंजाब केसरी): हरियाणा के सोनीपत जिले के दो गांवों में एनआईए की कई टीमें हवाला मामले में छापेमारी करने पहुंची। हवाला के जरिए करोड़ों रुपये की हेराफेरी की बात कही जा रही है। जानकारी के मुताबिक, एक टीम सोनीपत के शहजादपुर गांव में पहुंची और यहां हिमांशु (पुत्र जयप्रकाश) के घर पर छापेमारी कर रही है। वहीं दूसरी टीम भूर्री गांव में है। यहां पर योगेश (पुत्र प्रेम) के घर पर भी छापेमारी कर रही है। योगेश गुरुग्राम में काम करता है। जांच एजेंसी अभी हिमांशु और योगेश के परिजनों से इस मामले के संबंध में पूछताछ कर रही है। टीम इन दोनों के घर में रखे दस्तावेजों को भी खंगाल रही है। बताया जा रहा है कि दोनों के पास करोड़ों की संपत्ति है। इन पर करोड़ों की हेराफेरी का आरोप है जिसे लेकर जांच एजेंसी छापेमारी करने पहुंची। एनआईए ने अभी तक इस संबंध में किसी भी प्रकार का बयान नहीं दिया है। सोनीपत में पिछले कई दिनों से रंगदारी मांगने के मामले में काफी बढ़े हैं। अलग-अलग गिरोह व्यापारियों को फोन कर उनसे रंगदारी मांग रहे हैं।

योगी का जेवर के किसानों को तोहफा बढ़ाया भूमि अधिग्रहण का प्रतिकर

लखनऊ, (पंजाब केसरी): उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट, जेवर के विकास के लिए भूमि दे रहे किसानों की मनचाही मुराद पूरी कर दी है। शुक्रवार को मुख्यमंत्री आवास पर किसानों के साथ खुले संवाद के बीच मुख्यमंत्री ने जेवर एयरपोर्ट के लिए तीसरे चरण के भूमि अधिग्रहण के एवज में देय प्रतिकर को 3,100 रुपये वर्गमीटर से बढ़ाकर 4,300 रुपये वर्गमीटर तक करने की घोषणा की। इसके अलावा नियमानुसार ब्याज भी देय होगा। यही नहीं, मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि अधिग्रहण से प्रभावित हर एक किसान परिवार के व्यवस्थापन, रोजगार और सेवायोजन के भी समुचित प्रबंध किए जाएंगे।मुख्यमंत्री की घोषणा को मनचाही मुराद बताते हुए सभी किसानों ने 'जय श्रीराम' के नारे से उनका अभिवादन किया और कहा कि अब लखनऊ से सीधा अयोध्याधाम जाकर श्रीरामलला के दर्शन-पूजन करेंगे। इस विशेष अवसर पर मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि अगले वर्ष अप्रैल में प्रधानमंत्री मोदी के कर-कमलों से एशिया के सबसे बड़े नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट का उद्घाटन किया जाएगा।शुक्रवार को मुख्यमंत्री आवास पर आयोजित नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट, जेवर के अंतिम फेज के भूमि प्रदाता किसानों से संवाद कार्यक्रम में मुख्यमंत्री योगी ने सभी किसानों से संवाद किया, उनकी आशंका, जिज्ञासाओं और मांग के बारे में बातचीत की।संवाद कार्यक्रम के बीच मुख्यमंत्री ने सीईओ यीडा को मंच पर बुलाया और अब तक दो चरणों में हुए भूमि अधिग्रहण और प्रभावित किसान परिवारों के व्यवस्थापन के बारे में पूछा।

12 राशियां और आपका दिन

Forecast for 21 December, 2024
By: Dr. Prem Kumar Sharma
(Astrologer, Palmist, Numerologist & Vastu Consultant)
Email: psharma@premastrologer.com,
Url: http://www.premastrologer.com
Contact: Panchkula: +91-172-2562832, 2572874
Delhi: +91-11-47033152/40532026

premastrologer premastrologer premastrologer askpremastrologer

मेष ARIES (21 मार्च- 20 अप्रैल)
आज फिजूल में जोखिम लेने से बचें। इनकम में बढ़ोतरी के सुनहरे अवसर मिलेंगे। करियर में कोई सहकर्मी मदद कर सकता है। अपनी बात के लिए फैमिली मेंबर को मनाना मुश्किल होगा।
लकी नंबर- 8, लकी कलर- येलो

वृषभ TAURUS (21 अप्रैल- 20 मई)
आज के दिन एनर्जेटिक और फ्रेश फील करेंगे। रेगुलर इन्कम होने से फाइनेंशियल सिचुएशन बेटर होगी। रिसर्चर्स और साइंटिस्ट्स पर काम का प्रेशर रहेगा।
लकी नंबर- 5, लकी कलर- पर्पल

मिथुन GEMINI (21मई- 21 जून)
अच्छी शेप पाने के लिए फिटनेस रूटीन अपनाना होगा। आर्थिक मोर्चे पर उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। परिवार में किसी बुजुर्ग सदस्य के साथ मतभेद संभव है।
लकी नंबर- 17, लकी कलर- ग्रे

कर्क CANCER (22 जून- 22 जुलाई)
अच्छी फिटनेस पाने के प्रयासों में कामयाबी मिलेगी। लाइफ स्टाइल में बदलाव से सेविंग्स कर पाएंगे। रिटेलर्स अपनी शॉप की नई ब्रान्च ओपन कर सकते हैं।
लकी नंबर- 1, लकी कलर- डार्क रेड

सिंह LEO (23 जुलाई- 23 अगस्त)
बीमार लोगों की सेहत में इंप्रूवमेंट देखने को मिलेगी। होम लोन के लिए अप्लाई कर सकते हैं। झगड़ा सुलझाने में मीडिएटर की तरह काम करेंगे।
लकी नंबर- 2, लकी कलर- लाइट ब्लू

कन्या VIRGO (24 अगस्त- 23 सितंबर)
बीमारी से बचने के प्रयासों में सफलता मिलेगी। फाइनेंशियल स्टेबिलिटी के कारण मूड अच्छा रहेगा। करियर में आगे बढ़ने के अवसर मिल सकते हैं। घरेलू जिम्मेदारियों के कारण व्यस्त रहेंगे। यात्रा के दौरान सेफ्टी का खास ध्यान रखें।
लकी नंबर- 6, लकी कलर- सैफ्रॉन

तुला LIBRA (24 सितंबर- 23 अक्टूबर)
बैलेंस डाइट के साथ एक्टिव लाइफ स्टाइल अपनानी होगी। कमीशन एजेंट्स को अच्छा प्रॉफिट होने की उम्मीद है। रूटीन टास्क के कारण थकान महसूस हो सकती है।
लकी नंबर- 22, लकी कलर- व्हाइट

वृश्चिक SCORPIO (24 अक्टूबर-22 नवंबर)
संघर्ष कर रहे लोग राहत की सांस ले सकते हैं। वर्कप्लेस पर टाइम मैनेजमेंट सीखना जरूरी है। बेहतर फिटनेस के लिए जिम जॉइन कर सकते हैं।
लकी नंबर- 4, लकी कलर- ऑरेंज

धनु SAGITTARIUS (23 नवंबर- 21 दिसंबर)
वर्कआउट रूटीन शुरू करने के बारे में विचार करें। किसी को भी पैसा उधार देने से बचें। जॉब स्विच करने के बारे में अभी न सोचे। किसी फैमिली मेंबर के कारण घर में खुशियां आएगी।
लकी नंबर- 11, लकी कलर- पिंक

मकर CAPRICORN (22 दिसंबर-21 जनवरी)
कुछ चुनौतियां का सामना करने के लिए तैयार रहें। आर्थिक स्थिति सामान्य रखने के लिए बजट बनाकर चलें। नेटवर्क बढ़ाने से नए क्लाइंट मिलने की उम्मीद है।
लकी नंबर- 9, लकी कलर- मैरून

कुंभ AQUARIUS (22 जनवरी- 19 फरवरी)
सावधानी बरतने से स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आर्थिक मोर्चे पर गुड न्यूज़ मिल सकती है। किसी की कही बात दिल को बुरी लग सकती है। जरूरत के समय में परिवार का सपोर्ट मिलेगा। आध्यात्मिक प्रवृत्ति के लोग धार्मिक यात्रा पर जा सकते हैं।
लकी नंबर- 5, लकी कलर- क्रीम

मीन PISCES (20 फरवरी- 20 मार्च)
कुछ कार्यों में अधिक पैसा खर्च हो सकता है। हेल्थ को प्राथमिकता देना जरूरी है। वर्कप्लेस पर प्रशंसा मिलने की उम्मीद है। आपके प्लान घर में सभी को पसंद आएंगे। परिवार के साथ तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं।
लकी नंबर- 7, लकी कलर- मैजेंटा

लोकसभा में 57.87% तो राज्यसभा में मात्र 40.03 % ही हुआ कामकाज

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) 'एक देश-एक चुनाव' संबंधी विधेयक पेश किए जाने और कई विषयों को लेकर भारी हंगामे के साक्षी बने संसद के शीतकालीन सत्र में लोकसभा की कार्यवाही शुक्रवार को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई।

राज्यसभा में सभापति ने कहा राज्यसभा के 266वें सत्र की शुरुआत संसद के केंद्रीय कक्ष में संविधान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम से हुई लेकिन सदन में सदस्यों का जो व्यवहार देखने को मिला, वह अलग ही कहानी बयां करता है। उन्होंने कहा कि सदन में 40.03 प्रतिशत ही कामकाज हो सका। उन्होंने कहा कि सदन में कुल 43.27 घंटे ही प्रभावी कार्यवाही हुई जिसमें दो विधेयक पारित किए गए और भारत-चीन संबंधों पर विदेश मंत्री के का बयान हुआ। इसके बाद धनखड़ ने सदन की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी। वहीं लोकसभा के इस शीतकालीन सत्र अब तक के सभी सत्रों में सबसे कम उत्पादकता वाला रहा। सत्र के दौरान लोकसभा की 20 बैठकें हुईं, जो 62 घंटे तक चलीं। लोकसभा के इस सत्र के दौरान उत्पादकता 57.87% रही। सत्र के दौरान लोकसभा में पांच सरकारी विधेयक पेश किए गए और चार विधेयक पारित किए गए। शून्य काल के दौरान अविलंबनीय लोक महत्व के 182 मामले उठाए गए और नियम 377 के अंतर्गत 397 मामले उठाए गए। यह सत्र 25 नवंबर से शुरू हुआ था।

26 दिनों के इस सत्र में 19 बैठकें हुईं भारत के संविधान की 75 वर्षों की गौरवशाली यात्रा पर चर्चा 13 दिसंबर को शुरू हुई और 14 दिसंबर को समाप्त हुई। शून्य काल के दौरान 61 तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दिए गए और सदस्यों द्वारा अविलंबनीय लोक महत्व के 182 मामले उठाए गए।

संसद में कामकाज में लगातार काम में कमी आ रही है। पिछले 10 सत्रों के आंकडों से यही संकेत मिलते हैं। अठारहवीं लोकसभा के बजट सत्र में प्रोडक्टिविटी 135% रही। इस दौरान राज्यसभा में प्रोडक्टिविटी 112% रही थी। 17वीं लोकसभा में 274 बैठकें हुई थीं और 222 बिल पास हुए थे। अधिकांश बिल पेश होने के दो हफ्ते के भीतर पास हुए थे। इनमें से एक तिहाई बिल एक घंटे से भी कम समय में पास हो गए थे। केवल 16% बिल ही स्टैंडिंग कमेटी को भेजे गए थे। 17वीं लोकसभा ने केवल 1,354 घंटे काम किया गया। 15 में से 11 सत्र समय से पहले स्थगित किए गए।

एफआईआर सत्तापक्ष की हताशा: प्रियंका

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज किए जाने को लेकर शुक्रवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर निशाना साधा और कहा कि इस बात से पता चलता है कि सत्तापक्ष में किस स्तर की हताशा है।उन्होंने यह भी कहा कि भारत के लोग बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर का अपमान सहन नहीं करेंगे।दिल्ली पुलिस ने संसद परिसर में हुई ''धक्का-मुक्की'' के सिलसिले में कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ बृहस्पतिवार को प्राथमिकी दर्ज की। पुलिस को एक शिकायत देकर उन पर संसद परिसर में ''धक्का-मुक्की'' के दौरान ''शारीरिक हमला और उकसावे'' में शामिल होने का आरोप लगाया। प्रियंका गांधी ने आज पूरा देश देख रहा है कि भाजपा के लोगों ने राहुल गांधी जी पर तमाम मामले दर्ज करा रखे हैं। वे नित नई प्राथमिकी दर्ज कराते हैं ।

सीमाओं की सुरक्षा और नक्सलवाद से लड़ाई में एसएसबी की महत्वपूर्ण भूमिका

सिलीगुड़ी, (पंजाब केसरी): केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने नेपाल एवं भूटान जैसे मित्र देशों से लगीं देश की सीमाओं की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने और बिहार एवं झारखंड में नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई में योगदान के लिए शुक्रवार को सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) की सराहना की। शाह ने पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी में एसएसबी के 61वें स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कहा, ''सशस्त्र सीमा बल ने नेपाल और भूटान जैसे मित्र देशों से लगी हमारी सीमाओं को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसकी सतर्कता और उपस्थिति ने सिलीगुड़ी कॉरिडोर और पूर्वी क्षेत्र में सुरक्षा की भावना सुनिश्चित की है।''

वामपंथी उग्रवाद से निपटने में एसएसबी के प्रयासों का उल्लेख करते हुए गृहमंत्री ने कहा, ''एसएसबी ने बिहार और झारखंड में नक्सलवाद को खत्म करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अन्य सुरक्षा एजेंसियों और स्थानीय पुलिस के साथ उनके सक्रिय सहयोग ने छत्तीसगढ़ में नक्सलवादी गतिविधियों को काफी हद तक कमजोर कर दिया है।'' इस अवसर पर शाह ने कहा कि बल ने सीमा पर अपनी आवाजाही के दौरान राष्ट्र विरोधी तत्वों की गतिविधियों पर अंकुश लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और उन्हें कानून प्रवर्तन एजेंसियों के हवाले किया है। उन्होंने कहा कि एसएसबी का 61वां स्थापना दिवस राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति हमारे समर्पण की पुष्टि करने का दिन है। एसएसबी के जवानों ने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देने और अवैध गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए शानदार काम किया है। शाह ने सांस्कृतिक एकीकरण को बढ़ावा देने में एसएसबी की अनूठी पहल की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि एसएसबी ने भारत के सीमावर्ती गांवों की संस्कृति, भाषा और विरासत को देश की मुख्यधारा से जोड़कर एक सराहनीय काम किया है।

एएसआई ने कार्तिक महादेव मंदिर, पांच तीर्थ स्थलों और 19 कूपों का सर्वेक्षण किया

संभल, (पंजाब केसरी) : भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की चार सदस्यीय टीम ने शुक्रवार को उत्तर प्रदेश के संभल में हाल ही में खोजे गए श्री कार्तिक महादेव मंदिर, पांच तीर्थस्थलों और 19 कूपों का शुक्रवार को सर्वेक्षण किया। एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी।

संभल के जिलाधिकारी राजेंद्र पेंसिया ने पत्रकारों को बताया कि एएसआई की चार सदस्यीय टीम ने आज (शुक्रवार) सुबह सर्वेक्षण शुरू किया। यह सर्वेक्षण अपराह्न साढ़े तीन बजे तक जारी रहा, जिसमें टीम ने संभल के पांच तीर्थ स्थलों और 19 कूपों का सर्वेक्षण किया और साथ ही नए मंदिर (श्री कार्तिक महादेव मंदिर) का भी सर्वेक्षण किया गया।" उन्होंने बताया कि इन सभी जगह की पैमाइश हमने पहले ही करा ली थी लेकिन एएसआई ने शुक्रवार को सर्वेक्षण किया। पेंसिया ने बताया कि इन कुओं में चतुर्मुख कूप, मोक्ष कूप, धर्म कूप समेत 19 कुओं और भद्रक आश्रम, स्वर्गदीप और चक्रपाणि समेत पांच तीर्थ स्थलों का सर्वेक्षण किया गया। इसके साथ ही कार्तिक महादेव मंदिर का भी एएसआई ने सर्वेक्षण किया है। हमने इन सभी स्थानों की पहले ही माप कर ली थी लेकिन एएसआई ने आज सर्वेक्षण किया। अधिकारियों ने सोमवार को बताया था संभल जिले में 46 वर्षों तक बंद रहने के बाद पिछले सप्ताह खोले गये भस्म शंकर मंदिर के कुएं में तीन खंडित मूर्तियां मिली हैं।

संजय राउत के बंगले पर रेकी करते दिखे बाइक सवार, जांच शुरू

मुंबई, (पंजाब केसरी) : शिवसेना (यूबीटी) के नेता और राज्यसभा सांसद संजय राऊत के बंगले की रेकी करने का मामला सामने आया है। जानकारी के अनुसार, शुक्रवार सुबह करीब 9.30 बजे एक बाइक पर सवार दो व्यक्तियों ने मुंबई के भांडुप स्थित उनके घर की रेकी की। सीसीटीवी फुटेज में बाइक पर सवार दो लोग बंगले की रेकी करने हुए देखे गए। संजय राउत के सुरक्षा कर्मियों ने इसकी जानकारी पुलिस को दी। सुरक्षा कर्मियों ने देखा कि बाइक पर सवार दो लोग बंगले के आसपास चक्कर लगा रहे थे।

अलीगढ़ में दो दिनों में मिला एक और शिव मंदिर, कई वर्ष से था बंद

अलीगढ़, (पंजाब केसरी): भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेताओं और हिंदू संगठनों ने दावा किया कि अलीगढ़ के दिल्ली गेट थाना क्षेत्र के एक मुस्लिम बहुल इलाके में लंबे समय से बंद पड़ा एक और शिव मंदिर ढूंढ निकाला गया है।

उन्होंने बताया कि बृहस्पतिवार शाम को सराय मियां इलाके में स्थित यह मंदिर ढूंढ निकाला गया। वहीं 36 घंटे पहले बन्नादेवी थाना क्षेत्र के अंतर्गत सराय रहमान इलाके में भी इसी तरह का एक और बंद मंदिर मिला था।

भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा (भाजयुमो) की शहर इकाई के सचिव हर्षद, बजरंग दल के नेता अंकुर शिवाजी कई अन्य लोगों के साथ मौके पर पहुंचे और बताया कि बंद मंदिर परिसर पूरी तरह से अव्यवस्थित था और मूर्तियां मलबे में दबी हुई थीं। उन्होंने कहा कि पुलिस की मौजूदगी में गेट पर लगे ताले तोड़े गए और धार्मिक नारों के बीच मंदिर की सफाई और शुद्धिकरण किया गया। पुलिस अधीक्षक (शहर) मृगांक शेखर पाठक ने बृहस्पतिवार देर रात संवाददाताओं को बताया कि इन इलाकों में शांति समितियों की बैठक आयोजित की जा रही हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इन मंदिरों को पूरी तरह से बहाल किया जाए और यहां शांतिपूर्ण तरीके से पूजा की जाए। उन्होंने बताया, "अब तक दोनों इलाकों से किसी भी अप्रिय घटना की कोई सूचना नहीं मिली है।'' सराय मियां के स्थानीय निवासियों के अनुसार, बाबरी मस्जिद ढहाये जाने से पहले और बाद में शहर में सांप्रदायिक दंगे हुए, जिसके कारण हिंदुओं और मुसलमानों का पलायन हुआ।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 25 को करेंगे केन बेतवा गठजोड़ का शिलान्यास

महोबा, (पंजाब केसरी) : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 25 दिसंबर को देश की पहली नदी जोड़ परियोजना 'केन बेतवा गठजोड़'' का शिलान्यास करेंगे। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड की तस्वीर बदलने वाली 45 हज़ार करोड़ रूपये से अधिक लागत की यह परियोजना दोनों सूबों के 14 जिलों को सिंचाई एवं पेयजल के लिये पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करेगी।

SBI
भारतीय स्टेट बैंक
केन्द्रीय भर्ती एवं पदोन्नति विभाग, कॉरपोरेट केंद्र, मुंबई
फोन: 022-22820427
आवेदन के लिए क्यूआर स्कैन करें

भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) में लिपिक संवर्ग में कनिष्ठ सहयोगी (ग्राहक सहायता और विक्रय) की भर्ती

भारतीय स्टेट बैंक में नियमित आधार पर कनिष्ठ सहयोगी (ग्राहक सहायता और विक्रय) के पद पर नियुक्ति के लिए पात्र भारतीय नागरिकों से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं.

रिक्तियों की संख्या :
नियमित: 13735 + बैकलॉग: 456

पात्रता मानदंड (आयु, शैक्षणिक योग्यता, आदि), आवश्यक शुल्क, ऑनलाइन आवेदन करने एवं ऑनलाइन शुल्क भुगतान के लिए बैंक की वेबसाइट https://bank.sbi/web/careers/current_openings पर विज्ञापन क्र. CRPD/CR/2024-25/24 के अंतर्गत लिंक उपलब्ध हैं. प्रत्याशियों को परामर्श दिया जाता है कि वे विस्तृत विज्ञापन देखें और आवेदन करने एवं शुल्क भुगतान करने से पहले अपने पात्रता मानदंडों और अन्य विवरणों को सुनिश्चित कर लें.

- ऑनलाइन पंजीकरण और शुल्क के भुगतान की तिथि: 17.12.2024 से 07.01.2025 तक.

अधिक जानकारी के लिए "CONTACT US" → "Post Your Query" लिंक के माध्यम से हमें लिखें, जो ऊपर उल्लिखित बैंक की आधिकारिक वेबसाइट https://bank.sbi/web/careers/current_openings पर उपलब्ध है.

स्थान: मुंबई
दिनांक: 17.12.2024
महाप्रबंधक (आरपी एंड पीएम)

2016 से चार लाख एससी, एसटी, ओबीसी को सरकारी नियुक्तियां मिली

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) : केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने जानकारी दी कि अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी) और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के उम्मीदवारों के लिए आरक्षित चार लाख से अधिक बैकलॉग रिक्तियों को 2016 से भरा गया है। उन्होंने राज्यसभा को एक प्रश्न के लिखित उत्तर में बताया कि बैकलॉग आरक्षित रिक्तियों सहित रिक्तियों का होना और उन्हें भरना एक सतत प्रक्रिया है। बैकलॉग भर्ती का मतलब है कि पिछले वर्ष निकाली गई सीधी भर्ती की सीटों में सामान्य, एससी, एसटी और ओबीसी की सीटें किसी कारणवश खाली रह जाती हैं तो अगले वर्ष की भर्ती में पिछली खाली सीटों को बैकलॉग सीट के नाम से भर्ती में दर्शाया जाता है।

कार्मिक राज्य मंत्री सिंह ने कहा कि केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों और विभागों को निर्देश जारी किए गए हैं कि बैकलॉग आरक्षित रिक्तियों की पहचान करने के लिए एक आंतरिक समिति का गठन करें, ऐसी रिक्तियों के मूल कारण का अध्ययन करें, ऐसी रिक्तियों के कारकों को दूर करने के उपाय शुरू करें और विशेष भर्ती अभियान के माध्यम से उन्हें भरें।

कोयला आधारित बिजली उत्पादन 3.87 प्रतिशत बढ़ा

चालू वित्त वर्ष (2024-25) के पहले सात माह (अप्रैल-अक्टूबर) में कोयला आधारित बिजली उत्पादन में 3.87 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है।

कोयला मंत्रालय ने बयान में कहा कि अप्रैल, 2024 से अक्टूबर, 2024 तक कोयला आधारित बिजली उत्पादन में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 3.87 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। मंत्रालय ने आगे कहा कि इसी अवधि के दौरान ताप विद्युत संयंत्रों द्वारा मिश्रण के लिए आयात में 19.5 प्रतिशत की गिरावट आई। यह गिरावट कोयला उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल करने और आयात पर निर्भरता कम करने की देश की प्रतिबद्धता पर जोर देती है। चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-अक्टूबर अवधि के दौरान कोयले का आयात 3.1 प्रतिशत घटकर 14.93 करोड़ टन रह गया, जो पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में 15.41 करोड़ टन था।

मेडिकल डिवाइस सेक्टर 30 अरब डॉलर होने का अनुमान

भारतीय मेडिकल डिवाइस सेक्टर का आकार 2030 तक बढ़कर 30 अरब डॉलर होने की उम्मीद है। यह बयान केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री अनुप्रिया पटेल ने दिया। सीआईआई के 21वें स्वास्थ्य शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए पटेल ने कहा कि जापान, चीन और दक्षिण कोरिया के बाद भारत एशिया में चौथा सबसे बड़ा मेडिकल डिवाइस बाजार है। भारत दुनिया के शीर्ष 20 वैश्विक मेडिकल डिवाइस बाजारों में भी शामिल है। पटेल ने आगे कहा कि भारत में मेडिकल डिवाइस सेक्टर को एक उभरते सेक्टर के रूप में मान्यता प्राप्त है।

जॉब मार्केट के लिए उम्मीदों भरा रहेगा 2025

हाल ही में आई एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 2025 में हायरिंग को लेकर 9 प्रतिशत की वृद्धि होने की उम्मीद है। फाउंडिट (पूर्व में मॉन्स्टर एपीएसी एंड एमई) की रिपोर्ट के अनुसार, आईटी, रिटेल, दूरसंचार और बैंकिंग, वित्तीय सेवाएं और बीमा (बीएफएसआई) सेक्टर इस वृद्धि के जिम्मेदार होंगे। 2024 में 10 प्रतिशत की वृद्धि और नवंबर में मासिक आधार पर 3 प्रतिशत की वृद्धि के साथ, पूर्वानुमान दर्शाता है कि हायरिंग एक पूर्वानुमानित हायरिंग एनवायरमेंट के साथ अपनी गति बनाए रखने के लिए तैयार है।

पर्यटन विकास सूचकांक में भारत 39वें स्थान पर, रैंकिंग में सुधार

भारत अब विश्व आर्थिक मंच द्वारा प्रकाशित यात्रा और पर्यटन विकास सूचकांक 2024 रिपोर्ट में 119 देशों को शामिल किया गया है। जिसमें भारत 39वें स्थान पर है। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर और अनुकूल सरकारी नीतियां भारत के इस प्रदर्शन का मुख्य कारक रहीं। केंद्रीय पर्यटन और संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने राज्यसभा में एक लिखित उत्तर में कहा कि 2021 में प्रकाशित पिछले सूचकांक में, भारत 54वें स्थान पर था। हालांकि, विश्व आर्थिक मंच की मेथोडोलॉजी में संशोधन के कारण, भारत की 2021 की रैंक को 38वें स्थान पर एडजस्ट किया गया था।

भारत में टैक्स ज्यादा, कम करने की जरूरत : गार्सेटी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) : भारत में अमेरिका के राजदूत एरिक गार्सेटी ने कहा कि भारत दुनिया में 'सबसे अधिक शुल्क' वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था है। उन्होंने कहा कि भारत और अमेरिका को व्यापार को 'निष्पक्ष और समान' बनाने के उद्देश्य से शुल्क कम करने के लिए मिलकर काम करने की जरूरत है। उनकी यह टिप्पणी अमेरिका के नव-निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के उस बयान के कुछ दिन बाद आई है जिसमें उन्होंने कहा था कि भारत 'बहुत अधिक' शुल्क लगाता है। ट्रंप ने भारत द्वारा कुछ अमेरिकी उत्पादों के आयात पर लगाए जाने वाले शुल्क के जवाब में जवाबी शुल्क लगाने की अपनी मंशा दोहराई थी।

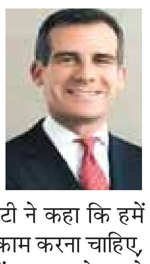

भारत में अमेरिका के राजदूत गार्सेटी ने कहा कि हमें शुल्क को कम करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए, न कि उन्हें बढ़ते हुए देखना चाहिए। हमें व्यापार को बढ़ाने और इसे अधिक निष्पक्ष और समान बनाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। हमें मिलकर यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि प्रशिक्षण और प्रतिभा ऐसी हो जो हिंद-प्रशांत के दोनों ओर की कंपनियों की जरूरतों को पूरा करे। अपने संबोधन के बाद एक संवाद सत्र में गार्सेटी ने बताया कि 'दोनों पक्षों की कठिनाइयों के बावजूद' भारत-अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार में '10 गुना वृद्धि' देखी गई है, जिसमें अमेरिका, भारत का पहले नंबर का व्यापारिक साझेदार बन गया है।

नार्थ, साउथ ब्लॉक' में संग्रहालय बनेंगे

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) : विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि जब 'नॉर्थ ब्लॉक' और 'साउथ ब्लॉक' परिकल्पना के अनुसार भव्य संग्रहालय बन जाएंगे, तो ''हम वास्तव में भारत के पुनर्निर्माण के लिए प्रेरणा देखेंगे। विदेश मंत्री ने यहां एक कार्यक्रम में अपने संबोधन में यह टिप्पणी की। इस कार्यक्रम में भारत के राष्ट्रीय संग्रहालय और 'फ्रांस म्यूजियम डेवलपमेंट' ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसके तहत फ्रांसीसी एजेंसी ब्रिटिशकालीन स्थलों को ''वैश्विक सांस्कृतिक स्थल'' में बदलने के लिए तौर-तरीकों और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करेगी। इसे युग युगीन भारत राष्ट्रीय संग्रहालय नाम दिया गया है। केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, भारत में फ्रांसीसी राजदूत थिएरी मथौ और केंद्रीय संस्कृति सचिव अरुणीश चावला भी मंच पर मौजूद थे। आगामी युग युगीन भारत राष्ट्रीय संग्रहालय में आठ विषयगत खंड होंगे जो 5,000 वर्षों से अधिक समय की भारत की कहानी बताएंगे। माना जा रहा है कि यह दुनिया का सबसे बड़ा संग्रहालय होगा।

भारत, अमेरिका अंतरिक्ष सहयोग को लेकर सहमत

वाशिंगटन, (भाषा) : भारत और अमेरिका के अधिकारियों ने अंतरिक्ष सहयोग में अगले कदमों की रूपरेखा तैयार की है, जिसमें मानव अंतरिक्ष उड़ान, संयुक्त अंतरिक्ष अन्वेषण और बढ़ती अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में साझा हितों को आगे बढ़ाने के लिए अंतरिक्ष कंपनियों के बीच वाणिज्यिक साझेदारी को सुविधाजनक बनाने की प्रतिबद्धता शामिल है।

व्हाइट हाउस ने बुधवार को बताया कि इस संबंध में ह्यूस्टन में 17 दिसंबर को एक बैठक आयोजित की गई थी जिसमें अमेरिका के प्रधान उप राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जॉन फाइनर, उप विदेश मंत्री कर्ट कैंपबेल और अमेरिका में भारत के राजदूत विनय क्वात्रा शामिल हुए। व्हाइट हाउस ने एक तथ्य-पत्र में कहा कि (पूर्व) राष्ट्रपति (जो) बाइडन और प्रधानमंत्री (नरेन्द्र) मोदी की जून 2023 में 'अंतरिक्ष सहयोग के सभी क्षेत्रों में नयी ऊंचाइयों तक पहुंचने' के लिए मिलकर काम करने की प्रतिबद्धता दोहराई।

हरियाणा सरकार
क्या आप शीत लहर / ठंड से बचाव के लिए तैयार हैं ?

शीतलहर और ठंड से बचने के उपाय

- मौसम संबंधी जानकारी के लिए रेडियो सुनें, टी.वी. देखें या समाचार-पत्र पढ़ें।
- यथा संभव घर के अंदर रहें, ठंडी हवा से बचने के लिए केवल आवश्यक यात्रा ही करें।
- भारी कपड़ों की एक परत के बजाय हल्के, ढीले, विंडप्रूफ ऊनी कपड़ों की कई परत पहनें। बाहर निकलते समय अपने सिर, चेहरे, हाथों और पैरों को भी उपयुक्त गर्म कपड़े से ढकें।
- शरीर में ऊष्मा का प्रवाह बनाए रखने के लिए पौष्टिक आहार जैसे कि विटामिन C से भरपूर स्वस्थ आहार, फल एवं सब्जियों का सेवन करें।
- शरीर का तापमान बनाए रखने के लिए नियमित रूप से गर्म तरल पदार्थ पिएं।
- अपने शरीर को सूखा रखें। यदि गीले हो जाएं, तो शरीर की गर्मी को बचाने के लिए शीघ्रता से कपड़े बदलें।
- बुजुर्गों और बच्चों की ठीक से देखभाल करें और अनावश्यक घर से बाहर न जाने दें।
- शराब का सेवन न करें। यह आपके शरीर के तापमान को कम करता है।
- कंपकपी को नजरअंदाज न करें। यह एक महत्वपूर्ण पहला संकेत है कि शरीर गर्मी खो रहा है और प्रभावित व्यक्ति को तुरंत घर के अंदर ले आना चाहिए।
- लंबे समय तक ठंड के संपर्क में आने से त्वचा का रंग पीला, सख्त और सुन्न हो सकता है और अंगूठे, पैर की अंगुलियां, नाक या कान की लोब जैसी शरीर की खुली जगहों पर काले घाव हो सकते हैं। यदि ऐसा हो, तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।
- कम तापमान में अपने पालतू जानवरों का ध्यान रखें और उन्हें घर के अंदर रखें। यदि कोई स्वास्थ्य समस्या उत्पन्न हो, तो पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
- राज्य सरकार द्वारा ठंड के समय शहरी क्षेत्रों में बेघरों के लिए रैन बसेरों का प्रबंध किया जाता है, जहाँ कंबल/बिस्तर आदि उपलब्ध रहते हैं। जरूरत के समय इन सुविधाओं का उपयोग करके ठंड से बचा जा सकता है।

हाइपोथर्मिया (शरीर के तापमान के कम होने) की स्थिति में, निम्नलिखित कदम तुरंत उठाएं

- व्यक्ति को गर्म स्थान पर ले जाएं और कपड़े बदलें।
- व्यक्ति के शरीर को त्वचा से त्वचा के संपर्क, सूखे कंबल, कपड़े, तौलिये या चादरों से गर्म करें।
- शरीर के तापमान को बढ़ाने में मदद के लिए गर्म पेय दें। शराब न दें।
- यदि स्थिति बिगड़ती है तो तुरंत चिकित्सा सहायता प्राप्त करें।

आपातकालीन स्थिति में 112 डायल करें

SAMVAD R.O. No. 1089/13/1947/2025/31187/142/7 Dt. 20/12/2024

राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग, हरियाणा द्वारा जनहित में जारी।

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा | www.prharyana.gov.in | @diprharyana

केजरीवाल मुफ्त की रेवड़ी बांट कर रबड़ी डकार गए: बांसुरी

फोटो: दयाशंकर

पाठक इस क्यूआर कोड को स्कैन करके सांसद बांसुरी स्वराज के इस इंटरव्यू के वीडियो को **punjabkesari.com** के यू-ट्यूब चैनल पर भी अब देख सकते हैं...

चुनाव आयोग दिल्ली विधानसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा कभी भी कर सकती है, इधर इससे पहले आम आदमी पार्टी ने अपने सभी प्रत्याशियों की घोषणा कर शंतरज की बिसात बिछा चुकी है। कांग्रेस ने भी अपने 21 प्रत्याशियों की घोषणा कर दी है। जबकि भाजपा अभी भी मंथन में लगी हुई है। आम आदमी पार्टी लगातार वोटरों को रिझाने के लिए नई-नई घोषणाएं कर रही है, आम आदमी पार्टी जितनी घोषणाएं कर रही हैं, भाजपा के माथे पर उतने ही बल पड़ रहे हैं। कांग्रेस आम आदमी पार्टी की देखा-देखी बढ़-चढ़ कर घोषणाएं करने में लगी हुई है। बहरहाल, नई दिल्ली की सांसद बांसुरी स्वराज का मानना है कि आम आदमी पार्टी ने कभी भी सरकार में रहते दिल्ली के प्रति अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाई। यही वजह है कि दिल्ली को जहां होना चाहिए था वहां नहीं पहुंच पाई। आज दिल्ली में बारिश के पानी में लोग डूब कर मर रहे हैं, इससे शर्मनाक स्थिति दिल्ली की और क्या होगी? हमने दिल्ली को लेकर एक सपना देखा था कि राजधानी के रूप में दिल्ली विश्व के पटल पर चमकेगी, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। केजरीवाल की सरकार ने मुफ्त की रेवड़ी दिखा-दिखा कर रबड़ी खुद डकार गए हैं। 53 करोड़ में मुख्यमंत्री रहते केजरीवाल ने अपने लिए शीश महल खड़ा कर लिया। *वह भी उस समय जब दिल्ली की जनता कोविड से त्राहिमाम कर रही थी और केजरीवाल अपने लिए उन्हीं जनता के पैसों से अपने और अपने परिवार के लिए शीश महल खड़ा करने में लगे थे। ऐसे ही तमाम मुद्दों को लेकर सांसद बांसुरी स्वराज की मेट्रो एडिटर सतेन्द्र त्रिपाठी और डिप्टी ब्यूरो चीफ सुरेन्द्र पंडित के साथ खरी-खरी...*

विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा आम आदमी पार्टी सरकार की 10 साल की विफलताएं गिनाएगी या फिर केंद्र सरकार की सफलताएं गिनाएगी?

भाजपा एक जिम्मेदार विपक्ष है। आप ने दिल्ली में एक दशक से सत्ता भोगी है। लेकिन जिम्मेदारी नहीं है, जवाबदेही नहीं है। ऐसे में जिम्मेदारी विपक्ष होने के नाते हमें जनता के मुद्दों को पुरजोर तरीके से उठाने हैं। उन्होंने 10 साल पहले जो दावे किए थे, साफ हवा का, साफ पानी। लेकिन आज उनके सारे वादे और दावे झूठे साबित हुए हैं। दिल्ली आज आप के टूटे हुए वादों का दंश झेल रही है। ऐसे में हम आप सरकार की नाकामियों का जनता के बीच ले जाएंगे। हमारा संकल्प पत्र भी आ रहा है, उसमें हम डबल इंजन सरकार के फायदे भी जनता को बताएंगे। जिस भी राज्य में बीजेपी की डबल इंजन की सरकार काम कर रही है, वो राज्य आज प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इस चुनाव में भाजपा आप आदमी पार्टी के खिलाफ एक बेहतर विकल्प बनकर उभरेगी।

आप का आरोप है कि भाजपा को जो काम मिला हुआ है, वो ठीक से नहीं कर पा रही है? दिल्ली में कानून व्यवस्था का बुरा हाल है?

जब सुरक्षा की बात आती है तो ऐसा लगता है कि केजरीवाल बहुत सेलेक्टिक होकर बात करते हैं। आम आदमी पार्टी के लिए सुरक्षा का मुद्दा बस एक चुनावी जुमला है। आम आदमी पार्टी से पंजाब के कानून व्यवस्था पर भी सवाल पूछे जाने चाहिए, वहां तो पुलिस भी सरकार के पास है। वहां दिनदहाड़े पूर्व मुख्यमंत्री पर पवित्र स्वर्ण मंदिर परिसर में गोली चली लेकिन तब केजरीवाल ने चुप्पी साध रखी थी। पंजाब में आज महिलाओं के खिलाफ अपराध 10 फीसदी तक बढ़ गया है जबकि ऐसे अपराधों में दोषी साबित होने की दर केवल एक प्रतिशत है। हाईकोर्ट तक ने कहा है कि ऐसा लगता है कि पंजाब पुलिस और अपराधियों के बीच सांठगांठ है। पंजाब पुलिस का दुरुपयोग करना आम आदमी पार्टी की आदत बन गई है। दिल्ली में भाजपा नेता तेजेंदर सिंह बग्गा को गिरफ्तार करने के लिए पंजाब पुलिस को भेजा गया था।

आपको क्या लगता है कि दिल्ली में आज महिलाएं सुरक्षित हैं?

दिल्ली जो भी ऐसी घटनाएं हैं, उन परिवारों के साथ मेरी और भाजपा परिवार की संवेदना है। लेकिन ऐसे सभी मामलों में दिल्ली पुलिस ने त्वरित कार्रवाई की है। जल्द से जल्द आरोपियों की गिरफ्तारी हुई है। लेकिन केजरीवाल और आम आदमी पार्टी से मैं यह पूछना चाहती हूं कि उस वक्त तो केजरीवाल जी अपने घर पर थे, जब उनके ही सचिव ने उनकी ही पार्टी की एक महिला के साथ अभद्रता की थी, मारपीट की थी। लेकिन केजरीवाल ने महिला सांसद का साथ देने के बजाए आरोपी का साथ दिया और उसे पंजाब का सलाहकार बना दिया। इनके खुद के विधायकों पर महिलाओं के खिलाफ अपराध के संगीन आरोप लगे हैं, ऐसे में किस मुंह से केजरीवाल महिला सुरक्षा की बात करते हैं। ऐसे में जबकि एक दशक से आप की सरकार है, अब तो मुख्यमंत्री भी एक महिला हैं, लेकिन फिर भी इन लोगों के लिए महिला सुरक्षा महज एक चुनावी जुमला है।

क्या आप शीश महल को मुद्दा मानती हैं? क्या आप इसे केजरीवाल का एक और भ्रष्टाचार मानती हैं?

आज हर दिल्ली वासी को इस बात की चुभन है कि आम जनता के 53 करोड़ रुपए खर्च कर दिए गए अपनी लग्जरी लाइफस्टाइल के लिए 6 करोड़ का मार्बल, 8 लाख के पर्दे, 10-10 लाख का एक-एक टीवी, 15 एसी। सरकारी कोष ये सारा पैसा तब पैसा लिया गया, जब जनता कोविड के कहर से जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी। शीश महल मुद्दा है, जनता का पैसा है सर, हिसाब देना पड़ेगा। वैसे तो ये लोग हर बात पर एलजी का रोना रोते रहते हैं लेकिन जब शीश महल बनाने की बारी आई तब कोई अड़चन नहीं आई। दिल्ली कई हजार करोड़ रुपए के घाटे का सामना कर रही है, स्वास्थ्य व्यवस्था बदहाल है। नालों तक की मरम्मत के लिए सरकार के पास पैसे नहीं हैं, मुख्यमंत्री आतिशी ने केंद्र से पैसा भी मांगा है। ऐसे में सवाल ये है कि जब जनता के काम करने के लिए आप के पैसे नहीं हैं तो फिर शीश महल के निर्माण में जनता की गाढ़ी कमाई का 53 करोड़ रुपए कैसे लगा दिए। बिजली के नाम पर इन लोगों ने जनता के सिर पर 21 हजार करोड़ का कर्ज थोप दिया है जबकि डिस्कॉम से 26 हजार करोड़ लेने हैं। ऐसे में इन सारे आर्थिक हालत में भी शीश महल का निर्माण तो मुद्दा है ही।

विस चुनाव को लेकर आप मुफ्त की योजनाओं के सहारे आक्रामक प्रचार कर रही है। क्या आपको नहीं लगता है कि बीजेपी इस मामले में पीछे चल रही है?

मैं आप से सहमत नहीं हूं, ये जो मुफ्त की रेवड़ी बांट कर रबड़ी डकार गए हैं। इससे दिल्ली का मतदाता अच्छे से वाकिफ है। बात करें अगर मुफ्त पानी की तो जब पानी आता ही नहीं तो फिर मुफ्त क्या और महंगा क्या? मुफ्त के नाम पर जनता को सीवर का गंदा पानी पिलाया जा रहा है। कई-कई दिनों तक पानी नहीं आता और जो आता भी है वह पीने के लायक ही नहीं होता है। कहीं नीले रंग का पानी आ रहा है तो काले रंग का पानी आ रहा है। मुफ्त बिजली के नाम पर भी आप ने लोगों को बहुत बड़ा झांसा दिया है। लोगों के बिल बढ़ा-बढ़ाकर भेजे गए। आज दिल्ली में बिजली के बिल में पेंशन सरचार्ज भी जनता से वसूला जा रहा है। आप ने जितने भी बड़े वादे किए थे वे सब झूठे साबित हुए हैं। आप की धोखाधड़ी अब जनता पहचान गई है।

बांसुरी स्वराज की नजर से...

सुषमा स्वराज — शानदार व्यक्तित्व

अमित शाह — आयरन मैन

केजरीवाल — धोखेबाज

विरेन्द्र सचदेवा — दमदार नेता

घोटाले पर तो आम आदमी पार्टी का आरोप है कि ये केंद्र सरकार उन्हें परेशान करने के लिए कर रही है। आपका क्या कहना है इस बारे में?

ये मैं या मेरी पार्टी नहीं कह रही है, देश की अदालते कह रही हैं। आप किसी भी कोर्ट का ऑर्डर देख लीजिए, इन नेताओं की जमानत के ही ऑर्डर देख लीजिए। यहां तक कि हाईकोर्ट तक ने कहा है कि शराब घोटाले में आप के नेताओं द्वारा फायदा लिया गया और उस पैसे का चुनावी गतिविधियों में इस्तेमाल किया गया खासकर गोवा चुनाव में। शायद इसलिए ही जेल गए आप नेताओं की जमानत याचिकाएं भी बार-बार खारिज हुई। यही नहीं अगर प्रथम दृष्टया इन लोगों पर कोई केस नहीं बनता तो कोर्ट अब तक इन्हें खारिज कर चुकी होती।

बांसुरी स्वराज कैसी दिल्ली चाहती हैं?

बांसुरी स्वराज एक विकसित राजधानी चाहती हैं। मैं एक ऐसी राजधानी चाहती हूं जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को सिद्धि तक ले जाने में सक्षम हो। दिल्ली में आज जितनी भी समस्याएं हैं चाहे वो बिजली, पानी, सड़क, ड्रेनेज हो सब आप सरकार की वजह से हैं। आप सरकार के एक दशक से ज्यादा के शासन के बाद आज दिल्ली में ये सारी समस्याएं हैं। यमुना आज जहरीले झाग से भरी हुई है। हमारे प्रदेश अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा को यमुना में डुबकी लगाने के बाद तीन दिन अस्पताल में रहना पड़ा था।

भ्रष्टाचार की अगर बात करें तो आप पार्टी के कई नेताओं पर गंभीर आरोप हैं, लेकिन फिर भी भाजपा इस मुद्दे का फायदा नहीं उठा पा रही हैं या यूं कहें कि आप की पार्टी भ्रष्टाचार को मुद्दा ही नहीं बना पा रही है?

ऐसा बिल्कुल नहीं है, कोई भी मुद्दा भाजपा को नहीं बनाना होता है। बात यह है कि जनमानस में उसकी गूंज है या नहीं। भ्रष्टाचार तो अपने आप में दिल्ली में एक मुद्दा है। 2013 से पहले जलबोर्ड प्रॉफिट में था लेकिन अब 73 हजार करोड़ रुपए के घाटे में है। आप के राज में तो भ्रष्टाचार की एक लंबी फेहरिस्त है। जलबोर्ड घोटाला, क्लास रूम घोटाला, शराब घोटाला, शीश महल घोटाला, जिस भी विभाग पर आप ने अपना हाथ रखा, उसे भ्रष्टाचार से मलीन रखा है। एक दशक तक आप की सरकार केवल प्रचार-प्रसार व भ्रष्टाचार में ही लिप्त रही है और ये बात दिल्ली की जनता जानती है।

आप व कांग्रेस ने अपने उम्मीदवार घोषित कर दिए हैं, लेकिन बीजेपी पीछे क्यों?

जितनी मर्जी हो टिकट घोषित कर लें ये लोग लेकिन दिल्ली के मतदाता ने इनके फाइनल पैकअप की तैयारी कर ली है और जहां तक टिकट घोषित करने की बात है तो ये सवाल ही आप गलत इंसान से पूछ रहे हैं। टिकट किसको मिलेगा और किसको नहीं ये पार्लियामेंट्री बोर्ड और पार्टी नेतृत्व तय करता है।

भाजपा के सारे वादे खोखले जुमले निकले: आप

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा के घोषणापत्र को लेकर आम आदमी पार्टी (आप) ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है। आप ने एक बयान जारी कर कहा कि भाजपा के सारे वादे खोखले जुमले निकले। भाजपा दिल्ली के लोगों द्वारा दी गई एकमात्र कानून और व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी में पूरी तरह विफल रही है। भाजपा जुमलेबाजी की पार्टी है और खोखली बयानबाजी पर चलती है। आप ने कह कि यदि भाजपा कभी भी दिल्ली की सत्ता में आती है, तो मुफ्त बिजली तो दूर की बात है, उनका पहला कदम मुफ्त बिजली खत्म करना होगा क्योंकि वे अपने राज्यों में से किसी में भी निर्बाध बिजली आपूर्ति प्रदान करने में सक्षम नहीं हैं। बल्कि सभी भाजपा शासित राज्यों में लोगों को महंगी बिजली के अलावा आठ घंटे तक बिजली कटौती का सामना करना पड़ता है।

केजरीवाल व सिसोदिया की याचिका पर अब 30 जनवरी को होगी सुनवाई

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दिल्ली आबकारी नीति मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के आरोप पत्र पर संज्ञान लेने के निचली अदालत के आदेश के खिलाफ हाईकोर्ट पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की याचिका पर 30 जनवरी को सुनवाई करेगा। शुक्रवार को न्यायमूर्ति मनोज कुमार ओहरी को ईडी के वकील ने सूचित किया कि अतिरिक्त महाधिवक्ता एस. वी. राजू दलीलें पेश करने वाले थे, लेकिन वह उपलब्ध नहीं थे।

कोर्ट ने केजरीवाल के वकील के अनुरोध पर मामले की अगली सुनवाई 30 जनवरी को तय की है, जबकि पहले इसे 19 फरवरी, 2025 के लिए सूचीबद्ध किया गया था। केजरीवाल के वकील ने ईडी के स्थगन के अनुरोध का विरोध करते हुए कहा कि यहां एक व्यक्ति है, जिनके चुनाव जनवरी में होने वाले हैं और वह इस मामले पर बहस करने के लिए दूसरे पक्ष का अंतहीन इंतजार कर रहे हैं। कोर्ट ने आम आदमी पार्टी (आप) के नेता मनीष सिसोदिया की इसी तरह की याचिका पर भी 30 जनवरी को सुनवाई तय की है।

क्या केजरीवाल के खिलाफ शिकायत दर्ज करने का आईओ के पास अधिकार था

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दिल्ली हाईकोर्ट ने गुरुवार को प्रवर्तन निदेशालय से पूछा कि क्या आबकारी घोटाला से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में ईडी के समन को नजरअंदाज करने के लिए पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद के विरुद्ध शिकायत दर्ज करने का संबंधित जांच अधिकारी (आईओ) के पास अधिकार था। कोर्ट ने ईडी ने इस संबंध में ईडी को प्रासंगिक दस्तावेज पेश करने का आदेश दिया। कोर्ट ईडी द्वारा जारी समन के साथ ही इसे चुनौती देने वाली याचिका खारिज करने के ट्रायल कोर्ट के निर्णय को चुनौती दी है। मामले में अगली सुनवाई 11 फरवरी को होगी। हालांकि, मामले पर सुनवाई के दौरान न्यायमूर्ति मनोज कुमार ओहरी की पीठ ने मौखिक रूप से यह भी कहा कि भले ही आईओ शिकायत दर्ज करने के लिए अधिकृत नहीं था, फिर भी मामले का संज्ञान लेने वाला ट्रायल कोर्ट का आदेश अनुचित नहीं होगा क्योंकि इसमें अनियमितता है या अवैधता नहीं है।

भाजपा का संकल्प पत्र तैयार करने के लिए मिले एक लाख सुझाव: बिधूड़ी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दिल्ली विधानसभा चुनावों के लिए दिल्ली भाजपा की संकल्प पत्र समिति के संयोजक एवं दक्षिण दिल्ली से सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी ने शुक्रवार को संवाददाता सम्मेलन में बताया कि भाजपा का संकल्प पत्र जन आकांक्षाओं का प्रतीक होगा। अभी तक एक लाख से अधिक सुझाव प्राप्त हो चुके हैं। 21-22 दिसंबर को सभी बाजारों में बड़ी संख्या में पार्टी सुझाव वैन भेजकर जनता से सुझाव एकत्र किए जाएंगे। कहा कि मुफ्त पानी, बिजली और बस यात्रा की सुविधाएं जारी रहेंगी और उन्हें बेहतर तरीके से लागू किया जाएगा ताकि उसका वास्तविक लाभ जनता को मिल सके। चुनाव संकल्प पत्र समिति अब जन सुझावों के आधार पर संकल्प पत्र 2025 तैयार कर पार्टी नेतृत्व को सौंपेगी। संवाददाता सम्मेलन का संचालन प्रदेश मीडिया प्रमुख प्रवीण शंकर कपूर ने किया। इसके अतिरिक्त समिति सदस्य अभिषेक टंडन आदि भी उपस्थित रहे।

बिधूड़ी ने बताया कि संकल्प पत्र समिति की अभी तक 6 छोटी-बड़ी बैठकें हो चुकी हैं। इसके अलावा समाज के सभी वर्गों से व्यक्तिगत सीधा संवाद भी किया गया है। ईमेल आईडी और व्हाट्सएप नम्बर पर गुरुवार तक क्रमशः 3259 एवं 36742 यानी कुल 40 हजार से अधिक सुझाव सोशल मीडिया के माध्यम से मिल चुके हैं। इसके अतिरिक्त सभी 70 विधानसभा क्षेत्रों में मोबाइल संकल्प पत्र वैन भेजी गईं। उन वैनों के माध्यम से भी गुरुवार तक 60754 सुझाव मिल चुके हैं जिन्हे सूचीबद्ध किया जा रहा है। विभिन्न वर्गों

के साथ 40 से अधिक बैठकें की गईं हैं और बैठकों के माध्यम से 3567 लिखित सुझाव प्राप्त हुए हैं।

बिधूड़ी ने कहा कि इसी के साथ हमने अपने संगठन संघ परिवार से जुड़े 24 विभागों से भी संकल्प पत्र मुद्दों को लेकर चर्चा की है। इस प्रकार अब तक कुल 1,04,322 सुझाव प्राप्त हुए हैं, जो एक बड़ी जनभागीदारी का प्रमाण है। भाजपा ने आरडब्ल्यूए, लघु उद्योग, व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ ही अन्य राज्यों से आये प्रवासियों के संगठनों से, हॉकर एवं कामगार संगठनों से, शिक्षक, डॉक्टर एवं वर्कर संगठनों से, युवा, वरिष्ठ नागरिक एवं महिला संगठनों से, सफाई कर्मियों सें, पूर्वांचल समाज से, जाट एवं गुर्जर समाज के साथ बैठकें की हैं। रविवार को कुछ नागरिक संगठनों के साथ बैठक कर जन सुझाव अभियान को पूरा करेंगे। उन्होंने बताया कि अब तक जो सुझाव सूचीबद्ध किए गए हैं, उनमें जल बोर्ड से जुड़ी सीवर पानी की समस्याएं, बिजली बिलों की लूट, प्रदूषण, शिक्षा एवं हेल्थ मॉडल पर जन प्रतिक्रियाएं सबसे ज्यादा प्राप्त हुई हैं।

दिल्ली की हलचल

वैश्य अग्रवाल समाज के लिए मांगा टिकट

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दिल्ली अग्रोहा विकास ट्रस्ट ने आगामी विधानसभा चुनाव में आबादी के आधार पर टिकट देने की मांग की है। ट्रस्ट ने वैश्य अग्रवाल समाज के ज्यादा से ज्यादा प्रत्याशियों को चुनावी मैदान में उतारने की मांग की है। ट्रस्ट के अध्यक्ष नंद किशोर अग्रवाल ने सभी राजनीतिक दलों को लिखे पत्र कहा है कि वे अपनी अपनी पार्टी से दिल्ली में जनसंख्या के अनुपात के मुताबिक वैश्यों को टिकट दें। प्रतिनिधिमंडल के साथ नेताओं से मुलाकात कर उन्हें ट्रस्ट की तरफ से मांग पत्र भी सौंपा गया है। इस प्रतिनिधिमंडल में बड़ी पंचायत वैश्य बीसे अग्रवाल के महामंत्री सुमन गुप्ता, श्री अग्रसेन धाम के प्रमुख पदाधिकारी अतुल सिंघल एवं जगदीश बंसल शामिल थे। नंद किशोर अग्रवाल ने कहा कि वैश्य समाज अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। दिल्ली में उसकी आबादी 18 से 20 फ़ीसदी है। इसलिए चुनावों में कम से कम 12 से 15 टिकट वैश्य समाज के उम्मीदवारों को दी जानी चाहिए।

राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी भी उतारेगी उम्मीदवार

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर सभी पार्टियों ने कमर कस ली है। इसी क्रम में राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी ने भी दिल्ली के चुनावी मैदान में अपने उम्मीदवार उतारने का मन बना लिया है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री पशुपति पारस के अनुसार पार्टी ने दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष आनंद कुमार की अध्यक्षता में जनपथ के राष्ट्रीय कार्यालय में चुनाव कमेटी के पदाधिकारियों की घोषणा की, जिसमें दिल्ली विधानसभा चुनाव में पार्टी की जिम्मेदारी राष्ट्रीय महासचिव एवं दिल्ली प्रभारी विनोद नागर, राष्ट्रीय महासचिव एल्विस जोसेफ, राष्ट्रीय महासचिव जियालाल, लीगल सेल के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन चौधरी, राष्ट्रीय महासचिव आफाक सैलानी, राष्ट्रीय महासचिव रुचिदा शर्मा, लेबर सेल के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुभाष बिहारी को कमान सौंप गई है। राष्ट्रीय सचिव डॉ. देवी सचदेवा दिल्ली चुनाव में अहम भूमिका निभाएंगे। ये पदाधिकारी दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए अधिकृत किए गए हैं। इन्हें पार्टी से गठबंधन करने और सीटों के बंटवारा को लेकर पूरी जिम्मेदारी दी गई है।

सम्मानित होंगे रेलवे के 101 कर्मचारी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): भारतीय रेलवे अपने 101 अधिकारियों और कर्मचारियों को उनके असाधारण योगदान के लिए 69वें अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार 2024 से सम्मानित करेगा। यह समारोह शनिवार 21 दिसंबर को नई दिल्ली स्थित 'भारत मंडपम' में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम की थीम 'मैं हूं भारतीय रेल' है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव इस समारोह में पुरस्कार प्रदान करेंगे। उनके साथ रेल राज्य मंत्री वी. सोमन्ना और रवनीत सिंह, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं सीईओ सतीश कुमार और विभिन्न जोन एवं उत्पादन इकाइयों के महाप्रबंधक भी उपस्थित रहेंगे। चयनित 101 कर्मचारियों और अधिकारियों को नवाचार, उत्पादकता, सुरक्षा, संचालन में सुधार, परियोजना पूर्णता, खेल और अन्य क्षेत्रों में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया जाएगा। 15 कर्मचारियों को स्वदेशी तकनीक और उत्पादकता सुधार के लिए सम्मानित किया जाएगा। 16 कर्मचारियों को सुरक्षा और बहादुरी के क्षेत्र में योगदान के लिए पुरस्कार मिलेगा। 17 कर्मचारियों को रेलवे राजस्व बढ़ाने और चोरी रोकने में योगदान के लिए चुना गया।

शकूरबस्ती के पूर्व विधायक डॉ. एससी वत्स की कार्यों के दम पर बड़ी पहचान

- ***दो बार के विधायक रह चुके वत्स ने शकूरबस्ती में 1998 से 2008 तक अनेक विकास कार्य विधानसभा क्षेत्र में करवाए***

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दिल्ली की शकूरबस्ती विधानसभा सीट से दो बार विधायक रह चुके डॉ. एससी वत्स विकास कार्यों के लिए मशहूर हैं। उनके कार्यकाल में हुए कार्य आज भी क्षेत्र की जनता की जुबान पर चढ़कर बोल रहे हैं। वत्स ने अपने कार्यकाल में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार महाविद्यालय और भगवान महावीर अस्पताल का निर्माण कराया।

दो बार के विधायक रह चुके वत्स ने शकूरबस्ती में अपने कार्यकाल में 1998 से लेकर 2008 तक अनेक विकास कार्य विधानसभा क्षेत्र में करवाए हैं। डॉ. एससी वत्स की बात करें तो दो बार विधायक रहने के दौरान उन्होंने क्षेत्र के लोगों के हित में अनेक सामाजिक और

डॉ. एससी वत्स

कल्याणकारी कार्य किए हैं। उनके कार्यों की सूची भी काफी लंबी है। उनमें से कुछ प्रमुख कार्यों की बात करें तो उनके बूते ही लगातार वत्स पर भरोसा जताते हुए उन्हें उम्मीदवार बनाया जाता रहा है। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि रही कि उन्होंने डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार महाविद्यालय का निर्माण कराया। उसके लिए 10 एकड़ भूमि आवंटित करवाई। भव्य भवन निर्माण, सुसज्जित लैब और 800 लोगों की क्षमता वाले एसी सभागार तैयार कराया गया। डॉ. वत्स ने 200 बिस्तर वाले भगवान महावीर अस्पताल का निर्माण करवा कर उसे शकूरबस्ती की जनता को समर्पित किया। अस्पताल बनने के बाद आज भी क्षेत्र की जनता उसका पूरा लाभ उठा रही है। उन्होंने विधायक कार्यकाल में गुरु हरकिशन की स्मृति में 5.5 कि.मी. लंबी और 150 फुट चौड़ी सड़क का निर्माण कार्य संपन्न कराया। इस निर्माण से 40 से अधिक ग्रुप हाउसिंग सोसायटी को लाभ मिला। शकूरबस्ती में समस्त सीवर लाइन का अत्याधुनिक तकनीक से पुनः निर्माण कराया। साथ ही पूरे क्षेत्र की सीवर लाइन को रिठाला ट्रीटमेंट प्लांट से जोड़ने का कार्य कराया जिससे क्षेत्र की जनता को जलभराव से छुटकारा मिल सका। इसके अलावा 66 केवीए और 33 केवीए की पावर ग्रिड का निर्माण कार्य कराया। पावर ग्रिड का निर्माण नेताजी सुभाष पैलेस कॉम्प्लेक्स में कराया गया। क्षेत्र में हाई प्रेशर सोडियम लाइट लगवाई गई। बस्ती में सड़क क्रंकीट से निर्माण कराया गया।

अब बुराड़ी वीआईयू में होगी ग्रामीण सेवा की फिटनेस जांच

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दिल्ली सरकार ने ग्रामीण सेवा व फटफट सेवा चालकों की बड़ी समस्या का समाधान करते हुए उन्हें बड़ी राहत दे दी है। अब ग्रामीण सेवा व फटफट सेवा की फिटनेस जांच बुराड़ी व्हीकल इंस्पेक्शन यूनिट (वीआईयू) में होगी। दरअसल झुलझुली वीआईयू में फिटनेस जांच के लिए तारीख नहीं मिल पा रही थी। यहां व्यावसायिक वाहनों की फिटनेस जांच की तारीख लेने के लिए चालकों को रात-रातभर जागना पड़ रहा था। इसके बाद विभाग की साइट रात 12 बजे खुलती है। मगर बाद में विभाग ने इसका समय सुबह आठ बजे कर दिया था, लेकिन वाहन चालक फिर भी समय नहीं ले पा रहे थे, क्योंकि साइट कुछ समय बाद ही ठप हो जाती है। ग्रामीण सेवा वालों की मांग को देखते हुए परिवहन विभाग ने शुक्रवार को आदेश जारी कर दिया।

इसमें कहा गया है कि ग्रामीण सेवा व फटफट सेवा जैसे व्यावसायिक वाहनों की फिटनेस जांच अब झुलझुली की जगह बुराड़ी वीआईयू में होगी। कैपिटल ड्राइवर वेलफेयर एसोसिएशन दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष चंदू चौरसिया ने अपनी बडी जीत बताया है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण सेवा और फटाफट सेवा की फिटनेस जांच दोबारा झुलझुली से बुराड़ी वीआईयू में शिफ्ट कर दिया क्योंकि झुलझुली के लिए अपॉइंटमेंट नहीं मिल रही थी और अगर मिल रही थी तो कम से कम 20-25 दिनों की बात की मिल रही थी। इसके चलते वाहन चालकों पर पैनल्टी लग रही थी। इसके लिए हमने कई बार स्पेशल कमिश्नर व डीसी साहब से मुलाकात कर अपनी समस्या बताई। उन्होंने कहा कि सरकार का बुराड़ी में अपना फिटनेस सेंटर है जो खाली रहता है। इस पर आवेदन करने पर फिटनेस के लिए अगले दिन की ही तारीख मिल रही है। क्योंकि यहां पर वाहन अधिक नहीं है। लेकिन परिवहन विभाग ने अधिकतर वाहन झुलझुली ऑटोमेटेड सेंटर से संबद्ध कर दिए लेकिन अब परिवहन विभाग ने हमारी मांगों को मान लिया है।

कमर्शियल वाहनों के लिए नए फिटनेस सेंटर खोलने की मांग

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दिल्ली विधानसभा में नेता विपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने राजधानी के कमर्शियल वाहनों को फिटनेस सर्टिफिकेट प्राप्त करने में हो रही परेशानियों के मद्देनजर नए सेंटर खोलने की मांग की है।

दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी को पत्र लिखकर उन्होंने कहा है कि दिल्ली में कमर्शियल वाहनों के लिए केवल एक ही फिटनेस सेंटर होने के कारण लाखों कमर्शियल वहां चालकों को भारी परेशानी हो रही है और उन्हें अपनी गाड़ियों का फिटनेस सर्टिफिकेट लेने के लिए लगभग एक महीने बाद की अप्वाइंटमेंट मिल रही है और इसके चलते बैकलॉग भी बढ़ता जा रहा है। आतिशी को लिखे पत्र में गुप्ता ने बताया कि कमर्शियल वाहनों की एसोसिएशन के एक प्रतिनिधिमंडल ने उनसे भेंट कर दिल्ली के लाखों कमर्शियल वाहन चालकों को हो रही इस दिक्कत की ओर उनका ध्यान दिलाया है। बकौल गुप्ता, ये समस्याएं व्हीकल इंस्पेक्शन यूनिट, बुराड़ी में फिटनेस परीक्षण बंद होने के बाद बहुत बढ़ गई हैं।

हमने पिछले 10 वर्षों में दिन-रात मेहनत करके पूर्वांचल के लोगों को दिल्ली में सम्मानजनक जीवन देने का काम किया

पूर्वांचल के लोगों को रोहिंग्या बता कर उनके अधिकार छीनना चाहती है भाजपाः केजरीवाल

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी)ः एक तरफ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पूर्वांचल के लोगों को रोहिंग्या बता कर उनके अधिकार छीनना चाहती है तो दूसरी तरफ हमने पिछले 10 वर्षों में दिन-रात मेहनत करके अपने पूर्वांचल समाज के लोगों को दिल्ली में सम्मानजनक जीवन देने का काम किया। यह बातें शुक्रवार को आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कही है। उन्होंने कहा कि जिन पूर्वांचली भाइयों ने अपने खून-पसीने से दिल्ली के निर्माण में योगदान दिया, उन्हें भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा रोहिंग्या कैसे कह सकते हैं? केजरीवाल ने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के संसद में दिए गए एक बयान को लेकर भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि दो दिन पहले जेपी नड्डा ने सदन के अंदर पूर्वांचली समाज के खिलाफ बहुत गलत बात बोली थी। उन्होंने दिल्ली में रहने वाले पूर्वांचली समाज का रोहिंग्या घुसपैठिए और बांग्लादेशी लोगों के साथ तुलना की थी और कहा था कि भाजपा के लोग फॉर्म भरकर पूर्वांचली समाज के लोगों के नाम कटवा रहे हैं। हम इसकी कड़ी निंदा करते हैं। यह एक पूरे पूर्वांचल समाज के खिलाफ साजिश है। उनका वोटर लिस्ट से नाम कटवाकर एक तरफ उनकी नागरिकता छीनी जा रही है। भारत में रहने का अधिकार छीना जा रहा है। यह भाजपा एक सोची समझी बहुत घिनौनी साजिश के तहत कर रही है। क्योंकि दिल्ली का अधिकांश पूर्वांचल समाज आम आदमी पार्टी का वोटर है।

सांसद संजय सिंह पूर्वांचल कॉलोनियों में यात्रा निकालेंगे वहीं रात्रि प्रवास करेंगे और पूर्वांचल समाज के लोगों को एकजुट करेंगे

प्रेस कॉन्फ्रेंस करते अरविंद केजरीवाल व संजय सिंह। –फोटोः मिहिर सिंह

भाजपा वालों को नाम न बताएं, वोटर कार्ड न दिखाएं

अरविंद केजरीवाल ने पूर्वांचल के लोगों से कहा कि वह किसी हालत में उनका नाम वोटर लिस्ट से नहीं कटने देंगे। उन्होंने पूर्वांचल के लोगों से अपील की कि कोई भाजपा वाला आपके घर आए तो उनको अपना नाम मत बताना। उसे अपनी जानकारी मत देना, वोटर कार्ड मत दिखाना। किसी भाजपा वाले से संपर्क मत रखना। कोई भाजपा वाला आएगा, हो सकता है कि वो आपके नाम कटवाने के लिए आपकी डिटेल्स मांग रहा है। इसलिए अपने नाम चेक करते रहना। वहीं अरविंद केजरीवाल ने कहा कि आम आदमी पार्टी कुछ दिनों के बाद इस बात को दिल्ली के हर पूर्वांचल समाज के व्यक्ति के घर जाएगी और जेपी नड्डा का यह वीडियो सबको दिखाएंगे कि किस तरह से भाजपा सुनियोजित तरीके से पूर्वांचल समाज के खिलाफ साजिश रच रही है।

हम रोहिंग्या नहीं, बल्कि यूपी-बिहार से आए हैं इस अपमान का बदला चुनाव में लेंगेः सिंह

आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने कहा कि हम रोहिंग्या या बांग्लादेशी नहीं, बल्कि यूपी बिहार से आए लोग हैं। इस अपमान का बदला आने वाले चुनाव में लेंगे। उन्होंने कहा कि मैं उस समय सदन में मौजूद था जब हमारे पूर्वांचल के भाइयों को रोहिंग्या, बांग्लादेशी और घुसपैठिया कहा गया। हम यूपी, बिहार और पूर्वांचल वाले, जो 40-40 साल से दिल्ली में रह रहे हैं। हमारे बच्चे यहां पैदा हुए, यहां पढ़ रहे हैं। मां-बाप यहीं रहते हैं। क्या हम अपने देश में बांग्लादेशी और रोहिंग्या हो गए? और यह कोई सामान्य व्यक्ति नहीं बल्कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष कह रहे हैं। कहा कि हम पूर्वांचल कॉलोनियों में जाएंगे और पूर्वांचल भाइयों के सामने यह अपमानजनक वीडियो, जो खुद भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष का वक्तव्य है।

'धमकियों से डरे हुए हैं बच्चे और अभिभावक'

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी)ः दिल्ली के एक और नामी स्कूल को शुक्रवार को बम से उड़ाने की धमकी मिलने पर आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि दिल्ली में हर रोज स्कूलों को बम से उड़ाने की धमकियां मिल रही हैं। इन धमकियों से बच्चे और अभिभावक डरे हुए हैं। केजरीवाल ने कहा कि शुक्रवार को एक और नामी स्कूल को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। अपराधियों और धमकी देने वालों के हौसले इसलिए बुलंद हैं क्योंकि आज तक धमकी देने वाला कोई पकड़ा ही नहीं गया है। केंद्र सरकार दिल्ली वालों को सुरक्षा देने में नाकाम हैं। उसे दिल्ली की जनता के बीच आकर जवाब देना चाहिए।

आज का सुविचार

दुनिया में सिर्फ दिल ही है जो बिना आराम किए काम करता है, इसलिए उसे खुश रखो, चाहे अपना हो या अपनो का।
–सुरेन्द्र कुमार रैली

10 वर्ष में 200 से अधिक योजनाएं लॉन्च की गईः हर्ष मल्होत्रा

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी)ः केंद्र सरकार के कॉर्पोरेट मामले सड़क, परिवहन व राजमार्ग राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा ने जन धन योजना, आधार और मोबाइल त्रिनिटी योजनाओं, डिजिटल लेन देन और आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के प्रभाव पर संवाददाता सम्मेलन का आयोजन किया। 2014 से मोदी सरकार गरीबों के कल्याण के लिए काम कर रही है और पिछले 10 वर्षों में 140 करोड़ नागरिकों के लिए 200 से अधिक योजनाएं लॉन्च की गई हैं। प्रधानमंत्री मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में प्रधानमंत्री जन धन योजना ने भारत की एक बड़ी आबादी को बैंकिंग सिस्टम में शामिल करके उनके जीवन को सरल बनाया है। वर्तमान में 54 करोड़ से अधिक खाते हैं जिनमें कुल जमा राशि लगभग 2.39 लाख करोड़ है, जो कि योजना की शुरुआत से अभी तक 15 गुना बढ़ी है। यह योजना विशेष रूप से ग्रामीण, अर्ध-शहरी इलाकों और महिलाओं में सफल रही है जिसमें लगभग 66% खाते इन क्षेत्रों से आते हैं। इसके अलावा 37.02 करोड़ रुपे कार्ड प्रधानमंत्री जन धन योजना खाता धारकों को जारी किए गए हैं, और प्रति खाता जमा राशि में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो उसके उपयोग और बचत की प्रवृत्ति को दर्शाता है। विश्व बैंक ने भी माना है कि भारत ने अपने वित्तीय समावेशन लक्ष्यों को केवल छह वर्षों में प्राप्त किया है, यह एक उपलब्धि है जिसे बिना उन्नत डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के 47 वर्षों में हासिल किया जा सकता था।

पूर्वांचलवासी आप के बयान को नहीं भूलेः वीरेन्द्र सचदेवा

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी)ः प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा कि पूर्व सीएम अपना चेहरा एवं बयान दोनों मौका अनुसार बदलने में माहिर हैं। जैसे ही उन्हें समझ आया है कि वह राजनीतिक रूप से घिर चुके हैं, उनका बांग्लादेशी एवं रोहिंग्या घुसपैठिओं को राजनीतिक समर्थन जगजाहिर हो चुका है तो वह जिस कांग्रेस से राजनीतिक दूरी बनाकर दिखा रहे हैं, उसी कांग्रेस के एजेंडे को उठाकर राजनीतिक बयानबाजी कर रहे हैं। सचदेवा ने कहा है कि अरविंद केजरीवाल पूर्वांचल के लोगों के पक्षधर बन कर दिखा रहे हैं, मगर पूर्वांचलवासियों को इन्हीं का 30 सितम्बर, 2019 का बयान याद है कि जब उन्होंने कहा था कि, 'बिहारी 500 का टिकट लेकर दिल्ली आते हैं, 5 लाख का मुफ्त इलाज करा कर लौट जाते हैं।' यूपी, बिहार एवं हरियाणा के लोग भूले नहीं हैं कि पूर्व सीएम अनेक बार कह चुके हैं कि दिल्ली के बॉर्डर स्थित अस्पताल एवं स्कूलों पर बाहर वालों का भारी दबाव रहता है।

डॉ. अम्बेडकर के खिलाफ कथित बयानबाजी पर कांग्रेस का प्रदर्शन

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी)ः दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव के नेतृत्व में आज सभी 14 जिला कांग्रेस कमेटियों ने अपने-अपने क्षेत्रों में भाजपा की केन्द्र सरकार के द्वारा गरीबों, वंचितों, दलितों सहित देश के करोड़ों लोगों के अधिकारों को संरक्षित करने के लिए संविधान बनाने वाले भारत रत्न बाबा साहेब डा. भीम राव अम्बेडकर की संसद में कथित अपमान के खिलाफ प्रदर्शन किया। इसमें पूर्वी दिल्ली संसदीय क्षेत्र में पटपड़गंज जिला अध्यक्ष दिनेश कुमार एडवोकेट ने त्रिलोकपुरी चौक पर, कृष्णा नगर जिला के अध्यक्ष गुरचरण सिंह राजू ने बाबूराम स्कूल शाहदरा में, नई दिल्ली संसदीय क्षेत्र में करोल बाग जिला के अध्यक्ष मदन खोरवाल ने सिद्धार्थ होटल चौक पूसा रोड़ पर, नई दिल्ली जिला के अध्यक्ष विरेन्द्र कसाना ने रमा मार्केट मुनीरका में, उतर पश्चिमी संसदीय क्षेत्र के रोहिणी जिला अध्यक्ष इंद्रजीत शौकीन ने मंगोल पुर खुर्द रोहिणी में प्रदर्शन किया। अन्य जिलाध्यक्षों ने भी अपने क्षेत्र में प्रदर्शन किया। दूसरी तरफ देवेन्द्र यादव ने कहा, सत्तारूढ़ भाजपा सरकार डा. अम्बेडकर पर अपमानजनक बयान पर माफी मांगे। यह पहली बार नही है जब भाजपा ने डा. अम्बेडकर का सार्वजनिक अपमान किया है, बाबा साहब की फोटो के साथ खिलवाड़ करना करना भाजपा की मनुवादी सोच का परिणाम है।

किए गए सभी वादे पूरे होंगेः रोहन जेटली

डीडीसीए अध्यक्ष रोहन जेटली के साथ निदेशक मंजीत सिंह व ज्वाइंट सेक्रेटरी अमित ग्रोवर, उपाध्यक्ष शिखा कुमार को कुर्सी पर बैठाते रोहन जेटली साथ में शिखा की मां शशि खन्ना व पिता बीसीसीआई के पूर्व अध्यक्ष सीके खन्ना।

डीडीसीए की पहली बैठक में लिए गए कई महत्वपूर्ण फैसले

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी)ः दिल्ली डिस्टिक्ट एंड क्रिकेट एसोसिएशन (डीडीसीए) के चुनाव में रोहन जेटली की अगुवाई वाले पैनल ने शानदार जीत दर्ज करने के बाद शुक्रवार को पहली बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान नवनिर्वाचित सदस्यों का स्वागत किया गया। जिन सदस्यों को स्वागत किया गया उनमें ज्वाइंट सेक्रेटरी अमित ग्रोवर, ट्रेजरर हरि सिंगला, डायरेक्टर तुषार सहगल, डायरेक्टर आनंद वर्मा व डायरेक्टर विकास कत्याल शामिल रहे। इस बारे में डीडीसीए के डायरेक्टर मंजीत सिंह ने बताया कि बैठक के दौरान कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की गई। जिसमें मुख्य रूप से स्विमिंग पूल को करने, अपने पूर्व व बुजुर्ग खिलाड़ियों को 10 लाख रुपए तक का मेडिकल सुविधाएं उपलब्ध करने और फैमिली लॉन्च को मोती महल के साथ करार करने की पहल की गई। मंजीत सिंह ने कहा कि हमारी जिम्मेदारी बनती है कि दिल्ली के बच्चों में क्रिकेट को लेकर जो हुनर है उसकी पहचान की जा सके। इसके लिए हमने अंडर-19 और अंडर-23 के प्रतिभाओं को तरासने का काम शुरू करने के साथ ही गरीब बच्चों के बीच कैसे क्रिकेट टैलेंट निकले इसपर काम शुरू करना है। वहीं डीडीसीए में नेतृत्व और सशक्तिकरण की एक नई लहर दिखाई दी, जब अध्यक्ष रोहन जेटली ने शिखा कुमार को उपाध्यक्ष के रूप में उनकी जिम्मेदारी सौंपी।

दिल्ली की हलचल

केन्द्रीय सड़क और परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने वर्ल्ड पीस हार्मनी के चेयरमैन हाजी शकील सैफी को अपनी पुस्तक 'अनमास्किंग इंडिया'' भेंट करते हुए।

महिलाएं प्रगति की प्रेरक शक्तिः इंद्रेश कुमार

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी)ः एसीएस यानी ऑल सक्सेस चैरिटेबल ट्रस्ट ने एक विशेष समारोह के दौरान कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया में उन महिलाओं को सम्मानित किया जिन्होंने राष्ट्र निर्माण और सामाजिक विकास में असाधारण योगदान दिया है। इस आयोजन में उन महिलाओं की उपलब्धियों का उत्सव मनाया गया जिन्होंने सकारात्मक बदलाव लाने और समुदायों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस अवसर पर आरएसएस के राष्ट्रीय कार्यकारिणी इन्द्रेश कुमार ने महिलाओं के सशक्तिकरण, मजबूती और समावेशी समाज के निर्माण में उनकी भूमिका के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि महिलाएं हमेशा प्रगति की प्रेरक शक्ति रही हैं और उनके योगदान को हर मंच पर मनाना चाहिए। इस आयोजन में महिला और बाल विकास मंत्री सावित्री ठाकुर और दिल्ली के लोकायुक्त न्यायमूर्ति हरीश चंद्र मिश्रा भी शामिल थे। इन सम्मानीय व्यक्तियों ने सम्मानित महिलाओं की सराहना की और राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया।

हमारी संस्कृति अनेकता में एकता का संदेश देती हैः आतिशी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी)ः मुख्यमंत्री आतिशी शुक्रवार को दिल्ली विधानसभा परिसर में आयोजित क्रिसमस और नए साल के समारोह में शामिल हुई। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति अनेकता में एकता का संदेश देती है। हम बेशक भाषा, धर्म, पहनावे में अलग हो लेकिन दिल से हम सभी भारतीय है और सभी का सम्मान करते है। उन्होंने कहा कि पंक्ति में खड़े आखिरी इंसान के लिए काम करने का संदेश भारत का हर धर्म देता है और पिछले 10 साल से हमारी सरकार हर धर्म के इस संदेश, इस सपने को साकार करने का प्रयास कर रही है। लोगों को क्रिसमस की बधाई देते हुए सीएम आतिशी ने कहा कि मेरे पेरेंट्स दिल्ली यूनिवर्सिटी में पढ़ाते थे और हम कैंपस में ही रहते थे। बचपन में हमें नहीं पता था कि हमारा धर्म क्या है। उन्होंने कहा कि हमारे देश की सबसे बड़ी त्रासदी है कि आज हमनें अपने बीच में कहीं धर्म, कहीं जात-पात, कहीं भाषा की दीवारें खड़ी कर दी है लेकिन हमारे देश की मूल संस्कृति अनेकता में एकता की है।

महरौली से नरेश नहीं लड़ेंगे चुनाव, महेंद्र चौधरी होंगे आप के नए उम्मीदवार

महरौली वार्ड से आप पार्षद रेखा चौधरी के पति हैं महेंद्र चौधरी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी)ः आम आदमी पार्टी (आप) के महरौली से विधायक नरेश यादव ने दिल्ली विधानसभा का चुनाव लड़ने से इंकार कर दिया है। 'आप' ने महरौली वार्ड से पार्टी की पार्षद रेखा चौधरी के पति महेंद्र चौधरी को इस सीट से उम्मीदवार बनाया था। नरेश यादव को हाल में पार्टी ने तीसरी बार उम्मीदवार बनाया था। यादव को 2016 के कुरान की बेअदबी के मामले में पंजाब में कुछ दिन पहले ही एक अदालत ने दो साल की सजा सुनाई थी। उनकी इस मामले में कुछ दिन पहले गिरफ्तारी भी हुई थी, मगर बाद में उन्हें जमानत मिल गई थी। यह मामला मुस्लिम इलाकों में काफी तूल पकड़ रहा था, इसके बाद नरेश यादव के टिकट काटे जाने की मांग बढ़ती जा रही थी।

तीन दिन पहले मुस्लिम नेता असदुद्दीन ओवैसी ने मुस्तफाबाद में अपने प्रत्याशी के चुनाव प्रचार में भी यह मुद्दा जोर-शोर से उठाया था। नरेश यादव द्वारा इंकार करने के बाद आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) संदीप पाठक ने पार्टी की पांचवीं सूची जारी की और महेंद्र चौधरी को महरौली सीट से उम्मीदवार बनाया। इससे पहले यादव ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि उन्होंने आप संयोजक अरविंद केजरीवाल से मुलाकात की और उन्हें अपने खिलाफ मामले में अदालत द्वारा बरी किए जाने तक चुनाव न लड़ने के अपने फैसले के बारे में बताया है।

नरेश यादव के खिलाफ क्या है मामला

मालेरकोटला जिले की एक अदालत ने गत 29 नवंबर को वर्ष 2016 के कुरान की बेअदबी से जुड़े मामले में आप के विधायक नरेश यादव को दो साल की सजा सुनाई थी। अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश परमिंदर सिंह ग्रेवाल की अदालत ने फैसला सुनाया था।

टिकट कटने का कारण कुछ और हैः सचदेवा

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी)ः प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने आरोप लगाया कि अरविंद केजरीवाल ने महरौली से अपनी पार्टी का प्रत्याशी परिवर्तन बेअदबी मामले की वजह से नहीं किया है, बल्कि इसका कारण कुछ और है। नरेश यादव को पंजाब के एक न्यायालय से बेअदबी के मामले में सजा सुनाई थी, उसके बावजूद आप ने गत सप्ताह उन्हें महरौली से तीसरी बार चुनाव टिकट दिया।

मेधावी छात्रों को मेडल और प्रमाण पत्र से किया सम्मानित

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी)ः पायनियर कमल कॉन्वेंट से. स्कूल का खेलकूद एवं सांस्कृतिक महोत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस मौके पर क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों के साथ भारी संख्या में बच्चों के माता-पिता उपस्थित रहे। नर्सरी से लेकर 10वीं कक्षा तक के बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम एवं स्पोर्ट्स एक्टीविटीज में भाग लिया। कार्यक्रम में सुनीता राय (बेस्ट कोच ऑफ दिल्ली, एथलेटिक्स) अंजु लूथरा (एच. आर. डी. जीसस मैरी कॉलेज डी. यू. और ओलंपिक प्रिपरेशन, कामिनी सदस्या पुष्पा जिन्दल (सामाजिक कार्यकर्ता) और आध्यात्मिक गुरु श्री मुन्नालाल तिवारी उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि सुनीता राय ने बच्चों के अथक प्रयास की सराहना की। प्राचार्य मल्लिका बजाज ने स्कूल की वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए स्कूल की शैक्षणिक एवं स्पोर्ट्स की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने समारोह में आए अतिथियों, माता-पिता एवं गणमान्य व्यतियों का आभार प्रकट किया। प्रवन्धिका डॉ. सीमा बजाज ने मेधावी छात्रों को प्रमाण पत्र एवं मेडल से सम्मानित किया।

सरकार को सिखाएंगे सबकः चौ. सुरेंद्र सिंह

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी)ः पालम 360 के प्रधान चौ. सुरेंद्र सिंह सोलंकी ने शुक्रवार को एक प्रेसवार्ता में 22 दिसंबर को मंगोलपुर कलां में होने वाली महापंचायत की रूपरेखा के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि 22 तारीख को होने वाली महापंचायत ऐतिहासिक होगी। इस महापंचायत में दिल्ली के 360 गांव और 36 बिरादरी के लोग इकट्ठा होंगे। चौ. सोलंकी ने कहा कि दिल्ली के गांव अब संघर्ष के रास्ते पर चल पड़े हैं और अब वे अपनी मांगे मनवाकर ही दम लेंगे। उन्होंने एक बार फिर सरकार को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि यह संघर्ष आरंभ हुए लगभग 2 साल का समय बीत चुका है। इस दौरान दिल्ली देहात के लोग मुख्यमंत्री निवास के बाहर, उपराज्यपाल निवास के बाहर, जंतर-मंतर में विरोध-प्रदर्शन कर चुके हैं, डेढ़ साल पहले भी पीरागढ़ी में महापंचायत का आयोजन किया गया था। लेकिन सरकार ने हमारी किसी समस्या का कोई समाधान नहीं किया। 22 दिसंबर को मंगोलपुर कलां में होने वाली महापंचायत में सरकार को सबक सिखाने के लिए सख्त से सख्त फैंसलों का ऐलान किया जाएगा।

किसे मिलेगा भाजपा का टिकट | दो पार्षद व तीन दो पूर्व छात्र नेताओं के बीच चल रहा टिकट का घमासान

निगम चुनाव में रहे तीसरे नंबर पर, फिर भी चाहिए विधानसभा टिकट

सतेन्द्र त्रिपाठी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी)ः समझने ही नहीं देती सियासत हम को सच्चाई, कभी चेहरा नहीं मिलता, कभी दर्पण नहीं मिलता। साल 2012 में निगम चुनाव की राजनीतिक पिच पर बुरी तरह मात खाने वाले केशवपुरम जिला के अध्यक्ष वीरेन्द्र गोयल पर यह शेर एकदम सही बैठता है। निगम के चुनाव में बागी प्रत्याशी के कैमरे ने ऐसी फोटो खींची कि मुकाबले में ही दूर-दूर तक नजर नहीं आए। मगर अभी विधानसभा चुनाव लड़ने की इच्छा बरकरार है। बात हो रही त्रिनगर विधानसभा में भाजपा के टिकट मुकाबले की यहां से दो पार्षद व तीन पूर्व छात्र नेता सहित नौ नेताओं के बीच टक्कर चल रही है। सबसे पहले बात हो रही है जिला अध्यक्ष वीरेन्द्र गोयल की। उनकी पत्नी निगम पार्षद हैं। वह खुद विधानसभा की तैयारी कर रहे हैं, लेकिन उनका राजनीतिक इतिहास बड़ा खराब रहा है। करीब 12 साल पहले जब वह भाजपा के टिकट से चुनाव लड़े थे तो मुकाबले में ही नहीं आ पाए। भाजपा के बागी सुरेश गर्ग ने अपने चुनाव निशान कैमरे से सबकी ऐसी फोटी खींची की कांग्रेस-भाजपा सब उनके वोटों की बराबरी नहीं कर पाए। कार्यकर्ता सवाल उठा रहे हैं कि एक ही घर में सबको टिकट व पद कैसे मिल सकते हैं। इस सीट का इतिहास ऐसा है कि 1993 व 1998 में भाजपा के नंद किशोर गर्ग जीते, फिर 2003 व 2008 में कांग्रेस के अनिल भारद्वाज ने बाजी मारी। इसके बाद 2013 में नंद किशोर गर्ग फिर से जीते। साल 2015 में आप के जितेन्द्र सिंह तोमर तो 2020 में उनकी पत्नी प्रीति तोमर चुनाव जीतीं। यहां से टिकट की दौड़ में दो पार्षद भी हैं। इनमें रवि हंस व किशन बेमाड़ शामिल हैं। किशन दो बार से सुरक्षित सीट से जीतकर अपना दम दिखा चुके हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में 10 हजार से ज्यादा वोटों से हारे पूर्व प्रत्याशी तिलकराज गुप्ता भी टिकट चाहते हैं। उनकी उम्र आड़े आ सकती है। जिला अध्यक्ष व प्रदेश में मंत्री रह चुके संजीव शर्मा छात्र नेता रहे हैं।

वह धर्मयात्रा महासंघ सहित अन्य सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं। एबीवीपी से छात्र राजनीति की शुरुआत करने वाले महेश अवाना जिले में चौथी बार उपाध्यक्ष हैं। वह गुर्जर समाज से आते हैं। यहां गुर्जरों के तीन गांव हैं। वह भी ऐड़ी चोटी का जोर लगा रहे हैं। इन दोनों की ही संघ में अच्छी पकड़ है।

छात्र राजनीति से शुरुआत करने वाले मंजीत सिंह ओबीसी से संबंध रखते हैं। यहां ओबीसी के पांच गांव हैं। वह भी जिले में उपाध्यक्ष हैं। वह युवा मोर्चा में प्रदेश महामंत्री भी रह चुके हैं। इलाके की सबसे बड़ी रामलीला कराने का तमगा भी उनके पास है। कोरोना काल में उनके द्वारा किए गए कार्य की हर किसी ने सराहना की थी। वह संघ परिवार से बड़ी नजदीकी से जुड़े हुए हैं। सांसद प्रवीन खंडेलवाल के भी वह करीबी हैं।

रमेश डबास दो बार निगम चुनाव में हाथ आजमां चुके हैं, मगर किस्मत ने साथ नहीं दिया। दोनों बार मामूली अंतर से हार गए। इनके अलावा मीरा अग्रवाल व रविन्द्र बेनीवाल के नाम भी चर्चा में है।

वीरेंद्र गोयल

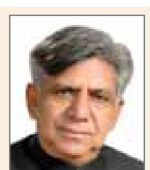
तिलकराम गुप्ता

महेश अवाना

मंजीत सिंह

रवि हंस

संजीव शर्मा

नई दिल्ली में आज और कल होगा विंटर रोज शो

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी)ः नई दिल्ली नगर पालिका परिषद (एनडीएमसी) और इंडिया रोज सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में इस सप्ताहांत 21 और 22 दिसंबर को चाणक्यपुरी स्थित भारत-अफ्रीका फ्रेंडशिप रोज गार्डन में विंटर रोज शो का आयोजन किया जाएगा। इस शो में दिल्ली के विभिन्न संस्थान और व्यक्तिगत प्रतिभागी अपने बेहतरीन गुलाब के पौधों का प्रदर्शन करेंगे। पौधों को खास तरीके से तैयार किया गया है, जिसमें छंटाई, पोषण और रोग नियंत्रण का विशेष ध्यान रखा गया है। दिसंबर का महीना गुलाबों की पूरी खूबसूरती दिखाने का सबसे उपयुक्त समय माना जाता है। शो का उद्घाटन शनिवार 21 दिसंबर को दोपहर 12:30 बजे किया जाएगा। विजेता फूलों को रविवार 22 दिसंबर को शाम 4 बजे पुरस्कृत किया जाएगा। एनडीएमसी ने नागरिकों से उत्सव में भाग लेने का आग्रह किया। शो शनिवार को दोपहर 1 से शाम 5 बजे और रविवार को सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक खुला रहेगा।

आप नेता सागर कांग्रेस में शामिल

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी)ः राज्यसभा सांसद और एआईसीसी के कोषाध्यक्ष अजय माकन ने आज आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता सागर का कांग्रेस पार्टी में स्वागत किया, जिन्होंने कस्तूरबा नगर विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस उम्मीदवार अभिषेक दत्त को अपना समर्थन देने का संकल्प लिया। इस अवसर पर एआईसीसी दिल्ली प्रभारी काजी मोहम्मद निजामुद्दीन, सुखविंदर सिंह दानी, हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष उदय भान मौजूद थे। इस मौके पर अजय माकन ने कहा कि सागर और उनके समर्थक आगामी विधानसभा चुनावों में कस्तूरबा नगर में कांग्रेस को मजबूत करेंगे क्योंकि विधानसभा चुनावों में आप की निश्चित हार के कारण निराश आप नेता केजरीवाल के डूबते जहाज को छोड़ रहे हैं।

पंजाब केसरी क्लासीफाइड

आवश्यकता

आवश्यकता है कूलर मैकेनिकों की जो फील्ड में कूलर कंपलेन्ट कर सके। सम्पर्क करें रायडर एम्पलाइसिस Mob. 8130914516/7827291100
1263430

श्याम
श्याम डेयरी प्रोडक्ट्स
थोक क्रेता (Bulk Purchaser) की आवश्यकता है
श्याम डेयरी प्रोडक्ट्स, प्रयागराज के उत्पाद घी, स्किम्ड मिल्क पाउडर एवं डेयरी मिक्स की बिक्री हेतु नई दिल्ली, एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एन.सी.आर.) में छोटे/बड़े थोक क्रेता चाहिये।
Sales Manager
R.K. Yadav, Mo. : 9919804907
Depot : B-4, Ashok Nagar Market, Ghaziabad - 201001
rkyadav.sm.sd@shyamgroup.org
General Manager
YP Singh, Mo. 9919804935
ypsingh.gm.sd@shyamgroup.org
www.shyamdairy.com
Plant : Shyam Dairy Products
Dhanua, Near Chaka Block, Rewa Road, Naini, Prayagraj - 211 008

पोल्ट्री

एनईसीसी दिल्ली क्षेत्र में आज (21.12.2024) के लिए सुझाया गया फार्म-गेट अण्डे का रेट ₹ 660/- रुपये प्रति 100 अण्डे (व्यापार और उद्योग की जानकारी के लिए) है।
1250396

ज्योतिष

खुला चैलेंज शक्ति चमत्कार देखें 11 घंटों में समाधान बाबा पठान बंगाली लव मैरिज, मनचाहा प्यार, वशीकरण, पति-पत्नी अनबन, सौतन दुश्मन, मूठकरनी (दिल्ली) # 7500542070.
1263385

व्यापार

दिल्ली विधानसभा इलेक्शन में केवल जीतने के इच्छुक साफ छवि वाले महिला पुरुष इलेक्शन ट्रेनिंग के लिए संपर्क करें। राजनीति कवच - 9871154922
1263443

खोया-पाया

I, Ujjawal Thripathi S/o Dileep Tripathi R/o B/4/119/A, Ground Floor, keshav Puram, Delhi-110035 has lost my Original Certificate & Marksheet UPMSP 10th Class Roll No. 211201916 Passing Year 2021.
1263439

I, Hari Shankar , Have lost Original Diploma certificate, Power of Attorney documents, Will in the name of Late Smt. Savita Devi. If found Contact 9313516638
1263437

I, Ujjwel Bansal S/o Mani Ram Bansal R/o C-1209, First Floor, Ansal Sushant City, Panipat, Haryana have lost my ICSE Board 10th Marksheet, Index No.T/263/079, Passing Year 2003, St Mary's School, Bhadohi, UP. If anyone found please contact: 9667363007
1263434

प्रार्थी के क्लाइंट का बैनामा, जिसका विक्रेता गुलशन कुमार व क्रेता इन्द्र वर्मा दि. 26.6.2002, बही सं. 1, जिल्द 193/530 द सं. 3314, सब रजिस्ट्रार सहारनपुर में दर्ज है दि. 22.11.2024 को 1.00 बजे दिन में क्लाइंट के लोन हेतु bank के वकील को दिखाने गया था कहीं गुम हो गया है ढूंढा नहीं मिला, यदि मिले या आपत्ति हो तो 15 दिनों के भीतर बताए द्वारा PSB मैनेजर सिविल लाइन सहारनपुर संतराम, मो.7988527250
7000008

नाम परिवर्तन

मैं, हरबीर सिंह शौकीन पुत्र जय पाल सिंह निवासी मकान नं. 116ए, सुल्तानपुर माजरा दिल्ली-110086, घोषित करता हूं कि मेरे पासपोर्ट में नाम हरबीर सिंह लिखा गया है, मेरा पासपोर्ट नं. M4015106 है जबकि मेरा सही नाम हरबीर सिंह शौकीन है।
1263433

I, Sonia Tuli, D/o Pradeep Tuli, R/o H.No.-61, Gali-10, Vasudev nagar, Pratap nagar, Malka Ganj, North Delhi-07, have changed my name to Sonia.
1263432

I, Nagendra Singh Rana S/o Sh. Harmohan Singh Rana R/o H. No. 97, Sector-10A, Gurgaon, Pin-122001, have changed my name to Nagendra Rana for all future purposes.
1263435

I Prachi D/o Sh. Bijender Singh R/o VPO Chhichhrana, 88 Tehsil Gohana, Distt. Sonipat, Haryana -131301 declares that name of my father has been wrongly written as Bijender in my 10th and 12th class education documents. The actual name of my father is Bijender Singh which may be amended accordingly.
1263445

I, Jayanti D/o Sh. Dinesh kumar house-28 sawanpark extn. Ashok Vihar north west Delhi-52 My Father name Dinesh kumar is mention wrong in my all Education certificate and Aadhar, PAN card etc. But the correct name is Dinesh kumar verma. This is my true statement.
1263441

मैं, संजय चटर्जी पुत्र रमेश चंद्र चटर्जी निवासी एम-611, जल वायु टावर्स, सेक्टर-56, गुड़गांव - 122011 HR, ने अपना नाम संजय चटर्जी से बदलकर संजीव चटर्जी रख लिया है।
7000009

I hitherto known as Mansi D/o Anil Verma R/o 5 Kabir Pur, Sonipat, Haryana-131001 have changed my name and shall hereafter be known as Mansi Verma.
7000004

I, Ila Bhatt Kashav alias Ila Bhatt D/o Amar Singh Ghaji W/o Ramesh Chand Kashav R/o C-31, Indraprastha Apptts, I.P Ext Patpar Ganj, Delhi-110092, have changed my name from Ila Bhatt Kashav alias Ila Bhatt to Ila Bhatt Kashav for all future purposes.
7000005

I, Sujata Arora W/o Shri Mahesh Arora R/o B-113, First Floor, IGNOU Road, Gate No.3, Freedom Fighter Enclave, VTC: Neb Sarai, PO: Ignou, District: South Delhi, Delhi-110068, have changed my name to Sonal Arora for all purposes.
7000007

पाठकों को परामर्श

पाठकों को परामर्श दिया जाता है कि वे विज्ञापनों के सम्बन्ध में कोई कार्रवाई करने से पहले तथ्यों की समुचित जांच स्वयं ही अवश्य कर लें, क्योंकि 'पंजाब केसरी' विज्ञापनदाताओं द्वारा किए गए किसी भी दावे की सच्चाई का न तो कोई आश्वासन देता है और न ही समर्थन करता है। इसलिए पाठकों को स्वयं ही अपने आधार पर सभी तथ्यों की जांच करनी चाहिए। किसी भी प्रकार के लेन-देन के लिए यह समाचार पत्र उत्तरदायी नहीं होगा।

नाम परिवर्तन

I, Md Naushad S/o Md. Auyb R/o Ward 02 Khanpur PO Khanpur Dist. Samastipur, Bihar - 848117 have changed my religion from Muslim to Hindu for all purposes.
1263444

I, Sanjeev Kumar S/o Sukhbir Singh R/o H.No.129 A, Badi Chopal wali gali, Darya Pur Kalan, Delhi-110039, have changed my name to Sandeep for all purposes.
1263438

I, hitherto known as Sanchit Yadav S/o Ramesh Chandra R/o Hardaspur Nispi, Datauli, Firozabad, Uttar Pradesh-283203 have changed my name and shall hereafter be known as Abhishek.
1263436

I, Naresh Kumar Yadav S/o Rohtash Yadav R/o A-114, Naharpur, Sector-7, Rohini North West, Delhi-110085 have changed my name to Naresh Yadav for all future purpose.
1263440

I, Jai Prakash Bir Pawar S/o Shri BIR SINGH, R/o House No. 107, Left Side, G/F, Ghitorni Village, VTC: Mehrauli, PO: Mehrauli, Sub District: Hauz Khas, District: South Delhi, Delhi-110030, have changed my name to Jai Prakash for all purposes.
7000006

I, Aatmika, D/o Yash Pal Dawar, R/o H.No. 2249,Hudson Lane,Delhi-9, have changed my name to Aatmika Dawar.
7000003

I, Bhoomi D/o Manoj Kumar R/o RZ-88, Sukhiram Park, Uttam Nagar, West Delhi - 110059 have changed my name to Bhoomi Radi for all purposes.
7000001

I, Neelam Goyal W/o Manoj Kumar R/o House No. A-615/6, Gali-No. 6, Ambedkar Nagar, Haiderpur Village, Delhi-110088 have changed my name to Neelam for all purposes.
7000002

सार्वजनिक सूचना

सार्वजनिक सूचना
मैं मोहम्मद नसरुद्दीन पुत्र मोहम्मद हबीब 336 मीनाक्षी एनक्लेव अशोक विहार लोनी जनपद गाजियाबाद का रहने वाला हूं। मैंने अपने पुत्र मोहम्मद अशरफ उर्फ शानू पुत्रवधू नगमा को गलत चाल-चलन के कारण अपनी चल-अचल संपत्ति से बेदखलकर पारिवारिक संबंध विच्छेद कर लिए हैं। भविष्य में अपने कृत्यों के लिए वह स्वयं जिम्मेदार होंगे।

सार्वजनिक सूचना
मेरी मुवक्किला श्रीमती कान्ता पत्नी स्व. मोती राम निवासी- बी-4/57, सी-ब्लॉक, सुल्तानपुरी, उत्तर पश्चिम जिला, दिल्ली-110086 ने अपनी पुत्री लक्ष्मी पुत्री स्व. मोती राम को उसके दुर्व्यवहार, दुराचरण करने तथा गलत संगति में पड़ने एवं मेरी मुवक्किला के नियन्त्रण में न होने के कारण उसे अपनी समस्त चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल कर उससे अपने सभी पारिवारिक सम्बन्ध विच्छेद कर लिए हैं। भविष्य में यदि कोई उससे किसी प्रकार का लेन-देन या व्यवहार करेगा तो वह अपने जोखिम पर करेगा। मेरी मुवक्किला की इसमें कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।
-हस्ता./-, सी.बी. गर्ग, अधिवक्ता, चै. नं. 735 एफ प्रथम तल, वैस्टर्न विंग, तीस हजारी कोर्ट, दिल्ली-54

PUBLIC NOTICE
This is certify that my client Sh. Navin Kumar Kathuria S/o Sh. K. L. Kathuria, aged about 56 years, (Aadhar Card NO 722746778640) Residing at 37, 3rd Floor Block B, Pocket-4 Rohini Sec-17, Near Crime Branch Office, Rohini Sector 15, North West delhi-110089 has adopted a daughter namely Radhima Kathuria whose date of birth 06.07.2014 through adoption deed dated 16.03.2024, in future my client will be lookafter/ maintenance and education and other expenses etc., of the adopted daughter and my client agree to bring up the said child as their son/ daughter according to their status in life and she have full right in the property of my client.
ANIL KUMAR (ADVOCATE)
Chamber No. 1328, Rohini Court Delhi-110082

सार्वजनिक सूचना

PUBLIC NOTICE
My client Rishi Pal (Aadhar No.3526 1852 0594), aged 57 years, S/o Shri Phool Singh, R/o H-61/20, Street No.5, Jai Prakash Nagar, Ghonda, Garhi Mendu, Bhajanpura, North-East, Delhi-110053, have disowned his son namely Sumit Kumar (Aadhar No.9347 3055 7090) from all his movable and immovable properties as well as served all social and family relations and ties/relationship with him because he is not in my client's control and any person dealing with his said son with respect to the above-mentioned property/ properties shall be doing so on his/her own risk. That my client will not be responsible for the acts, deeds and things done by his son moreover my client has nothing to do with the liabilities of his said son
MOHD. AKRAM (Advocate)
CH. NO.: X-48A CIVIL WING
TIS HAZARI COURT, DELHI-110054

PUBLIC NOTICE
Be it known to the public at large that my client SMT. VEENA KHURANA W/o late sh. Sushil Khurana r/o 79, Cottage Enclave, A4 Block, Paschim Vihar, New Delhi 110063, has disowned his son namely Deepanshu Khurana S/o Late Sh. Sushil Khurana R/o 79, First Floor, Cottage Enclave, A4 Block, Paschim Vihar, New Delhi 110063, he and his wife and their daughter present and /or future from his entire movable & immovable properties acquired or to be acquired in future by my client named above. My client named above has also served all her relations with above named Son and daughter-in-law on account of their impertinent, disrespectful, in disciplined and threatful behavior amounting to his unbecoming of a son & daughter in law of my client to the extent of endangering his lives, limb, property, self-respect and mental peace. If anyone deals with the above-named son & daughter-in-law of my client henceforth, shall be doing so at one's own risk & responsibility and my client shall not be responsible for their any act/ deed/thing etc.
MANISH KUMAR SINGH (Advocate)
Ch.No. 534-A, Western-Wing, Tis-Hazari Court, Delhi-110054

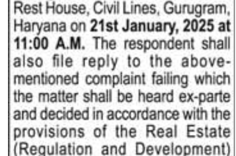

PUBLIC NOTICE
Before the Haryana Real Estate Regulatory Authority Gurugram New PWD Rest House, Civil Lines, Gurugram, Haryana (Proclamation notice under Section 31 of the Real Estate (Regulation and Development) Act, 2016 r/w rule 27 of the Haryana Real Estate (Regulation and Development) Rules, 2017) for appearance & filing reply)
1. **Complaint No. :** CR/2451/2023 **Complainant Name :** Ranjeet Kumar, **Respondent Name :** ABW Infrastructure Limited, **Next date of hearing and time** 21.01.2025 at 11:00A.M.
To, Whereas the above titled complaint has been filed against the respondent i.e., ABW Infrastructure Limited by the complainant and this Authority is satisfied that there is reason to believe that the respondent is avoiding service of notice and this authority is further satisfied that the notice cannot be served in the ordinary way of service at the available addresses. Hence, this proclamation is hereby Issued against the respondent to appear in the above titled cases personally or through any authorised counsel before **The Real Estate Regulatory Authority, Gurugram** situated at New PWD Rest House, Civil Lines, Gurugram, Haryana on **21st January, 2025 at 11:00 A.M.** The respondent shall also file reply to the above-mentioned complaint failing which the matter shall be heard ex-parte and decided in accordance with the provisions of the Real Estate (Regulation and Development) Act, 2016 and the Rules and Regulations made there under.
Assistant Registrar
Real Estate Regulatory Authority
Gurugram

कोर्ट नोटिस

PROCLAMATION REQUIRING ATTENDANCE OF DEFENDANT (ORDER 5, rule 20 of the Code of Civil Procedure)
In the court of Ms. Shagun Sharma
District Judge-12 (Central)
Court Room No. 156, First Floor, Tis Hazari Courts, Delhi
Case No. DJ / 180/2023
Hari Singh
Versus
To, **Asha & Ors.**
1. Shivani @ Munni
W/o Shri Nand Lal
R/o B-76, Shaheed Nagar, Chikamberpur, Ghaziabad, U-P-201006
The Defendant above named
WHEREAS you are intentionally evading service of summons it is hereby notified that if you shall not defend the case on the **11-02-2025** the day fixed for the final disposal, it will be heard and determined ex-parte. GIVEN under my hand and the seal of this Court on this 11-12-2024.
Sd/
District Judge-12 (Central)
Seal Tis Hazari Courts, Delhi

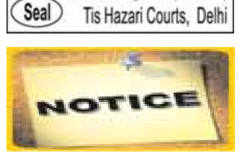

COURT NOTICE
(U/o 5 Rule 20 CPC)
IN THE COURT OF
MS. MANJOT KAUR
Civil Judge (Junior Division), Gurugram
JULLUNDUR MOTOR AGENCY (DELHI) LTD
Vs.
M/S JIYAMAU AUTOMOBILES
CNR No.HRGR02-000947-2022
Next Date:-21-01-2025
Publication Issued To:
1: M/s Jiyamau Automobiles
2: Mr Shyam Yadav Proprietor M/s Jiyamau Automobiles Both R/o 226 Jiyamau Hazaratganj Lohia Path Road Lucknow 226001
In above titled case, the defendant(s)/respondent(s) could not be served. It is ordered that defendant(s)/respondent(s) should appear in person or through counsel on **21-01-2025** at **10:00 a.m.**
For details logon to https://highcourtchd.gov.in/?trs=district_notice&district=Gurugarm
MS. MANJOT KAUR
Civil Judge (Junior Division)
Gurugram
Dated, this day of 19-12-2024

कोर्ट नोटिस

COURT NOTICE
(U/o 5 Rule 20 CPC) {UNDER GUARDIAN AND WARD ACT}
IN THE COURT OF Sh. Amit Gautam Civil Judge (Senior Division), Gurugram
SUSHILA
Vs.
GENERAL PUBLIC
CNR NO. HRGR02-005654-2024
Next Date :- 23.01.2025
NOTICE TO : GENERAL PUBLIC : AT LARGE
In above titled case, the defendant(s)/ respondent(s) could not be served. It is ordered that defendant(s)/ respondent(s) should appear in person or through counsel on **23.01.2025 at 10:00 a.m.** For details logon to https://highcourtchd.gov.in/?trs=district notice & district=Gurugram
-Sd./-Civil Judge (Senior Division)
Seal Gurugram
Dated this day of 20.12.2024

COURT NOTICE
(U/o 5 Rule 20 CPC) IN THE COURT OF Ms. Manjot Kaur Civil Judge (Junior Division), Gurugram
NIRMAL AND ORS
Vs.
GENERAL PUBLIC AND ANR
CNR NO. HRGR02-004361-2024
Next Date :- 23.01.2025
CS-2897-2024
PUBLICATION ISSUED TO : GENERAL PUBLIC AND ANR :- GURUGRAM
In above titled case, the defendant(s)/ respondent(s) could not be served. It is ordered that defendant(s)/ respondent(s) should appear in person or through counsel on **23.01.2025 at 10:00 a.m.** For details logon to https://highcourtchd.gov.in/?trs=district notice & district=Gurugram
-Sd./-Civil Judge (Junior Division)
Seal Gurugram
Dated this day of 18.12.2024

अपने विज्ञापन के लिए चुनिए सही शीर्षक
डिटेक्टिव सर्विस
पासपोर्ट/वीजा
पैकर्स एण्ड मूवर्स
विज्ञापन संबंधी
कैटरर्स
कूरियर
कंसलटेंसी
विविध सेवाएँ
इंटीरियर डेकोरेशन
पैस्ट कन्ट्रोल
कानूनी
वास्तु
ज्योतिष
ब्यूटी पार्लर
हैल्थ क्लब
चिकित्सा
रेकी
टूर एण्ड ट्रैवल्स
एस.टी.डी./पी.सी.ओ.
रजिस्ट्रेशन/ट्रेडमार्क
रेफ्रीजरेशन
एयरकंडीशनिंग

किराए के 400 रुपये मांगने पर कैब चालक की निर्मम हत्या

युवक पर चाकू से किए वार, खून से लथपथ पुलिस बूथ पर पहुंचा युवक, उपचार के दौरान मौत

पूर्वी दिल्ली, (पंजाब केसरी): नॉर्थ-ईस्ट डिस्ट्रिक्ट के सोनिया विहार इलाके में किराए के 400 रुपये को लेकर हुए विवाद में कुछ लोगों ने एक कैब चालक पर चाकू से ताबड़तोड़ हमला कर दिया।

मृतक संदीप

घायल खून से लथपथ हालत में पास के पुलिस बूथ पर पहुंचा। युवक को खून से लथपथ देखकर पुलिस उसे लेकर अस्पताल गई, यहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। मृतक की पहचान संदीप (27) के रूप में हुई है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया है। पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर दो आरोपियों को हिरासत में लिया है। पुलिस दोनों आरोपियों से पूछताछ कर मामले की छानबीन कर रही है। पुलिस के मुताबिक संदीप मूल रूप से गांव प्योली महोबा, इटावा का रहने वाला था। दिल्ली में वह अपने चाचा के साथ आई ब्लॉक, जहांगीरपुरी

में रहता था। परिवार में पत्नी पूजा, पिता प्रमोद और एक भाई छोटू है। गत 18 दिसंबर को वह सवारी लेकर खोड़ा कॉलोनी से सोनिया विहार आया था। यात्रियों को उतारने के बाद वह उनसे किराए के 400 रुपये मांगने लगा। पैसों को लेकर उनके बीच विवाद हो गया। विवाद के दौरान आरोपियों ने उसके सिर व पेट पर चाकू से ताबड़तोड़ हमला कर दिया। युवक के खून से लथपथ होने के बाद आरोपी मौके से फरार हो गए। घायल अवस्था में युवक नजदीकी पुलिस बूथ के पास पहुंचा और सारी बात पुलिस को बताई। पुलिस उसे लेकर अस्पताल गई, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर दो लोगों को हिरासत में लिया है।

उधार के पैसे न देने पर मां को दी धमकी, दोस्तों संग मिलकर की हत्या

पश्चिमी दिल्ली, (पंजाब केसरी): नरेला में एक शख्स की चाकू मार कर हत्या कर दी गई। मृतक की पहचान हिमांशु के रूप में हुई है। पुलिस ने उसके शव को पोस्टमार्टम के अस्पताल में भेज दिया है। पुलिस की जांच में पता चला कि हिमांशु की चाकुओं से गोदकर हत्या की गई थी। पुलिस ने इस मामले में चार लोगों को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान यश, रवि, राहुल और आशीष के रूप में हुई है। पुलिस ने पूछताछ शुरू की तो पता चला कि हिमांशु पिछले चार महीने से सुमित कौशिक नाम के शख्स के साथ फ्लैट में रह रहा था। रवि ने सुमित से जबरन 45,000 उधार लिए थे।

बीजेपी दफ्तर के बाहर लावारिस बैग मिलने से हड़कंप

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दिल्ली में शुक्रवार सुबह भाजपा दफ्तर के बाहर एक लावारिस बैग मिलने से हड़कंप मच गया। सूचना पर पुलिस अधिकारियों ने तुरंत कार्रवाई की और इलाके की घेराबंदी कर बैग को जब्त कर लिया। बैग 6ए, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग पर मिला था। तलाशी में पता चला कि यह किसी कैमरामैन का था। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि पंडित पंत मार्ग स्थित भारतीय जनता पार्टी के कार्यालय में दोपहर को पुलिस स्टिकर लगा एक लावारिस बैग पड़ा मिला। कार्यालय के मुख्य प्रवेश द्वार के पास बैग पड़ा हुआ था। कर्मचारियों द्वारा सूचित किए जाने पर पुलिस ने क्षेत्र की घेराबंदी कर दी। अधिकारी ने बताया कि बाद में एक मीडियाकर्मी मौके पर पहुंचा और दावा किया कि बैग उसका है।

महिला शौचालय में खिड़की से वीडियो बना रहा था सफाईकर्मी, खुला राज

दक्षिणी दिल्ली, (पंजाब केसरी): द्वारका डिस्ट्रिक्ट के जाफरपुर कलां इलाके में स्थित राव तुलाराम स्मारक अस्पताल में महिला शौचालय में खिड़की से वीडियो बनाने का मामला सामने आया है। वीडियो बनाने के दौरान अचानक ही फोन की घंटी बच गई और शौचालय में मौजूद महिला ट्रेनी डॉक्टर को इसके बारे में पता चला गया। इसके बाद खबर आग की तरह पूरे अस्पताल में फैल गई। मौके पर मौजूद लोगों ने आरोपी को पकड़ लिया और उसकी जमकर पिटाई की। इसके बाद मामले की सूचना पुलिस को दी गई। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। उसकी उम्र करीब 19-20 वर्ष बताई जा रही है। पुलिस ने आरोपी का फोन भी जब्त कर एफएसएल में भेज दिया है। पुलिस पकड़े गए आरोपी से पूछताछ कर मामले की छानबीन कर रही है।

शौचालय के बाहर मौजूद था आरोपी
पुलिस अधिकारी ने बताया कि वीडियो बनाने के दौरान आरोपी शौचालय के बाहर मौजूद था। उसने खिड़की (रोशनदान) से हाथ अंदर डाला और वीडियो बनानी शुरू कर दी। कुछ सेकंड की वीडियो बनी और अचानक ही फोन की घंटी बज गई।

डीसीपी अंकित सिंह ने बताया कि गुरुवार दोपहर करीब 12.30 बजे जाफरपुर कला थाना पुलिस को राव तुलाराम स्मारक अस्पताल से महिला शौचालय में वीडियो बनाने वाले को पकड़ने के बारे में पीसीआर कॉल मिली। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंच गई। मौके पर पहुंची पुलिस को पता चला कि आरोपी शौचालय में बनी एक खिड़की से हाथ अंदर डालकर फोन से वीडियो बना रहा था। इसी दौरान फोन की घंटी बच गई और शौचालय में मौजूद ट्रेनी डॉक्टर को वीडियो बनाने के बारे में पता चल गया। इसके बाद लोगों ने उसकी जमकर पिटाई कर दी। पुलिस ने आरोपी को पकड़ लिया और उसका फोन जब्त कर लिया। जांच में पुलिस को पता चला कि आरोपी ने एक माह पूर्व ही अस्पताल में सफाई कर्मचारी के तौर पर ज्वाइन किया था। पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि पूछताछ के दौरान आरोपी ने खुलासा किया कि वह पहली बार ही वीडियो बना रहा था और वह पकड़ा गया। मोबाइल को जांच के लिए भेज दिया गया है। इसके बाद ही फोन में कोई और वीडियो है या नहीं इसका पता चल सकेगा।

ईमेल से दिल्ली में फिर कई स्कूलों को बम से उड़ाने की मिली धमकी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दिल्ली के कई स्कूलों को शुक्रवार को एक बार फिर से बम से उड़ाने की धमकी भरे ईमेल मिले। मामले की सूचना मिलते ही मौके पर डॉग व बम स्क्वॉड, दमकल विभाग और पुलिस टीम पहुंच गई। सुरक्षाकर्मियों ने स्कूलों में तलाशी अभियान चलाया, लेकिन कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। इसके बाद इसको हॉक्स कॉल करार कर दिया गया। पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि पिछले 11 दिन में यह छठी घटना है। साइबर थाना पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

दिल्ली विभाग के अधिकारी ने बताया कि द्वारका सेक्टर-23 स्थित डीपीएस (दिल्ली पब्लिक स्कूल) से बम की धमकी के बारे में सुबह 05.02 बजे सूचना मिली। मामले की जानकारी मिलते ही मौके पर डॉग व बम स्क्वॉड, दमकल विभाग व पुलिस टीम पहुंच गई। टीमों ने तलाशी अभियान चलाया, लेकिन कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। अधिकारी ने बताया कि द्वारका के लगभग पांच स्कूल के साथ-साथ अन्य जिलों के कुछ स्कूलों को भी इसी प्रकार के धमकी भरे ईमेल मिले हैं। उन्होंने कहा कि कुछ स्थानों पर छात्रों को स्कूल नहीं आने के लिए कहा गया, जबकि अन्य ने धमकी मिलने के बाद ऑनलाइन कक्षाएं शुरू कर दीं। पिछले 11 दिन में यह छठी बार है जब राष्ट्रीय राजधानी के स्कूलों को ऐसी धमकियां मिली हैं।

शिक्षकों ने एलजी के साथ की राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर चर्चा

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): एलजी वीके सक्सेना ने 'संवाद' कार्यक्रम के तहत शुक्रवार को दिल्ली के 5 हजार निजी स्कूलों के 500 शिक्षकों व प्रिंसिपलों के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) सहित छात्र हित व उनकी सुरक्षा से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। एलजी ने एक्स पर इसकी जानकारी साझा की। उन्होंने कहा कि इस दौरान एनईपी के कार्यान्वयन में चुनौतियों, छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य, टीचर ट्रेनिंग, सरकारी उदासीनता, परिवहन और बुनियादी ढांचे की बाधाओं जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई।

पूर्व रेलवे
ई-निविदा सूचना सं.: ईएलडी-300-डब्ल्यूसी-22-2024-25, दिनांक 18.12.2024, वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियंता/कर्षण वितरण, सियालदह, पूर्व रेलवे, कंट्रोल बिल्डिंग, प्रथम तल, डीआरएम कार्यालय, काइजर स्ट्रीट, सियालदह, कोलकाता-700014 द्वारा निम्नलिखित कार्य के लिए ई-निविदा आमंत्रित की जाती है: **निविदा सं. : ईएलडी-300-डब्ल्यूसी-22-2024-25, कार्य का नाम :** "सियालदह-बारुईपुर जं.-सियालदह-बारुईपुर शाखा में ओएचई का पुनःस्थापन" के सिलसिले में 25 केवी ओएचई और संबंधित विद्युत कार्य। **निविदा मूल्य :** रु.22,65,54,127/-, **निविदा कागजात का मूल्य:** शून्य। **बयाना राशि :** रु.12,82,800/-, **समापन अवधि :** स्वीकृति पत्र जारी होने की तिथि से 24 (चौबीस) माह। **अंतिम तिथि :** दिनांक 20.01.2025 को 15.00 बजे। निविदा सूचना एवं समय-समय पर जारी संशोधनी का विवरण वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है।
SDAH-281/2024-25
निविदा सूचना वेबसाइट www.er.indianrailways.gov.in/www.ireps.gov.in पर भी उपलब्ध है
हमें यहाँ देखें : @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

एयरपोर्ट पर यात्री के बैग से संदिग्ध जीपीएस डिवाइस बरामद, गिरफ्तार

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर सुरक्षा जांच के दौरान सीआईएसएफ ने एक यात्री के बैग से दो संदिग्ध जीपीएस डिवाइस बरामद किए। यह घटना टर्मिनल-3 के प्री-इंबार्केशन सिक्योरिटी चेक प्वाइंट की है, जहां हैंड बैग्स की नियमित स्केनिंग की जा रही थी। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि सीआईएसएफ के स्क्रीनर सब इंस्पेक्टर रजनीश चौधरी ने एक्सरे स्क्रीन पर एक बैग की संदिग्ध छवि देखी। उन्होंने तुरंत बैग को अलग कर उसकी फिजिकल जांच शुरू की। जांच के दौरान बैग में दो डिवाइस बरामद हुए, जो जीपीएस उपकरण थे। ब्यूरो ऑफ सिविल एविएशन सिक्योरिटीज (बीसीएएस) के मैनुअल के अनुसार हवाई यात्रा के दौरान फ्लाइट में जीपीएस डिवाइस ले जाना प्रतिबंधित है। यात्री जिसकी पहचान अरविंद टक्कलपल्ली के रूप में हुई है, संतोषजनक जवाब देने में असमर्थ रहा। सीआईएसएफ ने यात्री को एयरपोर्ट पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस ने टेली कम्यूनिकेशन एक्ट की धारा-42 (2) (डी) के तहत एफआईआर दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
!!! सावधानः फर्जी भर्ती से सावधान रहें !!!
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (भा.वि.प्रा.) को यह रिपोर्ट किया गया है कि बेईमान लोगों/धोखेबाजों/दलालों/एजेंटों ने अपनी झूठी आईडी बनाकर खुद को भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के भर्तीकर्ता के रूप में प्रस्तुत करके भा.वि. प्रा. में लुभावने करियर हेतु फर्जी नौकरी के अवसरों की फर्जी भर्ती नोटिस/ संदेश/मोबाइल फोन कॉल के माध्यम से संभावित अभ्यर्थियों को धोखा देने की कोशिश की है।
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण संभावित नौकरी चाहने वालों से आग्रह करता है कि वे किसी अन्य वेबसाइट के बजाय, एएआई वेबसाइट www.aai.aero के करियर खंड पर ही भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण में नौकरी के विज्ञापन/संदेश/कॉल लेटर/नियुक्ति पत्र की प्रामाणिकता की पुष्टि करते हुए सतर्कता और समुचित सावधानी बरतें।
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण में भर्ती से संबंधित सभी विवरण जैसे विस्तृत विज्ञापन, आवेदन सत्यापन/साक्षात्कार कार्यक्रम, अंतिम परिणाम आदि भा.वि. प्रा. की आधिकारिक वेबसाइट www.aai.aero पर प्रकाशित किए जाते हैं।
आवेदन शुल्क केवल ऑनलाइन आवेदन जमा करते समय देय है, जिसका विज्ञापन में स्पष्ट उल्लेख किया जाता है और यह केवल अनारक्षित और ओबीसी (एनसीएल) श्रेणियों से संबंधित पुरुष उम्मीदवारों द्वारा देय है। भा.वि.प्रा. द्वारा भर्ती के किसी भी चरण में किसी भी प्रकार का अन्य भुगतान नहीं मांगा जाता है।
ऐसे बेईमान लोगों/एजेंटों/संदेशों/मोबाइल फोन कॉल से लेन-देन करने वाला कोई भी व्यक्ति ऐसा अपने व्यक्तिगत जोखिम और लागत पर करेगा। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण किसी भी प्रकार से इसके परिणामों के लिए उत्तरदायी नहीं होगा।
यदि कोई भी व्यक्ति इस तरह की धोखाधड़ी/फर्जी भर्ती रैकेट का शिकार हो जाता है, तो उन्हें स्थानीय पुलिस स्टेशन में धोखेबाजों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने की सलाह दी जाती है।
एनआईटी सं.-03/2024-25 **कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)**
CBC 03111/12/0003/2425

ऑपरेशन मिलाप: 311 लापता लोगों को अपनों से मिलाया

पूर्वी दिल्ली, (पंजाब केसरी): शाहदरा डिस्ट्रिक्ट पुलिस ने ऑपरेशन मिलाप के दौरान अपनों से जुदा हुए लोगों को तलाश कर उनकी आंखों के तारों को वापस लौटाया। अपनों से मिलने के बाद परिजन खाफी खुश है और पुलिस का धन्यवाद करते हुए नहीं थक रहे थे। डीसीपी प्रशांत गौतम ने बताया कि अभियान के तहत 118 नाबालिग लड़कियों, 86 नाबालिग लड़कों और 107 वयस्कों सहित 311 व्यक्तियों को बचाया गया। तलाशे गए लोगों में 183 शाहदरा, 128 दिल्ली के अन्य जिलों और देश के अन्य हिस्सों से हैं। दिल्ली से 274 लोगों को बचाया गया।

e-Procurement Cell
Executive Engineer, National Rural Employment Programme, Ranchi
JHARKHAND, RANCHI
Very Short Term e-Procurement Notice
Tender Reference No.44/2024-25

Sl. No	Name of Scheme	Estimated Amount (Lacs)	Earnest Money (Lacs)	BoQ Cost	Scheme Completion Date	Tools & Plant
1	Proposed Construction of Scheduled Tribe Residential Middle School at Amanburu, Bundu	29456900.00	600000.00	10000.00	18 Month	कार्य के अनुरूप

3	Date of Publication of Tender on Website	21.12.2024 at 11:00 AM
4	Start Date of Submission of Bids	21.12.2024 at 1:00 PM
5	Last Date/Time of Submission of Bids	28.12.2024 at 11:00 AM
6	Date/Time of opening of Bid	30.12.2024 at 2:00 PM
7	Name & Address of office Inviting tender e-Procurement Cell,	National Rural Employment Programme, Ranchi.
8	Helpline Number of e-procurement Cell	94727-45569

Any change can be seen on Website http:// Jharkhandtenders.gov.in.
Any other information can be seen on http:// Jharkhandtenders.gov.in.
Nodal Officer
e-Procurement Cell
Executive Engineer, National Rural Employment Programme, Ranchi
PR 342492 NREP(24-25).D

दिल्ली में बड़ा बदलाव सुबह-शाम के साथ दोपहर में भी ठंडी हवाएं बढ़ा रही कंपकपी, शाम ढलने से पहले ही छाया कुहासा

कोहरे और बारिश का होगा डबल अटैक

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): राष्ट्रीय राजधानी में मौसम को लेकर बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है। कोहरे व धुंध की मार लोगों पर पड़ रही है। सुबह-शाम के साथ दोपहर में भी ठंडी हवाएं कंपकपी बढ़ा रही हैं। शुक्रवार को दिल्ली में न्यूनतम तापमान सामान्य से एक डिग्री कम 7.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। पूसा में न्यूनतम तापमान अन्य केंद्र के मुताबिक सबसे कम दर्ज किया गया। यहां न्यूनतम तापमान 6.9 डिग्री सेल्सियस रहा। वहीं आया नगर में 7.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। शुक्रवार को लोगों को अच्छी-खासी ठंड का अहसास हुआ। दिन के समय कुछ देर के लिए सूरज के दर्शन हुए, लेकिन शाम ढलने से पहले ही कुहासा सा छा गया। हालांकि शाम होते ही ठंडी हवाओं ने ठंडक का अहसास कराया। ऐसे में दिन का तापमान सामान्य से एक डिग्री अधिक के साथ 23.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

वहीं सुबह साढ़े सात बजे से आठ बजे तक सफदरजंग एयरपोर्ट में दृश्यता 300 मीटर दर्ज की गई, जबकि पालम में 700 मीटर दृश्यता रही। सुबह कोहरे और धुंध का असर देखने को मिला। इससे सबसे अधिक परेशानी वाहन चालकों को हो रही है। ट्रैफिक जाम का भी लोगों को सामना करना पड़ रहा है।

पश्चिमी विक्षोभ से बदलेगा मौसम का मिजाज

दिल्ली में ठंड बढ़ गई है। कई इलाकों में तापमान 5 डिग्री से भी नीचे पहुंच गया है। घने कोहरे के चलते भी लोगों को काफी परेशानी हो रही है। इस बीच दिल्लीवालों को बारिश और कोहरे का डबल अटैक झेलना पड़ सकता है। दरअसल मौसम विभाग ने अगले सात दिनों का हाल बताया है जिसमें बारिश के साथ-साथ कोहरे का येलो अलर्ट भी जारी किया गया है। अगले 12 घंटों में पश्चिम मध्य खाड़ी के ऊपर एक डिप्रेशन तीव्र हो जाएगा। वर्तमान में 70 डिग्री पूर्व से 25 डिग्री उत्तर में एक पश्चिमी विक्षोभ है। मौसम विभाग ने दो दिन के लिए घने से घने कोहरे का येलो अलर्ट जारी किया है। शनिवार को कुछ स्थानों पर सुबह स्मॉग और घने से घना कोहरा रहने की संभावना है। शाम व रात में धुंध का अनुमान है। ऐसे में अधिकतम और न्यूनतम तापमान क्रमशः 23 और आठ डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने का अनुमान है।

दिल्ली में प्रदूषण खतरनाक स्तर पर बरकरार, एक्यूआई पहुंचा 400 पार

औसतन वायु गुणवत्ता सूचकांक 434 दर्ज

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में एक बार फिर से प्रदूषण अपने खतरनाक स्तर पर पहुंच चुका है। आम लोगों का सांस लेना तक दूभर हो गया है। लोग घरों से मास्क लगाकर बाहर निकल रहे हैं। केंद्रीय प्रदूषण एवं नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार राजधानी दिल्ली में शुक्रवार सुबह 8:30 बजे तक औसतन वायु गुणवत्ता सूचकांक 434 अंक बना हुआ है, जबकि दिल्ली-एनसीआर के शहर फरीदाबाद में एक लेवल 255, गुरुग्राम में 348, गाजियाबाद में 336, ग्रेटर नोएडा में 276 और नोएडा में 342 अंक बना हुआ है। दिल्ली के अधिकतर इलाकों में एएक्यूआई लेवल 400 से ऊपर और 500 के बीच में बना हुआ है। अलीपुर में 423, आनंद विहार में 456, अशोक विहार में 455, आया नगर में 425, बवाना में 465, बुराड़ी क्रॉसिंग में 439, मथुरा रोड में 450, डॉक्टर करणी सिंह शूटिंग रेंज में 445, डीटीयू में 412, द्वारका सेक्टर-8 में 457, आईटीओ में 456 और जहांगीरपुरी में 440 बना हुआ है।

नर्सरी में दाखिले की प्रक्रिया पूरी पहली सूची 17 को होगी जारी

तीन फरवरी को जारी होगी दूसरी सूची

- *शिक्षा निदेशालय ने एक जनवरी 2025 तक चयनित आवेदकों का विवरण अपलोड करने का दिया निर्देश*

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दिल्ली के करीब 1,741 निजी स्कूलों में शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए नर्सरी में दाखिले की प्रक्रिया शुक्रवार को संपन्न हो गई। दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशालय (डीओई) ने 12 नवंबर को एक परिपत्र में घोषणा की थी कि पंजीकरण फॉर्म जमा करने की अंतिम तिथि 20 दिसंबर है। पहली सामान्य दाखिला सूची 17 जनवरी 2025 को प्रकाशित की जाएगी। एक स्कूल के अध्यक्ष ने बताया कि स्कूल को नर्सरी में दाखिले के लिए लगभग 1,000 पंजीकरण प्राप्त हुए हैं।

शिक्षा निदेशालय ने स्कूलों को एक जनवरी 2025 तक सभी चयनित आवेदकों का विवरण अपलोड करने का निर्देश दिया है। वहीं एक स्कूल की प्राचार्य ने बताया कि हमें इस वर्ष नर्सरी के लिए लगभग 3,600 आवेदन प्राप्त हुए हैं, जो पिछले वर्षों की तुलना में काफी अधिक हैं। निजी स्कूलों को अपनी 25 प्रतिशत सीटें आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस), वंचित समूह (डीजी) और विकलांग बच्चों के लिए आरक्षित रखना अनिवार्य है। परिपत्र के अनुसार इन श्रेणियों के लिए अलग-अलग प्रवेश सूचियां प्रकाशित की जाएंगी। शिक्षा निदेशालय ने दाखिले के लिए न्यूनतम और अधिकतम आयु सीमा भी निर्धारित कर दी है। नर्सरी के लिए बच्चों की आयु 31 मार्च 2025 तक कम से कम तीन वर्ष, केजी के लिए चार वर्ष तथा कक्षा एक के लिए पांच वर्ष होनी चाहिए। नर्सरी के लिए अधिकतम आयु सीमा चार वर्ष से कम, केजी के लिए पांच वर्ष से कम तथा कक्षा एक के लिए छह वर्ष से कम है। चयनित छात्रों की दूसरी सूची आवंटित अंकों के साथ तीन फरवरी 2025 को जारी की जाएगी। इन स्कूलों में दाखिला प्रक्रिया 14 फरवरी को समाप्त हो जाएगी।

नवजात का शव मिला

पश्चिमी दिल्ली, (पंजाब केसरी): प्रेम नगर थाना पुलिस को छत पर एक नवजात के पड़े होने की सूचना मिली। सूचना पर पुलिस घटनास्थल पर पहुंची। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल में रखवा दिया है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि शव लड़की का है। पुलिस मामला दर्ज कर जाच कर रही है। पुलिस के मुताबिक शुक्रवार दोपहर करीब 12.12 बजे छत पर एक नवजात का शव पड़े होने की सूचना मिली थी।

छोले-भटूरे के 105 रुपए ने बढ़ाई दुकानदार की मुश्किल, हाईकोर्ट से मिली राहत

साइबर फ्राड से जुड़े होने के चलते बैंक ने लेन-देन पर लगा दी थी रोक

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): वैसे तो आजकल आए दिन साइबर फ्रॉड से जुड़े मामले सामने आते रहते हैं। लेकिन दिल्ली में एक ऐसा मामला सामने आया, जिसने हर किसी को हैरान कर दिया। दरअसल राजधानी के अशोक विहार में एक व्यक्ति ठेले पर छोले-भटूरे बेचता था। एक दिन उसके खाते में 105 रुपये आए। इसके बाद उसका खाता फ्रीज कर दिया गया। हालांकि अब शख्स को दिल्ली हाईकोर्ट से बड़ी राहत मिली है। हाईकोर्ट ने आजीविका के अधिकार का हवाला देते हुए बैंक से उस व्यक्ति के खाते से लेनदेन पर लगी रोक को हटाने का आदेश दिया है। दरअसल अशोक विहार में छोले भटूरे की स्टॉल लगाने वाले पवन कुमार राय पिछले दो माह से परेशान थे। वजह थी उनका बैंक अकाउंट फ्रीज होना। पवन कुमार को किसी ने 105 रुपये यूपीए के जरिए ट्रांसफर किए थे। पवन के स्टॉल पर तीन प्लेट छोले भटूरों की कीमत 105 रुपये है। इन्हीं 105 रुपये की ट्रांजेक्शन की वजह से पवन का बैंक अकाउंट फ्रीज कर दिया गया। क्योंकि इसकी वजह इस यूपीआई ट्रांजेक्शन का आंध्र प्रदेश में हुए 71,000 रुपये के एक साइबर फ्रॉड से जुड़ा होना था। हालांकि पवन कुमार को दिल्ली हाईकोर्ट ने राहत दी है। पवन के खाते में 105 रुपये की यूपीआई ट्रांजेक्शन किसने की, यह तो अभी पता नहीं चल सका है, लेकिन हाईकोर्ट ने यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को उनका बैंक अकाउंट अनफ्रीज करने के निर्देश दिए हैं ताकि वह अपना बिजनेस जारी रखने की स्थिति में हों और उनकी आजीविका के मूल्यवान अधिकार का कोई उल्लंघन न हो। हालांकि जस्टिस मनोज जैन की कोर्ट ने बैंक को आदेश दिया कि वह खाते में आए 105 रुपये को छोड़कर सामान्य रूप से खाता चालू कर दे। इस मामले को 17 दिसंबर के ऑर्डर में कहा गया है कि ये एक्शन याचिकाकर्ता के मूल अधिकार का उल्लंघन है, क्योंकि यह सीधे तौर पर उसके आजीविका के अधिकार को कमजोर करता है। आजीविका का अधिकार संविधान के आर्टिकल 21 के तहत गारंटीकृत जीवन के अधिकार का एक अभिन्न अंग है। इसके अलावा जब इन्वेस्टिगेशन एजेंसी ने याचिकाकर्ता के बैंक अकाउंट में जमा एक विशिष्ट राशि की पहचान की तो यह समझना मुश्किल है कि उसका पूरा बैंक अकाउंट क्यों फ्रीज किया गया है।

इंडिया एआई मिशन ने नवाचार को बढ़ावा देने के लिए मांगे प्रस्ताव

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): भारतीय शैक्षणिक और अनुसंधान एवं विकास संस्थानों, स्टार्टअप्स और कंपनियों के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करने में एआई की क्षमता का पता लगाने व नवाचार को बढ़ावा देने के लिए भारत एआई मिशन प्रस्ताव आमंत्रित किए है। इस संबंध में आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि नौ जनवरी है।

भारत सरकार ने इसी साल सात मार्च को इंडिया एआई मिशन की शुरुआत की थी, ताकि एआई में भारत को वैश्विक स्तर पर और मजबूत बनाया जा सके और समाज के सभी वर्गों में एआई के फायदे को पहुंचाया जा सके। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए इंडिया एआई मिशन ने घरेलू एआई इकोसिस्टम को मजबूत करने के लिए सात प्रमुख स्तंभ लॉन्च किए हैं। इस पहल के भीतर 'सुरक्षित और विश्वसनीय एआई' स्तंभ एआई शासन के लिए एक संतुलित, प्रौद्योगिकी-सक्षम और भारत-विशिष्ट दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर देता है।

अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों की पहचान पर चर्चा के लिए अहम बैठक

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दिल्ली में अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों की बढ़ती समस्या से निपटने और उनके प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए दिल्ली सरकार गृह विभाग ने ठोस रणनीति बनाई है। विभाग ने 12 दिसंबर को सुबह 10:30 बजे एक महत्वपूर्ण वीडियो कॉन्फ्रेंस (वीसी) बैठक आयोजित की। इस बैठक की अध्यक्षता प्रधान सचिव ने की, जिसमें नगर निगम दिल्ली (एमसीडी) के प्रतिनिधि, अतिरिक्त आयुक्त (मुख्यालय), और उप आयुक्त (मुख्यालय) उपस्थित रहे। बैठक के दौरान विभिन्न विभागों को स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए गए। दिल्ली नगर निगम द्वारा जारी निर्देश के अनुसार नगर निगम के स्कूलों में प्रवेश प्रक्रिया के दौरान अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों की पहचान सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए जाएंगे। स्कूलों में पढ़ रहे प्रवासी बच्चों की सत्यापन प्रक्रिया के लिए एक विशेष अभियान चलाने का आदेश दिया गया। इसके अलावा दिल्ली नगर निगम के सभी जोनल अधिकारियों को अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों द्वारा किए गए अतिक्रमण को तुरंत हटाने के निर्देश दिए गए।

पूर्वोत्तर रेलवे

खुली ई-निविदा सूचना

खुली ई-निविदा सूचना संख्या : SRDEE-TRD-IZN-2024-25-T15 Date - 18.12.2024,
भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिए वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर/टीआरडी, पूर्वोत्तर रेलवे, इज्जतनगर द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु "खुली" ई-निविदा आमंत्रित करते है।
कार्य का नाम : इज्जतनगर मण्डल में ब्रम्हावर्त, कन्नौज, फर्रुखाबाद, कासगंज एवं मेण्डू डिपो के विभिन्न खण्डों में 105 वर्ग मि.मि. आइसोलेटर बड़े जम्पर तार को 160 वर्ग मि.मि. कॉपर बड़े जम्पर तार से बदलना एवं कुछ आइसोलेटर्स को स्थानांतरित करने से संबंधित कार्य। टेंडर रिफरेंश नं. SRDEE-TRD-IZN-2024-25-T15, कार्य का अनुमानित लागत रूपया में: 91,05,242.40, अमानत राशि/बिड सिक्यूरिटी : 1,82,100.00, निविदा प्रपत्र का मूल्य रूपया में : 00, निविदा बंद होने की तिथि एवं समय : 13.01.2025, 11:00, कार्य पुरा करने की अवधि : 6 माह।
● खुली ई-निविदा दिनांक 13.01.2025 को 11:00 बजे तक जमा कर सकेंगे। ● पूर्ण विवरण जानने हेतु एवं निविदा की प्रस्तुति करने के लिए कृपया भारतीय रेलवे की वेबसाइट www.ireps.gov.in पर देखें।
वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर/टीआरडी/
मुजाधि/विद्युत – 199 **पूर्वोत्तर रेलवे, इज्जतनगर**
गाड़ियों की छतों व पायदान पर कदापि यात्रा न करें।

उ.प्र. पावर ट्रांसमिशन कारपोरेशन लि.

ई-निविदा सूचना :- इस कार्यालय के द्वारा निम्नलिखित कार्य के संपादन हेतु अनुभवी, दक्ष एवं वस्तु एवं सेवाकर में पंजीकृत ठेकेदारों से ई-निविदा दिनांक- 06.01.2025 को मध्यान्ह 12:00 बजे तक आमन्त्रित की जाती है। जिनका प्रथम भाग 14:00 बजे तथा द्वितीय भाग अगले दिन अधोहस्ताक्षरी द्वारा खोली जायेगी। अधोहस्ताक्षरकर्ता को समस्त निविदायें या उसके किसी भी अंश को बिना कारण बताये स्वीकार/ अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार सुरक्षित है। नियत तिथि पर अवकाश होने पर अगले कार्य दिवस पर निविदा प्रक्रिया सम्पन्न की जायेगी। निविदा प्रपत्र विद्युत पारेषण खण्ड-फतेहगढ़ के कार्यालय से निविदा खुलने से एक दिन पूर्व निविदा मूल्य अदा कर प्राप्त किये जा सकते हैं। जिसका विस्तृत विवरण ई-टेन्डर की वेबसाईट www.etender.up.nic.in पर उपलब्ध है। **क्र.सं.-1 निविदा संख्या-टी-09 वि०पा० ख० (फ)/2024-25, कार्य का विवरण-** विद्युत पारेषण खण्ड-फतेहगढ़ के अन्तर्गत 132 के.वी. उपकेन्द्र कायमगंज पर स्थापित 40 एम.वी.ए. परिवर्तक के ऑयल सेन्ट्रिफ्यूजिंग का कार्य। ई-निविदा की धरोहर धनराशि रु. 1000.00, निविदा मूल्य रु. 590.00 बिक्री कर सहित। **हस्ता./- अधिशासी अभियन्ता, विद्युत पारेषण खण्ड, फतेहगढ़।** "राष्ट्र हित में ऊर्जा बचायें"
पत्रांक : 5533 दिनांक 20.12.2924

CHiPS

Chhattisgarh InfoTech Promotion Society (CHiPS)
2th Floor SDC Building, Raipur, Chhattisgarh 492002
Phone: 0771-4014158 Fax : 0771-4014158 E-mail : ceochips@nic

TENDER NOTICE

No.163170/CEO/CHiPS/VTS/TPA/2024 Raipur, Dated/19/12/2024
Chhattisgarh Infotech Promotion Society (CHiPS), under Department of Information Technology, Govt. of CG invites technical and financial proposals from reputed Bidder for **"Selection of Third Party Auditor of System Integrator of State-wide Vehicle tracking system for State Government of Chhattisgarh "**
The document can be downloaded from the website www.chips.gov.in & www.eproc.cgstate.gov.in
S-42495/4 **CEO, CHiPS**

उत्तर रेलवे

ई-निविदा सूचना

वरिष्ठ मंडल वि. अभि./क. वि., डी. आर. एम. ऑफिस, स्टेट एंट्री रोड, नई दिल्ली भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्न कार्य हेतु खुली निविदायें आमंत्रित करते हैं।

1	**कार्य का नाम व स्थान :** दिल्ली मंडल पर डीएसडीसी ट्रेनों के संचालन के संबंध में आरओबी/एफओबी के तहत आवश्यक 25 केवी ओएचई संशोधन कार्य का डिजाइन, आपूर्ति, निर्माण, परीक्षण और कमीशनिंग।
2	**अनुमानित लागत :** रु. 2,37,26,550.04/-
3	**बयाना राशि :** रु. 2,68,600/-
4	**ई-निविदा ऑनलाइन जमा करने की अवधि :** 30.12.2024 (10.30 बजे) से 13.01.2025 (15.00 बजे तक)
5	**ई-निविदा समापन की अंतिम तथा ई-निविदा खुलने की तारीख और समय :** 13.01.2025 (15.00 बजे)
6	**निविदा छपाई की लागत :** Capital (PH-16)
7	**वेबसाइट विवरण जहां निविदा दस्तावेजों का पूरा विवरण देखा जा सकता है :** www.ireps.gov.in

सं.: 31B-क.वि.-नई दिल्ली-2024-25 दिनांक: 18.12.2024 **3897/2024**
ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

मध्य प्रदेश शासन, वन विभाग, नई दिल्ली
सागौन काष्ठ की नीलामी सूचना

म.प्र. शासन वन विभाग के कीर्तिनगर, नई दिल्ली स्थित टिम्बर डिपो में माह जनवरी-2025 में नीचे दर्शाई दिनांक को प्रातः 11.00 बजे से सागौन काष्ठ का नीलाम किया जाएगा। इस नीलाम में मध्य प्रदेश के विभिन्न वन मंडलों से प्राप्त भारत की सर्वश्रेष्ठ ''सी.पी. टीक'' के गोल लट्ठों का विक्रय किया जाएगा। नीलाम में छोटी-छोटी मात्रा के भी लॉट लगाए जाते हैं, जो भवन निर्माण, आंतरिक सज्जा या फर्नीचर के लिए उपयुक्त हैं। बड़ी मात्रा में क्रय करने के इच्छुक व्यापारियों के लिए भी पर्याप्त अवसर हैं।

डिपो का नाम	वनोपज की अनुमानित मात्रा	वनोपज का अनुमानित मूल्य	नीलाम दिनांक एवं समय
मध्य प्रदेश टिम्बर डिपो सी-1, डब्ल्यूएचएस, न्यू टिम्बर मार्केट, नए थाने के पीछे, कीर्तिनगर, नई दिल्ली-110015	सागौन काष्ठ के गोल लट्ठे घ.मी. = **400** (लगभग)	अवरोध मूल्य रु. = **7,10,00,000.** (सात करोड़, दस लाख)	**06.01.2025 (सोमवार)** 11.00 प्रातः

अधिक जानकारी के लिए दूरभाष क्रमांक :- 011-25939685, 8077873394 (डिपो कार्यालय) से कार्यालयीन समय में सम्पर्क किया जा सकता है। क्रेता अपना पेन-कार्ड तथा पते के पुष्टिकरण अभिलेख नीलाम के दिन प्रातः 10.00 बजे आवश्यक रूप से रजिस्ट्रेशन एवं अन्य औपचारिकताओं की पूर्ति हेतु साथ लाएं।

हस्ता./- अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (जन सम्पर्क एवं विक्रय),
विक्रय डिपो, मध्य प्रदेश शासन वन विभाग, नई दिल्ली
G-20530/24
जहर स्वयं पीते हैं, लेकिन हमको अमृत देते वन

दिल्ली की हलचल

चार माह से बंद पड़ा आधार सेवा केंद्र

पश्चिमी दिल्ली, (पंजाब केसरी): कंझावला डीएम ऑफिस में पिछले चार महीने से आधार सेवा केंद्र पर ताला लटका हुआ है। ग्रामीणों का कहना है कि पिछले 10 वर्षों से यहां लोग आधार से जुड़ी सेवाओं का लाभ उठा रहे थे। अब लोगों को नौकरी से छुट्टी लेकर दूरदराज जाना पड़ता है। अपॉइंटमेंट के लिए लंबी-लंबी डेट मिलती है। इसकी शिकायत सदैव जन विकास जन कल्याण आरडब्ल्यूए ने डीएम नॉर्थ वेस्ट से की है। आरडब्ल्यूए सचिव सचिन ने बताया कि आधार सेवा केंद्र में आधार कार्ड में एड्रेस में बदलाव, फोन नंबर बदलना या जोड़ना या नए आधार से जुड़ी सेवाओं का लाभ इस सेंटर में मिल जाता था। लेकिन सेंटर बंद होने से यह सेवाएं ठप्प पड़ी है। डीएम को लिखी शिकायत में मांग है कि चार महीने से बंद पड़े आधार सेवा केंद्र को चालू किया जाए ताकि लोगों को आधार सेवा के लिए दूर दराज नहीं जाना पड़े।

अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया

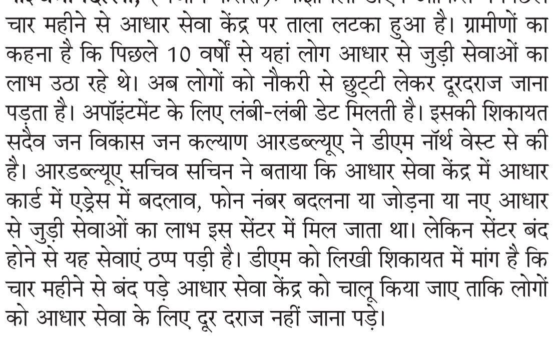

पश्चिमी दिल्ली, (पंजाब केसरी): जहांगीरपुरी में बुधवार को दिल्ली नगर निगम द्वारा अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया गया। जिसमें इलाके में अस्थाई रूप से बने दो कमरों को तोड़ा गया। इसके अलावा कई रिक्शा, बैटरी रिक्शा और रेहड़ी आदि जब्त की गई। यह कार्रवाई सिविल लाईन जोन के उपायुक्त राकेश कुमार, सहायक आयुक्त स्वधनील सिंह ठाकुर के नेतृत्व में की गई। उपायुक्त सिविल जोन ने बताया कि पूर्व में भी अवैध अतिक्रमण के खिलाफ कार्रवाई की गई हैं और आगे भी की जाएगी और उन्होंने कहा कि निगमायुक्त के निर्देश है कि जनता की भलाई के लिए कार्य किया जाए और अवैध अतिक्रमण पर अंकुश लगाया जाए।

पुष्य नक्षत्र जातक को बनाता है धनवान

नई दिल्ली, (दिनेश शर्मा/पंजाब केसरी): दिल्ली व संपूर्ण भारत के अतिरिक्त विश्व के सभी देशों से सनातन धर्मी साधक महाकुंभ में डुबकी लगाने 13 जनवरी को आ रहे हैं। अधिकांश हिंदू दिल्ली में फ्लाइट से आकर अमृतस्थली की ओर प्रस्थान करेंगे। रेल के अतिरिक्त अन्य वाहनों की मदद ली जाएगी। खास खबर यह है कि ज्योतिष, योग, संस्कृत व हिंदू संस्कृति पर गहन चर्चा होगी। वास्तु सलाह और ज्योतिष के ज्ञान पर दिल्ली, काशी, हरिद्वार, ऋषिकेश, अयोध्या सहित अनेक शहरों में मंथन चल रहा है। चमत्कारिक 27 नक्षत्रो पर विशेष चर्चा में ज्योतिषी भाग ले रहे हैं। धन की वर्षा करने में दक्ष पुष्य नक्षत्र पर खास तवज्जो दी गई।

कार्यालय वसूली अधिकारी
ऋण वसूली अधिकरण-I, दिल्ली
चौथी मंजिल, जीवन तारा बिल्डिंग, संसद मार्ग, नई दिल्ली-110001

बिक्री उद्घोषणा

T.R.C. No. 1324/2022

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया बनाम बबिता और पंकज कुमार

बिक्री की उद्घोषणा अन्तर्गत आयकर अधिनियम 1961 की द्वितीय अनुसूची के नियम 38, 52(2) बैंक और वित्तीय संस्थान की ऋण वसूली अधिनियम 1993

(सीडी1) **बबिता,**
(सीडी2) **पंकज कुमार,** दोनों निवासी ए-62, एस-1, दिलशाद कॉलोनी, शिबाबाद, गाजियाबाद, यू.पी. – 201005
(सीडी3) **सुनील कुमार, (गारंटर),** निवासी ए-17, विश्वास पार्क एक्सटेंशन, दिल्ली-110059

1. जहां पर पीठासीन अधिकारी, ऋण वसूली अधिकरण-I द्वारा **T. R. C. No. 1324/2022, ओ ए सं 37/2017** के द्वारा वसूली प्रमाणपत्र के अनुसार वाद के शुरुआत से रु. **30,97,789.00, साथ में ओ ए की फाईलिंग की तिथि अर्थात 13.01.2017 से 10.65 प्रतिशत वार्षिक ब्याज वसूली प्रमाणपत्र के अनुसार,** साथ में लागत एवं प्रभार भी प्रमाणपत्र देनदार से वसूली किया जाएगा।
2. और जहां पर अधोहस्ताक्षर ने इस प्रमाणपत्र से संतुष्ट हो कर निम्नलिखितानुसार अनुसूची में संपत्ति की बिक्री का आदेश दिया है।
3. और जहां पर प्रतिवादी द्वारा रु. **30,97,789.00, साथ में ओ ए की फाईलिंग की तिथि अर्थात 13.01.2017 से 10.65 प्रतिशत वार्षिक ब्याज वसूली प्रमाणपत्र के अनुसार,** साथ में लागत एवं प्रभार भी प्रमाणपत्र देनदार की लागत का भुगतान भी करना होगा। सूचित किया जाता है कि स्थगन के किसी आदेश के आभाव मे सम्पति की ई-नीलामी वेबसाईट : **https://www.bankeauctions.com** पर "ऑन लाईन ईलेक्ट्रॉनिक बिडींग" के माध्यम से दिनांक **07.02.2025 को दोपहर 12.00 बजे से अप. 01.00 बजे तक** (अपाह 01.00 बजे के बाद 5 मिनट प्रत्येक की अवधि के विस्तार के साथ, यदि अपेक्षित है) किया जायेगा।
4. ई-नीलामी हेतु प्रस्तावित संपत्ति का विवरण इस प्रकार है

क्र. सं.	सम्पत्ति का विवरण	आरक्षित मूल्य	धरोहर राशि (ईएमडी)
1.	एचआईजी फ्लैट प्रा. नं. जी-1, भूतल (सामने की तरफ), संपत्ति नं. B-1/144, डीएलएफ दिलशाद एक्सटैंशन-2, गांव ब्रह्मपुर उर्फ भोपुरा, परगना लोनी, जिला गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश में स्थित	₹ 29,00,000/-	₹ 3,00,000/-

5. इच्छुक बोलीदाताओं को धरोहर राशि डी डी/पे आर्डर के रुप में जो कि **"Recovery Officer, DRT-I, Delhi-A/c (T.R.C No. 1324/2022** के पक्ष में दिल्ली में देयदेय हो स्व-प्रमाणित पहचान साक्ष्य (वोटर आई डी कार्ड/ड्राईविंग लाईसेंस/पासपोर्ट) और पैन कार्ड की स्व-प्रमाणित प्रति सहित, जिसमें पत्राचार का पता अंकित हो, जो वसूली अधिकारी, डीआरटी-I, दिल्ली के कार्यालय में दिनांक **04.02.2025** को अपाह 06.00 बजे से पहले जमा कराना होगा। धरोहर राशि इसके पश्चात नीलामी के लिए स्वीकार नही की जायेगी। असफल बोलीदाता ई-नीलामी बिक्री कार्यवाही बंद होने पर ई-नीलामी सेवा प्रदाता/बैंक/वित्तीय संस्थान से ऐसी रिपोर्ट प्राप्त होने के बाद सीधे रजिस्ट्री, डीआरटी-I, दिल्ली से ईएमडी वापिस लेगा।
6. धरोहर राशि वाले लिफाफे के उपर **"T.R.C No. 1324/2022"** अंकित होना चाहिए और साथ में बोलीदाता का ई-मेल आई डी और मोबाईल न. भी अंकित होना चाहिए।
7. इच्छुक बोलीदाताओं को हमारे ई-नीलामी सर्विस प्रोवाईडर के पास पहले पंजीकृत कराना होगा और ई-नीलामी में भाग लेने के लिए यूजर आई डी और पासवर्ड प्राप्त करना होगा और मैसर्स सी 1 इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मत्स्य पेट्रोकेम बिल्डिंग, बिल्डिंग नंबर 301, उद्योग विहार, फेज 2, गुरुग्राम, हरियाणा 122015 (भारत) दूरभाष 91-124-4302020/21/22/23, 91 7291981124/25/26, संपर्क व्यक्ति, विनोद चौहान, मोबाइल नं. 9813887931, ई-मेल: **support@bankeauctions.com,** वेबसाइट **https://www.bankeauctions.com** के साथ सम्पर्क करने की सलाह दी जाती है।
8. संभावित बोलीदाताओं को पोर्टल के साथ स्वयं को पंजीकृत करना और पहले से ही उपयोगकर्ता आईडी/पासवर्ड प्राप्त करना आवश्यक है, जो मैसर्स सी 1 इंडिया प्राइवेट लिमिटेड से उपरोक्त ई-नीलामी में बोली लगाने के लिए अनिवार्य है।
9. संबंधित बैंक अधिकारियों /हेल्पलाइन नं. आदि का विवरण निम्नानुसार है:

नाम एवं पद	ईमेल और फोन नं.
साक्षी जैन	9722140562 ubin0557838@unionbankofindia.bank

10. जो बेचे जाने का प्रस्ताव है वे अधिकार है जिनके लिए प्रमाणपत्र देनदार संपत्तियों के संबंध में हकदार है। संपत्तियों को देनदारियों, यदि कोई हो, के साथ बेचा जाएगा। उद्घोषणा में दर्शाई गई संपत्तियों की सीमा वसूली प्रमाणपत्र अनुसूची के अनुसार है। वसूली अधिकारी किसी भी कारण से सीमा में किसी भी बदलाव के लिए जिम्मेदार नहीं होगा। संपत्तियों की बिक्री **"जहां है जैसी है" और "जैसी है जैसी है"** शर्त पर की जाएगी। इच्छुक बोलीदाताओं को सलाह दी जाती है कि वे बैंक के पास उपलब्ध स्वामित्व विलेखों की प्रतियों का अवलोकन करें और संपत्ति विवरण ऋणभार आदि की पहचान और शुद्धता की जांच करें।
11. संपत्ति की बिक्री की तारीख से पहले संभावित बोलीदाताओं द्वारा निरीक्षण किया जा सकता है जिसके लिए बैंक के उपरोक्त नामित अधिकारी से संपर्क किया जा सकता है।
12. यदि कोई बोली या सभी बोलियाँ अस्वीकार्य पाई जाती है तो वसूली अधिकारी के पास बिना कोई कारण बताए किसी भी बोली को स्वीकार या अस्वीकार करने या बिक्री प्रास्थगित या निरस्त करने का पूर्ण अधिकार है।
13. ऐसे बोलीदाताओं को असफल बोली लगाने वाले की ईएमडी पहचान प्रमाण पत्र जैसे पैन कार्ड, पासपोर्ट, वोटर-आईडी वैध ड्राइविंग लाइसेंस या सरकार और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा जारी फोटो पहचान पत्र की पहचान/प्रस्तुत करने पर डीआरटी-I की रजिस्ट्री से प्राप्त होगी। असफल बोलीकर्ता अपनी ईएमडी की वापसी सुनिश्चित करेंगे और, यदि उचित समय के भीतर प्राप्त नहीं होते हैं, तो तुरंत वसूली अधिकारी, डीआरटी-I, दिल्ली/रजिस्ट्री, डीआरटी-1, दिल्ली या बैंक से संपर्क करें।
14. उपरोक्त नाम के प्रतिवादी की सम्पत्ति की बिक्री निम्नलिखितानुसार सम्पत्ति के लिए संलग्न देनदारियों एवं दावे को जैसा अभी तक निर्धारित किया गया है, वे प्रत्येक लॉट के लिए अनुसूची में विनिर्दिष्ट है।
15. संपत्ति को अनुसूची में निर्दिष्ट बिक्री हेतु रखा जाएगा, यदि सम्पत्ति भाग की बिक्री की राशि संतुष्टि लायक होगी तो शेष के संबंध में बिक्री को तुरन्त समाप्त कर दिया जाएगा। नीलामी समाप्त होने से पूर्व बिक्री समाप्त कर दी जाएगी यदि बिक्री कर रहे अधिकारी के समक्ष प्रमाणपत्र में उल्लिखित बकाया, ब्याज शुल्क (बिक्री लागत सहित) प्रस्तुत करने होंगे अथवा उनकी संतुष्टि के साक्ष्य प्रस्तुत करना होगा कि प्रमाणपत्र, ब्याज एवं लागत अधोहस्ताक्षरी को भुगतान किए जा चुके है।
16. बिक्री से संबंधित कोई अधिकारी या अन्य व्यक्ति निविदा के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से सम्पति की बिक्री के लिए बोली, अधिग्रहण अथवा प्रयास नही करेगा।
17. आयकर अधिनियम 1961 के द्वितीय अनुसूची के शर्तों एवं उसके नियमों के तहत तथा निम्न शर्तों के अनुरुप ही बिक्री की जाएगी। बिक्री उद्घोषणा के अनुसूची में उल्लिखित विवरण अधोहस्ताक्षरी के सर्वोत्तम जानकारी के अनुसार दर्शाया गया है परन्तु किसी त्रुटी, गलत बयान अथवा उद्घोषणा में चूक के होने पर अधोहस्ताक्षरी की जवाबदेही नहीं होगी।
18. निविदा राशि जहाँ से बिड राशि को बढ़ाया जाएगा **रु. 10,000/– (रु. दस हजार केवल)** निविदा राशि पर अथवा निविदादाता द्वारा किसी विवाद पर लॉट के लिए नीलामी को तुरंत दोबारा प्रारंभ करवाया जाएगा।
19. किसी भी लॉट के सर्वोच्च/उच्चतम बोलीदाता को क्रेता घोषित किया जाऐगा बशर्ते की वह बोली लगाने के लिए कानूनन योग्य है एवं उसके द्वारा लगाई गयी बोली आरक्षित मूल्य से कम नही है। उच्चतम बोली को स्वीकार या अस्वीकार करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरकर्ता के विवेकाधीन होगा, यदि प्रस्तावित मूल्य स्पष्टतः इतना अपर्याप्त हो जिसे प्राप्त करना अनुचित हो।
20. सफलतम/उच्चतम बोलीदाता को बिक्री मूल्य का 25 प्रतिशत राशि वसूली अधिकारी, ऋण वसूली अधिकरण-I, दिल्ली, खाता T.R.C. No. **1324/2022** के पक्ष में बैंक ड्राफ्ट/पे-ऑर्डर के द्वारा ऑन लाईन निलामी के 24 घण्टे के अंदर तैयार करना होगा और धरोहर राशि को समायोजित करने के पश्चात् यह ऑनलाइन निलामी के बंद होने से तीन दिनों के भीतर रिकवरी अधिकारी के कार्यालय में पहुँच जाना चाहिए, ऐसा ना करने पर धरोहर राशि जब्त कर ली जाऐगी।
21. सफलतम / उच्चतम बोलीदाता सम्पत्ति बिक्री मूल्य की बकाया 75 प्रतिशत राशि वसूली अधिकारी, **डी आर टी-I, दिल्ली, खाता T.R.C. No. 1324/2022** के पक्ष में डिमांड ड्राफ्ट/पे-ऑर्डर के द्वारा सम्पत्ति की बिक्री की तिथि (उस दिन को छोड़कर) से 15वें दिन या उससे पहले वसूली अधिकारी, डी आर टी-I, दिल्ली के समक्ष जमा करेगा और यदि 15वें दिन रविवार या अवकाश होता है तो अगले कार्य दिवस पर (15 दिन के पश्चात) ऐसा किया जाऐगा। एवं 2 प्रतिशत रु. 1000/– तक और उसके बाद शेष राशि पर 1 प्रतिशत की दर से पाउण्डेज फीस का भुगतान रजिस्ट्रार, ऋण वसूली अधिकरण-I, दिल्ली के पक्ष में जमा करवाना होगा (75 प्रतिशत शेष जमा राशि के मामले में यदि पोस्ट के माध्यम से भेजा जाता है तो उपरोक्तानुसार में वसूली अधिकारी के ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए)।
22. यदि निर्धारित अवधि के अन्दर भुगतान नही किया जाता है, तो सम्पत्ति को बिक्री की नई उद्घोषणा के निर्गमन के बाद पुनः बेचा जाऐगा। बिक्री के खर्चों को चुकाने के बाद बची रकम यदि अधोहस्ताक्षरी इसे सही समझता है, तो सरकार के खाते में जब्त कर दी जायेगी तथा दोषी क्रेता सम्पत्ति के या उस राशि के किसी भी भाग जिसके लिए उसे बाद मे बेचा जा सकता है, के दावे जब्त कर लिए जायेंगें।

सम्पत्तियों की अनुसूची

लॉट नं.	अन्य सह मालिकों के नाम के सहित, बेची जाने वाली सम्पत्ति का विवरण, जहाँ सम्बन्धित सम्पत्ति डिफाल्टर या जो किसी अन्य व्यक्ति के सह-स्वामित्व में है।	सम्पत्ति या उसके किसी भाग पर राजस्व जिसका मूल्यांकन किया गया है	किसी भी प्रकार के भार का विवरण जिसके लिए सम्पत्ति उत्तरदायी है	विवाद अगर कोई है जो कि सम्पत्ति के सम्बंध में आगे आया है एवं अन्य कोई ज्ञात विशिष्टियां जोकि इसके मूल्य एवं प्रकृति प्रभाव रखता है।
1	एचआईजी फ्लैट प्रा. नं. जी-1, भूतल (सामने की तरफ), संपत्ति नं. B-1/144, डीएलएफ दिलशाद एक्सटैंशन-2, गांव ब्रह्मपुर उर्फ भोपुरा, परगना लोनी, जिला गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश में स्थित	कोई सूचना प्राप्त नहीं		

मेरे समक्ष दिनांक 04.12.2024 को मोहर किया गया — हस्ता/– वसूली अधिकारी, डीआरटी-I, दिल्ली

बाजार में लगातार पांचवें दिन गिरावट

मुंबई, (पंजाब केसरी): वैश्विक बाजारों में कमजोरी के बीच घरेलू शेयर बाजारों में गिरावट का सिलसिला लगातार पांचवें दिन शुक्रवार को भी जारी रहा और भारी बिकवाली के असर में दोनों मानक सूचकांक करीब 1.5 प्रतिशत तक टूट गए। अमेरिकी फेडरल रिजर्व के आक्रामक रुख के बाद वैश्विक बाजारों में जोखिम से बचने की चाह के चलते कारोबारी धारणा कमजोर बनी हुई है।

चौतरफा बिकवाली के बीच बीएसई का 30 शेयरों वाला सूचकांक सेंसेक्स 1,176.46 अंक गिरकर 78,041.59 पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 1,343.46 अंक फिसलकर 77,874.59 पर आ गया था। इसी तरह एनएसई का मानक सूचकांक निफ्टी 364.20 अंक गिरकर 23,587.50 पर बंद हुआ।

बीएसई पर सूचीबद्ध 2,950 शेयरों में गिरावट आई जबकि 1,045 शेयर तेजी के साथ बंद हुए और 90 शेयरों में कोई बदलाव नहीं हुआ।

बाजार में गिरावट के इन पांच दिनों में निवेशकों को 18.43 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। इस दौरान बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण 18,43,121.27 करोड़ रुपये घटकर 4,40,99,217.32 करोड़ रुपये रह गया।

रुपया निचले स्तर से उबरा

मुंबई, (पंजाब केसरी): अमेरिकी डॉलर सूचकांक में नरमी और भारतीय रिजर्व बैंक के संभावित हस्तक्षेप के कारण रुपया अपने सर्वकालिक निम्नतम स्तर से उबरकर 9 पैसे की मजबूती के साथ 85.04 रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुआ। विदेशी मुद्रा व्यापारियों ने कहा कि डॉलर की पर्याप्त मांग के कारण रुपया कमजोर रहने की संभावना है। अगले साल फेडरल रिजर्व की तरफ से ब्याज दरों में कटौती की संभावना कम होने के बीच डॉलर इंडेक्स के ऊंचे स्तर पर बने रहने की उम्मीद है।

अरिहंत प्रकाशन के मालिक के ठिकानों पर छापेमारी

नोएडा, (पंजाब केसरी): मेरठ स्थित अरिहंत प्रकाशन के मालिक योगेश जैन के आवास सहित चार ठिकानों पर आयकर विभाग ने एक साथ छापेमारी की है, जिससे कई चौकाने वाले खुलासे हुए हैं। इस छापेमारी में आयकर विभाग की टीम ने दिल्ली, नोएडा और मेरठ के साकेत स्थित योगेश जैन के आवासों पर जांच की। आयकर विभाग को पता चला कि योगेश जैन ने नोएडा की तीन अलग-अलग सोसाइटियों में करोड़ों रुपये की संपत्ति खरीदी है।

● **अरिहंत प्रकाशन देश के प्रमुख और टॉप 5 प्रकाशन कंपनियों में शुमार है**

सूत्रों के अनुसार, इस छापेमारी में आयकर विभाग के अधिकारियों की टीम में दिल्ली, गाजियाबाद और उत्तराखंड से कुल 150 अधिकारी शामिल थे। जब छापेमारी की गई, तो वेस्टर्न कचहरी रोड स्थित योगेश जैन के आवास से बड़ी मात्रा में नकदी मिली, जिसे देखकर अधिकारियों ने बैंक से नोट गिनने वाली मशीन मंगवाई। इसके अलावा, आयकर विभाग को यह जानकारी भी मिली कि अरिहंत प्रकाशन ने हाल ही में कई स्थानों पर जमीन की खरीद-फरोख्त की है। अरिहंत प्रकाशन देश के प्रमुख और टॉप 5 प्रकाशन कंपनियों में शुमार है। योगेश जैन के तीन बेटे - दीपेश जैन, रितेश जैन और परवेश जैन इस प्रकाशन कंपनी का संचालन करते हैं।

HIMACHAL PRADESH
PUBLIC WORKS DEPARTMENT
INVITATION FOR BIDS (IFB)

The Executive Engineer Bilaspur Division No.2, HP-PWD, Bilaspur on behalf of Governor of H.P invites the percentage rate bids, in electronic tendering system, from the eligible class of contractors registered with HPPWD for the works as detailed in the table.

Sr. No	Name of Work	Estimated cost	Starting Date for download-ing Bid	Earnest money	Cost of tender form	Deadline for submission of Bid	Time Period
1	Improvement of Black Spot on Laraghat Bathoh Bholi road km 0/00 to 10/500 (SH:- Providing and fixing " W"- Metal Beam Crash Barrier at Rd 4/240 to 4/270 and 6/180 to 6/217) (Deposit Work)	Rs. 3,37,302/-	23.12.2024	Rs. 6,800	350/-	28.12.2024	Three Months

The bidders are advised to note other details of tenders from the department website www.hptenders.gov.in

Sd./-Executive Engineer
Bilaspur Divn.No.II, HP-PWD, Bilaspur
Tel; 01978-222551, e-mail:-ee-bil2-hp@nic.in
RO. No. 4335/2024-2025 On behalf of Governor of Himachal Pradesh

इंडसइंड बैंक पर 27.30 लाख जुर्माना

मुंबई, (पंजाब केसरी): भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने जमाराशि पर ब्याज दर से संबंधित मानदंडों के कुछ प्रावधानों का पालन न करने पर इंडसइंड बैंक पर 27.30 लाख रुपये का जुर्माना लगाया है। केंद्रीय बैंक ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। आरबीआई ने 31 मार्च, 2023 तक बैंक की वित्तीय स्थिति के संदर्भ में पर्यवेक्षी मूल्यांकन के लिए एक वैधानिक निरीक्षण के बाद बैंक को एक नोटिस जारी किया था। इंडसइंड बैंक के जवाब एवं अतिरिक्त प्रस्तुतियों पर गौर करने के बाद आरबीआई ने पाया कि अपात्र संस्थाओं के नाम पर कुछ बचत खाते खोलने से संबंधित आरोप सही साबित हुए हैं, जिसके लिए मौद्रिक जुर्माना लगाया जाना जरूरी है।

पहचान की अपील

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि एक मृत व्यक्ति जिसका नाम अज्ञात, **पुत्र** अज्ञात **पता** अज्ञात जिसकी **उम्र** करीब 35 वर्ष, **कद:** 5'6", **शरीर:** स्वस्थ, **चेहरा:** अण्डाकार, **रंग:** गेहुँआ, जिसने सफेद, नीले और लाल रंग का धारीदार गोल गले का स्वेटर और क्रीम रंग की पैंट पहनी है। जो कि 14.12.2024 को शाम 4:05 बजे हैदरपुर वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट, जल, रोहिणी, दिल्ली में मृत अवस्था में मिला। इस संदर्भ में **DD No.87A, दिनांक: 14.12.2024** थाना के. एन. काटजु मार्ग, दिल्ली में दर्ज है।

इस मृतक व्यक्ति के बारे में किसी भी व्यक्ति को कोई भी जानकारी/सुराग मिले तो अधोहस्ताक्षरित एवं निम्नलिखित नम्बरों पर सूचित करने की कृपा करें।

थानाध्यक्ष
थाना: के. एन. काटजु मार्ग, दिल्ली
फोन नं. 011-27571162, 27571171
दि.पु./16587/रोहिणी जिला/2024 मो.: 8750870327

छत्तीसगढ़ शासन, जल संसाधन विभाग
कार्यालय कार्यपालन अभियंता, जल संसाधन संभाग रायगढ़
जिला-रायगढ़ (छ.ग.)
ई-प्रोक्यूरमेंट निविदा सूचना
eProcurement Portal: https://eproc.cgstate.gov.in

निम्नलिखित कार्यों के लिए दिनांक 09.01.2025 समय 17:30 तक ऑनलाइन निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं-

सिस्टम निविदा क्रमांक	निविदा सूचना क्रमांक एवं दिनांक	कार्य का नाम	निविदा की लागत (लाख में)	आमंत्रण का क्रमांक
163067	14/व.ले.लि. /2024-25 दिनांक 19.12.2024	रायगढ़ जिले के सोड़ेकेला जलाशय जीर्णोद्धार एवं नहर सी.सी. लाइनिंग कार्य।	237.91	पंचम आमंत्रण

अन्य विवरण एवं विस्तृत निविदा छत्तीसगढ़ शासन की ई-प्रोक्योरमेंट वेबसाइट https://eproc.cgstate.gov.in पर दिनांक 26-12-2024 समय 17:31 बजे से देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं।

नोट : निविदा में भाग लेने हेतु ठेकेदारों को ई-प्रोक्योरमेंट वेबसाईट https://eproc.cgstate.gov.in नामांकित/ पंजीयन तथा लोक निर्माण विभाग की एकीकृत पंजीयन प्रणाली के अंतर्गत ठेकेदार को उपयुक्त श्रेणी में पंजीयन कराना अनिवार्य है।

हस्ता./-कार्यपालन अभियंता
जल संसाधन संभाग रायगढ़
G-242504711/7 **जिला-रायगढ़ (छ.ग.)**

थाना : मानेसर जिला : गुरुग्राम
अभियोग संख्या-261 दिनांक 16.08.2024 U/S 137(2) BNS थाना मानेसर गुरुग्राम

गुमशुदा सूचना

नाम अंजली पुत्री नीतु सिंह निवासी उमरारा, थाना डिवाई, जिला बुलन्दशहर उ.प्र. हाल किरायेदार विरेन्द्र मानेसर गुरुग्राम दिनांक 13-8-24 को अपने किराये के कमरे मानेसर से बिना किसी को सूचित किए चली गई है, जिसने काले रंग का सूट, लाल रंग लेगिंग व पैरों में हरे रंग की सैंडल पहने हुए हैं। पहचान रंग गेहुंआ लम्बूतरा पेहरा पतला शरीर व उम्र 14 वर्ष है। जिस किसी व्यक्ति को इसके बारे में कोई सूचना मिले या कहीं दिखे तो सम्पर्क करें। थाना मानेसर गुरुग्राम में सूचित करें।

ASI प्रवीन कुमार मौ.न. 9812931127
SHO/INSP मौ.न. -9999981843 -Sd/-ASI
मोहर P.S. MANESAR, GURUGRAM
PRDH R.O.NO.1084/11/2942/2025/31190/142/7dt. 20/12/2024

थाना मानेसर **जिला गुरुग्राम**
अभियोग संख्या- 271 दिनांक 23.08.2024 U/s 137(2) BNS थाना मानेसर, गुरुग्राम

गुमशुदा सूचना

नाम अंजली पुत्री देशराज पुत्र श्री माता प्रसाद निवासी ओनई जंगल थाना महाराजगंज जिला रायबरेली उ.प्र. हाल किरायेदार मंटु नाहरपुर मानेसर गुरुग्राम दिनांक 20-08-2024 से समय करीब 9 PM से गुमशुदा है जिसकी पहचान रंग गोरा, गोल चेहरा, कद 5 फुट, उम्र 17 साल, शिक्षा 10वीं पास है जिसने काली लोवर व काली टी शर्ट व पैरों में हवाई चप्पल पहन रखी थी। जिस किसी व्यक्ति को इसके बारे में कोई सूचना मिले या कहीं दिखे तो सम्पर्क करें। थाना मानेसर गुरुग्राम में सूचित करें।

ASI प्रवीन कुमार मो.नं. 9812931127
SHO/INSP मो.न. -9999981843

हस्ता./- ASI
थाना मानेसर, गुरुग्राम
PRDH R.O. No. 1084/11/2941/2025/31189/142/7 Dt. 20.12.2024

GOVERNMENT OF CHHATTISGARH, WATER RESOURCES DEPARTMENT
OFFICE OF THE CHIEF ENGINEER MAHANADI PROJECT, RAIPUR (CHHATTISGARH)
e-PROCUREMENT TENDER NOTICE
eProcurement Portal: https://eproc.cgstate.gov.in
(First Call)

System Tender No. 162911/NIT No.: 03/SAC/24-25
Dated: 19.12.2024

Online Tenders are invited for the following work up to 09.01.2025 at 17.30 Hours.
Name of work-Construction of Pittepara Anicut on Jajal River in Sukma Block of Sukma District.
Probable Amount of Contract: **Rs. 291.45 Lakhs**
(As per S.O.R dated 01.08.2010 and amended upto dated 22.08.2022).

The details can be viewed and downloaded online directly from the Government of Chhattisgarh Integrated e-Procurement Portal **(https://eproc.cgstate.gov.in) from Date 26.12.2024, at 17.31 Hours. (IST) onwards.**

NOTE: All eligible/intrested contractors/bidders are mandated to get enrolled on the Integrated e-procurement portal (https://eproc.cgstate.gov.in) and get approval on specific vendor class from PWD under Centralized Contractor/Supplier Registration in order to download the tender documents and participate in the subsequent bidding process.

Sd./-Executive Engineer
Water Resources Division, Sukma For,
Chief Engineer, Mahanadi Project
G-242504749/7 **Raipur (C.G.)**

छत्तीसगढ़ शासन, जल संसाधन विभाग
कार्यालय मुख्य अभियंता
महानदी गोदावरी, कछार, रायपुर (छ.ग.)
ई-प्रोक्यूरमेंट निविदा सूचना
eProcurement Portal : https://eproc.cgstate.gov.in
(प्रथम आमंत्रण)

*सिस्टम निविदा क्र. **163051**/निविदा सूचना क्र. 17/वलेलि/2024-25, दुर्ग दिनांक **20.12.2024***

निम्नलिखित कार्यों के लिए दिनांक **10.01.2025,** 17.30 तक ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं :-

कार्य का नाम : दुर्ग/बेमेतरा जिले के विकास खण्ड धमधा की कुटहा जलाशय का जीर्णोद्धार एवं मुख्य नहर की लाईनिंग कार्य, साथ ही 03 नग डी.सी., 09 नग व्ही.आर.बी., 02 नग इनलेट, 01 नग फाल का निर्माण कार्य एवं 11 नग कोलाबा फिक्सिंग कार्य।

अनुमानित लागत : रुपए 276.51 लाख

अन्य विवरण एवं विस्तृत निविदा छत्तीसगढ़ शासन की ई-प्रोक्योरमेंट वेबसाइट https://eproc.cgstate.gov.in पर दिनांक **27.12.2024** समय 17.31 बजे से देखे तथा डाउनलोड किए जा सकते हैं।

नोट : निविदा में भाग लेने हेतु ठेकेदारों को ई-प्रोक्योरमेंट वेबसाईट https://eproc.cgstate.gov.in पर नामांकित/पंजीयन तथा लोक निर्माण विभाग की एकीकृत पंजीयन प्रणाली के अन्तर्गत ठेकेदार को उपयुक्त श्रेणी में पंजीयन कराना अनिवार्य है।

हस्ता./- कार्यपालन अभियंता
तांदुला जल संसाधन संभाग, दुर्ग
कृते मुख्य अभियंता महानदी गोदावरी कछार,
G-242504733/8 **जल संसाधन विभाग, रायपुर, (छ.ग.)**

अर्थजगत

अरहर दाल में मंदी, सरसो सोयाबीन तेल में तेजी

नई दिल्ली, (एनएनएस): स्टॉकिस्टों की लिवाली कमजोर पड़ने से अरहर रंगून, अरहर दाल दड़ा तथा पटका में 500-575 रुपए, रोलर फ्लोर मिल आटे जैसे गेहूं उत्पादों में क्वालिटीनुसार 5-20 रुपए की मंदी दर्ज की गई। तेल-तिलहन बाजार में, स्टॉकिस्टों की लिवाली बढऩे से सरसों, सरसों एक्सपैलर, सोयाबीन रिफाइंड मिल डिलीवरी, बिनौला मिल डिलीवरी तथा चावल तेल पंजाब में 25-150 रुपए प्रति क्विंटल की तेजी आई।

कल क्या होगा?

रविवार पौष बदी सप्तमी को गेहूं, जौ, जई, मक्की, बाजरा, उड़द, तुवर, देशी चना, काबुली चना, चीनी, लौंग, राई, मखाना, हल्दी, कालीमिर्च, रीठा, टिटेनियम डाइऑक्साइड, धनिया, अजवायन, अमचूर, इमली, कलौंजी, गुड़, पारा, सीसा, निकिल, कॉपर, सोयाबीन, सरसों, बिनौला एवं इनके तेल, अरंडी तेल में लाभ तथा बासमती चावल, राजमा चित्रा, मोठ, मूंग, मसूर, मलका, मटर, तिल, ग्वार, ग्वार गम, जावित्री, जायफल, जावित्री, मगज तरबूज, पोस्तदाना, चिरौंजी, जीरा, अंजीर, किशमिश, दालचीनी, किशमिश, कपास, मोम, मैंथा ऑयल, सोडाएश, टिन, निकिल, कॉपर, पीतल में हानि हो सकती है। भाग्यांक 3-5-6-8 है। यात्रा विचार- पूरब दिशा की ओर 9.23 बजे प्रातः के बाद यात्रा शुभ होगी।

अनाज-दाल: (भाव प्रति क्विं.) गेहूं: एमपी देशी 4200/4400, दड़ा (मिल पहुंच) 3060/3065, चक्की (पहुंच) 3068/3070, आटा चक्की (10 किलो)(जीएसटी सहित) 340/345, रोलर फ्लोर मिल आटा (50 किलो) 1675/1680, मैदा (50 किलो) 1745/1750, सूजी (50 किलो) 1780/1790, चोकर (48 किलो)1270/1280, चावल: बासमती लालकिला 14000, स्वाद 9000, शरबती सेला 4000/4100, स्टीम 4400/4500, (1121 नं.) चावल सेला 6600/6700, स्टीम 7700/7800, सोर्टेक्स 7800/ 7900, (1509 नं.) चावल सेला 5400/5500, स्टीम 6200/6300, बासमती (1718) सेला 5800/ 6000, मसूर कच्ची: छोटी 6600/ 6900, मोटी विदेशी 6250/6260, देशी बिल्टी 6800/6810, दाल मसूर: लोकल 7600/7700, बढिय़ा 7800/7900, मलका: लोकल 7500/7600, बढिय़ा 7700/7800, मोठ 5100/ 5125, अरहर: रंगून 8500/8525, देशी नयी कर्नाटक 8900/9000, दाल अरहर: दड़ा 12500/ 13000, पटका 13500/ 14000, चना (खड़ी मोटर) राजस्थान 6825/6850, एमपी 6750/6760, बेसन (35 किलो) (जीएसटी अतिरिक्त): एग्रोप्योर 3060, राजमा चित्रा: चीन 10500/10600, ब्राजील &, पुणे 7000/11600, काबली चना: छोटा 7500/ 7700, मीडियम 9100/9200, मोटा 9900/10100, लोबिया: ब्राजील 7800/8000, लाल &, मटर: सफेद देशी 3800/3850, विदेशी 3800/3900.

चीनी मिल डिलीवरी : प्राइवेट मिलें (जीएसटी अतिरिक्त): अफजलगढ़ 3660, सिंभावली 3820, शामली3670, मोदी 3710, देवबंद 3800, किनौनी 3900, बुढ़ाना 3715, खतौली 3800, मवाना 3666, दौराला 3870, अगौता 3700, धामपुर 3685, बुंदकी 3650, हाजिर 3975/4225

गुड़-शक्कर : गुड़ पेड़ी 3850/3950, चाकू 3650/3750, ढैया 4100/4200, शक्कर 4400/ 4500, खांडसारी 4800/ 4900

तिलहन और तेल : तिलहन: सरसों 6200/6225, खली एक्सपेलर: सरसों 2400/2500, बिनौला 2950/3200, डिऑयल्ड एक्सटेरक्शन (टन): राइसब्रान कंटीन्यूस 11000/11200, सरसों 19000/19500, सोयाबीन पीला 31500/32000, सूरजमुखी 24000/24500, मूंगफली (40-45 प्रश.) 30000/32000, राईसब्रान (प्रति यूनिट) 149/150, खाद्य तेल (जीएसटी अतिरिक्त): मूंगफली साल्वेंट रिफाइंड (टीन) 2500/ 2650, सरसों तेल (टीन) 2200/ 2425, सरसों एक्सपेलर 13000, तिल तेल 14800, सोयाबीन रिफाइंड मिल डिलीवरी 12900, सोया तेल डिगम्ड &, (टीन) 2080/2200.

लोहा व इस्पात : (प्रति टन)जीएसटी पेड सरिया: कामधेनु: (8 एमएम) 65700, (10 एमएम) 64500, (12 एमएम) 62200, (16-25 एमएम) 63400, कामधेनु पीएएस-10000 (पीस): (8 एमएम) 376, (10) 577, (12) 814, (16) 1449, (20 एमएम) 2264, (25 एमएम) 3535, अम्बा शक्ति -500 एसडी: (8 एमएम) 65500, (10 एमएम)63700, (12 एमएम) 62900, (16-25 एमएम) 62800, (32 एमएम) 63200, अम्बा शक्ति-ट्राईकोर (8 एमएम) 65300, (10) 63200, (12) 62700, (16-25) 61770, (32) 62600, केवीएस टीएमटी बार (8 एमएम) 65600, (10) 62400, (12) 62900, (16-25) 62700, (28-32) 62300, बिरला (8 एमएम) 65100, (10 एमएम) 63000, (12 एमएम) 62700, (16-25 एमएम) 61900, टीएमटी: जयभारत: (8 एमएम) 65100, (10 एमएम) 63900, (12 एमएम) 62600, (16-25 एमएम) 61300, अनमोल-500 एसडी: (8 एमएम) 64500, (10 एमएम) 63900, (12 एमएम) 62700, (16-205 एमएम)62600, एंगल: राना (जीएसटी अतिरिक्त) (50&5) 47500, केवीएस-एमएस (35& 5) 49500, (40&5/6) 50000, (50&5) 50500, (50& 6) 51000, (65&5/6) 51500, जयभारत: (50&5 से 75&10) 49000, अनमोल: 48500, बिरला 48500, चैनल: राना (जीएसटी अतिरिक्त) 49000, एमएस (केवीएस) (75&40) (100& 50) 51000, जयभारत 49500, अनमोल 49500, बिरला 50500, गार्डर (ज्वाइस्ट): जयभारत 50000, अनमोल 50000, टी-आयरन: राना 50000, (बिलट): (ढाई से 3 इंच) 40500, (साढ़े तीन इंच) 41500, (4 इंच) 42000, (5 इंच) 42500, (6 इंच) 42500, स्क्रैप: पुरानी 35000, मैल्टिंग स्क्रैप 36000, इंगट 41500, राउंड 46000.

अलौह धातु : (किलो/जीएसटी अतिरिक्त): एंटीमनी: चीन &, कैडमियम: रॉड &, मैक्सिको &, प्लेट &, लैड (सीसा): बैट्री सफेद 103, बैट्री काला 90, देशी मुलायम 175/192, देशी सख्त (एक-डेढ़ प्रतिशत) 175/192, चार प्रतिशत 180/196, पी.पी.&, गन मैटल स्क्रैप: लोकल 599, मिक्स 609, जालंधर 629, स्टील बर्तन &, ब्रास (पीतल): हनी 507/537, रेडिएटर देशी 356, रेडिएटर विदेशी 356, चादरी देशी 492/522, पुर्जे स्क्रैप 477/507, टिन (रांग): इंगट मलेशिया &, इंडोनेशिया 2550, जिंक (जस्ता): इंगट (पटरा) एचजेडएल 288, एजेड 292, आईजेड 291, आईजे 293, पीएमआई 236, ड्रास (ढीमा) 212, निकिल कैथोड: रसियन- (4&4) 1355, (8&8) 1360, (4&24) 1365, नार्वे (4&4) 1370, (4&24) 1375, कॉपर (तांबा): आरमेचर प्लांट 736, भट्ठी 734, सीसी 800, एल्यूमीनियम: सीजी इंगट 241, शीट कटिंग 222, वायर स्क्रैप 226, बर्तनफूट 193, पुर्जाफूट 173.50, रॉड: लोकल 237, कम्पनी 260.

विदेशी मुद्रा भंडार 1.98 अरब डॉलर घटा

मुंबई, (पंजाब केसरी): देश का विदेशी मुद्रा भंडार 13 दिसंबर को समाप्त हुए सप्ताह में 1.98 अरब डॉलर घटकर 652.87 अरब डॉलर रह गया। इससे पिछले सप्ताह में, देश का विदेशी मुद्रा भंडार 3.23 अरब डॉलर की गिरावट के साथ 654.85 अरब डॉलर रहा था। पिछले कुछ सप्ताह से विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट आ रही है। पुनर्मूल्यांकन होने के साथ रुपये में उतार-चढ़ाव कम करने के लिए आरबीआई द्वारा विदेशी मुद्रा बाजार में किए गए हस्तक्षेप को इसकी वजह माना जा रहा है। सितंबर में विदेशी मुद्रा भंडार बढ़कर 704.88 अरब डॉलर के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया था।

रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता का नया दौर शुरू हो : राष्ट्रपति मुर्मू

हैदराबाद, (पंजाब केसरी): राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को कहा कि अब समय आ गया है कि देश में ही तकनीकी रूप से उन्नत उपकरणों का निर्माण करके रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता का एक नया दौर शुरू किया जाए। उन्होंने यहां रक्षा प्रबंधन महाविद्यालय (सीडीएम) को 'प्रेसिडेंट्स कलर' प्रदान करने के बाद कहा कि केंद्र सरकार ने रक्षा उद्योग की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए कई कदम उठाए हैं। उन्होंने कहा कि मेक इन इंडिया, व्यापार में सुगमता और रक्षा औद्योगिक गलियारों के विकास जैसी पहलों के माध्यम से सरकार भारतीय व विदेशी निवेशकों को रक्षा क्षेत्र में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। उन्होंने स्वदेशीकरण पर जोर देते हुए कहा कि घरेलू विनिर्माण के लिए कई रक्षा उत्पादों की पहचान की गई है और उनका आयात नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा, अब समय आ गया है कि भारत में ही तकनीकी रूप से उन्नत उपकरणों का निर्माण करके आत्मनिर्भरता का एक नया चरण शुरू किया जाए।

राहुल गांधी पर एफआईआर दर्ज करना निंदनीय : सुक्खू

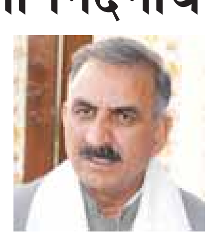

शिमला, (विक्रांत सूद): मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने लोकसभा में विपक्ष के नेता एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर दर्ज एफआईआर को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए कहा कि यह राजनीतिक द्वेष से उठाया गया कदम है। उन्होंने धर्मशाला में पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वह स्वयं एवं पूरी कांग्रेस पार्टी राहुल गांधी के साथ मजबूती से खड़ी है।

मुख्यमंत्री ने राहुल गांधी की देश के प्रति निष्ठा एवं समर्पण व प्रतिबद्धता पर बल देते हुए कहा कि उन्होंने नि:स्वार्थ भावना से कन्याकुमारी से कश्मीर तक भारत जोड़ो यात्रा की ताकि लोकतांत्रिक मूल्यों को देशभर में पुनर्स्थापित करने के साथ-साथ भाईचारे की भावना को बढ़ावा दिया जा सके।

दिया कुमारी ने किया सीतारमण का स्वागत

जयपुर, (बनवारी कुमावत): प्रदेश की उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी शुक्रवार को दो दिवसीय यात्रा पर जैसलमेर पहुंची। साथ ही, केन्द्रीय वित्तीय मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण भी 55 वीं जीएसटी काउन्सिल बैठक में भाग लेने के लिए शुक्रवार को जैसलमेर पहुंची। जैसलमेर एयरपोर्ट पर वित्त मंत्री का उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने गुलदस्ता भेंट कर हार्दिक स्वागत किया।

बीजद विधायक के भाई की कंपनी से 82 लाख जब्त

नई दिल्ली, (भाषा) ओडिशा में बीजद विधायक के दिवंगत भाई से संबंधित एक सामाजिक कल्याण संगठन के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा की गई छापेमारी के बाद 82 लाख रुपये मूल्य की जमाराशि और शेयर जब्त कर लिये गये। ईडी की यह छापेमारी बैंक धोखाधड़ी से जुड़े धनशोधन की जांच के सिलसिले में की गयी थी। ईडी ने शुक्रवार को एक बयान में कहा कि भारत एकीकृत सामाजिक कल्याण एजेंसी (बीआईएसडब्ल्यूए) के खिलाफ जांच के सिलसिले में 18 दिसंबर को ओडिशा (संबलपुर) और दिल्ली में चार स्थानों पर छापेमारी की गई। बीआईएसडब्ल्यूए का संचालन दिवंगत खिरोद चंद्र मलिक करते थे। खिरोद चंद्र मलिक पूर्व मंत्री और बीजू जनता दल (बीजद) की विधायक प्रमिला मलिक के भाई हैं। ओडिशा विधानसभा में बिंझारपुर निर्वाचन क्षेत्र (जाजपुर जिला) का प्रतिनिधित्व करने वाली 61 वर्षीय प्रमिला मलिक की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली है। प्रमिला मलिक ने नवीन पटनायक सरकार में राजस्व और आपदा प्रबंधन मंत्री के रूप में कार्य किया है। ईडी ने बयान में कहा, '' बीआईएसडब्ल्यूए को स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) और संयुक्त देयता फर्मों को वित्तपोषित करने की आड़ में चलाया जा रहा था।'' प्रवर्तन निदेशालय के अनुसार, यह समूह 200 करोड़ रुपये से अधिक की बैंक ऋण धोखाधड़ी में भी शामिल था।

पति-पत्नी की कलह में कानून बतौर 'हथियार' इस्तेमाल हुआ

नई दिल्ली, (भाषा): उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को एक महिला के सास-ससुर के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही रद्द कर दी जिसने उत्पीड़न का आरोप लगाया था। अदालत ने साथ ही कहा कि अलग रहे पति-पत्नी के बीच आपसी वैमनस्य में आपराधिक कार्रवाई का इस्तेमाल 'हथियार' की तरह किया गया। न्यायमूर्ति बी.आर. गवई और न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन की पीठ ने एक पुराने फैसले का जिक्र करते हुए कहा कि शीर्ष अदालत ने भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 498-ए के उद्देश्यों पर चर्चा की थी और वैवाहिक विवादों में इसके दुरुपयोग को लेकर चिंता जताई थी। आईपीसी की धारा 498-ए एक विवाहित महिला पर उसके पति या उसके रिश्तेदारों द्वारा क्रूरता से संबंधित है। शीर्ष अदालत ने इस बात का संज्ञान लिया कि शिकायत फरियादी द्वारा दिए गए तलाक के नोटिस के बाद दर्ज की गई थी।

ईवीएम सत्यापन वाली याचिका पर दूसरी पीठ सुनवाई करेगी : सीजेआई

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) : उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को कहा कि इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) के सत्यापन के लिए नीति बनाने के अनुरोध वाली याचिका पर अब न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता की अध्यक्षता वाली पीठ अगले साल जनवरी में सुनवाई करेगी। भारत के प्रधान न्यायाधीश संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति संजय कुमार की पीठ ने कहा कि हरियाणा के पूर्व मंत्री एवं पांच बार के विधायक करण सिंह दलाल और लखन कुमार सिंगला की ताजा याचिका पर न्यायमूर्ति दत्ता की अध्यक्षता वाली पीठ 20 जनवरी 2025 से शुरू होने वाले सप्ताह में सुनवाई करेगी। अप्रैल की शुरुआत में न्यायमूर्ति खन्ना और न्यायमूर्ति दत्ता की पीठ ने मतपत्रों का इस्तेमाल फिर से शुरू करने का अनुरोध खारिज कर दिया था।

ईशावास्यमिदं सर्व यत्किञ्च जगत्यां जगत्
भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान हैं।

आदित्य नारायण चोपड़ा
adityachopra@punjabkesari.com

मुद्रा बाजार में गिरता रुपया

किसी भी देश की मुद्रा में अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में जब गिरावट आती है तो मोटे तौर पर उसे उस देश की अर्थव्यवस्था की सेहत के नजरिये से परखा जाता है। भारत की मुद्रा रुपये का भाव डालर के मुकाबले बहुत नीचे 85 रुपए के पार चला गया है जो बहुत ही चिन्ता की बात है। डालर के मुकाबले रुपये का गिरना बता रहा है कि हमारे आयात व निर्यात कारोबार की स्थिति क्या है। भारत ऐसा देश है जो अधिक आयात करता है और इसका निर्यात उसके अनुपात में बहुत कम रहता है जिसकी वजह से भारत का वाणिज्य घाटा बढ़ने की तरफ रहता है। ऐसी सूरत में भारत में डालर की मांग अधिक रहती है जिससे रुपया सस्ता होता जाता है। इसके साथ ही राजनैतिक स्तर पर जिस भी देश में अस्थिरता रहती है उसकी मुद्रा डांवाडोल रहती है। मगर भारत में राजनैतिक स्थिरता को कभी खतरा नहीं रहा और प्रत्येक पार्टी की सरकार में यह स्थिरता इस वजह से बनी रही क्योंकि भारत का लोकतन्त्र ऐसी अनूठी व्यवस्था है जिसके तहत सरकारों का बदला जाना बहुत सामान्य तरीके से होता है। हमारी आर्थिक नीतियां भी 1991 के बाद से मोटे तौर पर एक समान रही हैं।

1991 से भारत बाजार मूलक अर्थव्यवस्था के ढांचे को अपनाए हुए है। ये नीतियां स्व. नरसिम्हा राव की सरकार से लेकर वर्तमान मोदी सरकार तक में जारी हैं। यह बात जरूर है कि इस दौरान कुछ सरकारों ने सामान्य गति से काम किया और कुछ ने बहुत तेजी के साथ। नरसिम्हा राव सरकार में जब डा. मनमोहन सिंह वित्त मन्त्री थे तो उन्होंने रुपये को खुले अन्तर्राष्ट्रीय बाजार से जोड़ने से पहले इसका अवमूल्यन किया था। तब डालर का मूल्य 14 रुपये से ऊपर जाकर स्थिर हुआ था। मगर बाद में बाजार की शक्तियां इसका भाव तय करने लगीं क्योंकि सरकार ने निजी उद्योगों को सीधे विदेश से आयात करने की छूट भी दे दी थी। हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि भारत जब आजाद हुआ तो रुपये की कीमत एक पौंड के बराबर थी। अर्थात रुपये व ब्रिटिश मुद्रा पौंड का स्तर एक ही था मगर बाद में पौंड की कीमत डालर के मुकाबले गिरने लगी जिससे रुपया भी डालर के मुकाबले सस्ता होने लगा।

खैर 1991 में डालर की कीमत 14 रुपये से ऊपर तय होने के बाद रोजाना खुले मुद्रा बाजार में इसका भाव तय होने लगा और रुपया अपनी शक्ति के अनुसार डालर के मुकाबले ऊपर नीचे होता गया। परन्तु डालर की कीमत में पिछले कुछ वर्षों से जिस तरह उठान हो रहा है वह भारत की अर्थव्यवस्था को दर्पण दिखाने जैसी बात है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि भारत का व्यापार घाटा क्यों ऊंचाई की तरफ है। हमें मालूम है कि अमेरिका और चीन में कारोबार को लेकर जब ठनी थी तो अमेरिका लगातार मांग करता था कि चीन को अपनी मुद्रा यान का अवमूल्यन करना चाहिए। इसकी वजह यह थी कि अमेरिका का चीन के साथ आयात कारोबार लगातार बढ़ रहा था।

खैर 1991 में डालर की कीमत 14 रुपये से ऊपर तय होने के बाद रोजाना खुले मुद्रा बाजार में इसका भाव तय होने लगा और रुपया अपनी शक्ति के अनुसार डालर के मुकाबले ऊपर नीचे होता गया। परन्तु डालर की कीमत में पिछले कुछ वर्षों से जिस तरह उठान हो रहा है वह भारत की अर्थव्यवस्था को दर्पण दिखाने जैसी बात है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि भारत का व्यापार घाटा क्यों ऊंचाई की तरफ है। हमें मालूम है कि अमेरिका और चीन में कारोबार को लेकर जब ठनी थी तो अमेरिका लगातार मांग करता था कि चीन को अपनी मुद्रा यान का अवमूल्यन करना चाहिए। इसकी वजह यह थी कि अमेरिका का चीन के साथ आयात कारोबार लगातार बढ़ रहा था। भारत में यह विचार भी कुछ आर्थिक पंडितों का रहा है कि रुपये को डालर के मुकाबले पूर्ण परिवर्तनीय बना देना चाहिए। इस बारे में मनमोहन सरकार के कार्यकाल के दौरान भी विचार हुआ था और एक विशेषज्ञ समिति भी गठित की गई थी। इस समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि रुपये को तब तक पूर्ण परिवर्तनीय नहीं बनाया जा सकता जब तक कि भारत में स्वर्ण एक्सचेंज बाजार स्थापित न किया जाये।

रुपया अभी चालू खाते के तहत ही परिवर्तनीय है। इसका अर्थ यह है कि भारत के व्यापारी अपनी आयात जरूरतों को पूरा करने के लिए जितने डालर खरीदने चाहें खरीद सकते हैं क्योंकि 1991 के बाद से केवल रिजर्व बैंक का इस पर अधिपत्य समाप्त हो चुका है। 1996-97 में जब केन्द्र में देवगौड़ा व इन्द्र कुमार गुजराल की सरकारें थीं तो डालर की कीमत 20 रुपये के आसपास थी और सोने का भाव चार हजार रु. प्रति तोला के करीब था। उस सरकार के वित्त मन्त्री श्री पी. चिदंबरम थे। यह स्थिति तब थी जब 1990 में भारत को अपनी आयात जरूरतों को पूरा करने के लिए सोना गिरवी रखना पड़ा था। उस समय वित्त मन्त्री यशवन्त सिन्हा थे। बाद में वित्त मन्त्री प्रणव मुखर्जी के कार्यकाल के दौरान बाजी पूरी तरह पलट गई थी और भारत ने तीन सौ टन सोना खरीदा था। यह सब हमारी अर्थव्यवस्था की मजबूती के रूप में देखा गया। मगर श्री मुखर्जी के कार्यकाल के दौरान ही डालर ऊंचा होना शुरू हो गया था जिसकी वजह भारत द्वारा सोने के आयात में कमी न करना था।

डालर और सोने के भाव एक-दूसरे से बंधे रहते हैं। हवाला बाजार में डालर की दर सोने का भाव तय करती है। भारत में 22 कैरेट सोने का भाव फिलहाल 70 हजार रु. प्रति दस ग्राम चल रहा है। इसका मतलब निकलता है कि सोने का अवैध व्यापार बदस्तूर जारी है। डालर को मजबूत करने के लिए सोने का अवैध कारोबार रोकना बहुत जरूरी है। क्योंकि इसके लिए डालर की हवाला दर पर इस मुद्रा को खरीदा जाता है। दूसरे हमें यह भी देखना होगा अर्थव्यवस्था कितनी मजबूती के साथ आगे बढ़ रही है? कोरोना संकट के बाद इन आर्थिक मानकों में कितना सुधार हुआ है और विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की हालत क्या है। मगर डालर जिस गति से नीचे गिर रहा है तो इसका सन्देश सावधान करने वाला ही है। डालर की कीमत जो अफगानिस्तान की मुद्रा में है भारत उस श्रेणी में खड़ा नहीं हो सकता क्योंकि यह दुनिया का पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश है।

...जिंदगी की जंग हार गए उस इंसान की

काश कोई समझे हालत उस गरीब किसान की,
गर्मी, सर्दी, धूप, आंधी में डटकर खड़े चट्टान की,
बारिश से जो खराब हो गई फसल मूंग, कपास और धान की,
मुआवजों की राह तकते हुए अंत में जिंदगी की जंग हार गए उस इंसान की..!!

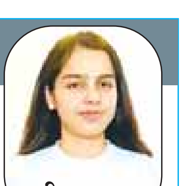

गीता पाढा

बाबा साहेब अम्बेडकर और भारत की महान संसद !

राकेश कपूर
संसद से सड़क तक
kapurakesh@gmail.com

भारत संविधान से चलने वाला देश है। यह उक्ति या सिद्धान्त हमें बाबा साहेब अम्बेडकर ने ही संविधान लिख कर दिया। भारतीय संविधान भारत का ऐसा पहला पुख्ता दस्तावेज था जिसमें सभी वर्णों या वर्गों के इंसान या आदमी को एक समान समझा गया। वस्तुत: यह भारत में ऐसी क्रान्तिकारी पुस्तक है जो भारत के पिछले पांच हजार सालों के इतिहास में पहली बार समूची मानव जाति को एक ही धरातल पर रख कर देख रही है, परन्तु इसके पीछे महात्मा गांधी का वह दर्शन भी था, जो उन्होंने स्वतन्त्र भारत के लिए देखा था। यह दर्शन निश्चित रूप से मानवता वाद का था जिसके लिए गांधी ने 1930 से लेकर 1937 तक स्वतन्त्रता आन्दोलन के समानान्तर अहिंसक युद्ध छेड़ा हुआ था। जाति के आधार पर ऊंच-नीच का विधान जन्म-जात मानने वाले भारतीय समाज में बाबा साहेब अम्बेडकर ने भी मानव समानता के लिए युद्ध छेड़ा हुआ था और दलित समाज को बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए जबर्दस्त अभियान चलाए हुए थे, परन्तु जब उन्होंने संविधान लिखा तो साफ हो गया कि गांधी और अम्बेडकर का भारत मानवता वाद के सिद्धान्त पर ही चलेगा। अत: संविधान में अपनी निजी प्रगति और विकास के लिए भारत भू-भाग में बसने वाले प्रत्येक जाति व वर्ग के लोगों के अधिकार एक बराबर ही होंगे।

बाबा साहेब की यह दृष्टि गांधी की दृष्टि से अलग नहीं थी, लेकिन अम्बेडकर दलित भाइयों के लिए अलग से निर्वाचन मंडलों की मांग भी कर रहे थे जिसे गांधी ने कभी स्वीकार नहीं किया। आजादी से पहले की अंग्रेज सरकार इस स्थिति का मजा लेना चाहती थी, क्योंकि दक्षिण में रामा स्वामी नायकर (जिन्हें पेरियार भी बोला जाता था) पृथक द्रविड़ राष्ट्र बनाने की मुहिम छेड़े हुए थे। उधर मुस्लिम लीग के नेता मुहम्मद अली जिन्ना मुसलमानों के लिए पृथक देश बनाने की मांग कर रहे थे। जिन्ना, पेरियार व अम्बेडकर की जनवरी 1940 में एक लम्बी बैठक सात दिनों तक मुम्बई के जिन्ना हाउस में चली जिसका कोई नतीजा नहीं निकला। मुहम्मद अली जिन्ना ने कहा कि पेरियार अलग से द्रविड़ राष्ट्र बनाने की जो मांग कर रहे हैं वह चालू रखें मुस्लिम लीग उनका समर्थन करेगी और अम्बेडकर अपनी मांग पर अड़े रहे, परन्तु बाबा साहेब 1932 में पुणे में महात्मा गांधी से हुए समझौते के अनुसार दलितों के लिए पृथक निर्वाचन मंडल की मांग को छोड़ चुके थे और उन्होंने स्वीकार कर लिया था कि स्वतन्त्र भारत में दलितों के लिए अलग से विधानमंडलों में आरक्षण होगा।

मुद्दा यह भी था कि दलित वर्ग हिन्दू समाज का अभिन्न अंग है। इसके लिए गांधी पूरे भारत में अस्पृश्यता या छुआ-छूत को मिटाने का अभियान छेड़े हुए थे और कह रहे थे कि दलित समाज हिन्दू समाज का अभिन्न अंग है। गांधी जानते थे कि हिन्दू समाज वर्ण व्यवस्था से ग्रसित है जिसके तहत दलितों के साथ पशुवत व्यवहार किया जाता है अत: उन्होंने दलितों को हरिजन कह कर पुकारना शुरू किया और स्वयं उन्हीं की बस्ती में रहना गंवारा किया। बाबा साहेब ने हरिजन या अनुसूचित जातियों के हक में एक महासंघ की राजनीतिक इकाई की स्थापना की और 1945 में इसी के झंडे तले संविधान सभा का चुनाव मुम्बई से लड़ा जिसमें वह पराजित हो गये परन्तु बाद में बंगाल से एक प्रमुख सदस्य योगेन्द्र नाथ मंडल ने उनके लिए सीट खाली की और वह संविधान सभा के सदस्य चुने गये। संविधान सभा के संविधान लिखने से पहले यह प्रश्न खड़ा हुआ कि इसकी संरचना के लिए क्या दुनिया के माने हुए संविधान विशेषज्ञों की सेवाएं ली जायें?

इसका विरोध महात्मा गांधी ने किया और सुझाव दिया कि इसे लिखने के लिए भारतीय विद्वान बाबा साहेब की सेवाएं ली जायें। गांधी की इस इच्छा के अनुरूप ही कांग्रेस पार्टी ने बाबा साहेब को संविधान लिखने का जिम्मा दिया। गांधी यह भलीभांति जानते थे कि डा. अम्बेडकर के साथ कुछ मुद्दों पर उनके मतभेद हैं। इसका प्रमाण मुम्बई में जिन्ना-पेरियार- अम्बेडकर के बीच हुई वह वार्ता थी जो सात दिनों तक चली थी। इस बैठक के समय महात्मा गांधी ने मुहम्मद अली जिन्ना को जो पत्र लिखा वह भारत के इतिहास का मील का पत्थर है जिसमें उन्होंने राय दी थी कि जिन्ना पेरियार व अम्बेडकर को कांग्रेस का मुकाबला करने के लिए अलग से एक राजनीतिक दल का गठन करना चाहिए।

गांधी चाहते थे कि अखंड भारत में यदि जिन्ना, पेरियार व अम्बेडकर की विचारधारा कांग्रेस से अलग है तो क्यों न एक राजनीतिक विकल्प खड़ा होना चाहिए, क्योंकि इन तीनों नेताओं की अपने-अपने समाज में काफी लोकप्रियता है। यदि हम वर्तमान राजनीति को देखें तो ऐसा सुझाव केवल गांधी ही दे सकते थे। इसका प्रमाण यह है कि भारत के संविधान में वही सब

कुछ लिखा गया जिसका वादा कांग्रेस पार्टी समय-समय पर करती आ रही थी। 1931 में कांग्रेस के कराची अधिवेशन में सरदार पटेल की अध्यक्षता में नागरिकों को मौलिक अधिकार देने का वादा किया गया था। अत: संविधान में बाबा साहेब ने वही लिखा जिसका वादा कांग्रेस पार्टी लोगों से लगातार करती आ रही थी।

1928 में पं. मोती लाल नेहरू की अध्यक्षता में भारत का संविधान का प्रारूप लिखने के लिए एक समिति ग ठित की गई थी जिसके सदस्य नेताजी सुभाष चन्द्र बोस से लेकर पं. जवाहर लाल नेहरू व मौलाना आजाद जैसे नेता थे। बाद में 1946 में संविधान लिखने वाले सदस्यों के लिए मोती लाल नेहरू समिति की रिपोर्ट एक मोटा खाका बनी जिसमें प्रत्येक भारतीय स्त्री-पुरुष वयस्क को इकसार रूप से मताधिकार देने की सिफारिश थी। संविधान ने भी यही लिखा। इस समिति ने एक राष्ट्र के रूप में भारत को विभिन्न अंचलों का संघ भी कहा जिसे अंग्रेजों ने अपने 1935 के 'भारत सरकार कानून' स्वीकार किया वरना इससे पहले 1919 के भारत सरकार कानून के तहत अंग्रेजों ने भारत को विभिन्न जाति-वर्गों के जमावड़े के रूप में प्रस्तुत किया था और भारत को एक संघ या ढांचे का देश नहीं माना था।

यही वजह थी कि जब भारत से पाकिस्तान को मजहब की बुनियाद पर अलग किया गया, तो भारत स्थित 'वायसराय लार्ड वावेल' ने कहा था कि भारत में सेंट्रल एसेम्बली (संविधान सभा) के चुनाव 1935 के कानून के अनुसार नहीं बल्कि 1919 के कानून के तहत कराये गये हैं अब यदि मौजूदा स्थितियों में बाबा साहेब को लेकर चले विवाद को देखा जाये तो स्पष्ट है कि हम सब भारतीयों की रगों में वही संविधान दौड़ता है जिसे बाबा साहेब ही लिखकर गये हैं मगर बाबा साहेब के मुद्दे पर वर्तमान सत्ता पक्ष व विपक्षी दलों के बीच शब्दों की तलवारें खींची हुई हैं जिसका विस्तार संसद में कुछ अप्रिय घटनाओं तक हो चुका है।

दूसरी तरफ आज भी भारत के उत्तर से लेकर दक्षिण तक में दलित जातियों के लोगों के साथ अमानवीय व्यवहार होता है। बाबा साहेब चाहते थे कि भारत से जाति प्रथा का खात्मा होना चाहिए, क्योंकि इस प्रथा के चलते आज के भारत में भी दलितों के साथ अमानवीय व्यवहार हो जाता है। अत: यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है कि बाबा साहेब ने 1926 के आसपास हिन्दू विधि पुस्तिका मनु स्मृति की प्रतियां जलाई थी। मनुस्मृति ही वह ग्रन्थ है जिसमें जाति को आधार मानकर मनुष्य-मनुष्य में भेदभाव किया गया है और स्त्री पुरुष के अधिकारों को लेकर भेदभाव किया गया है। यह भेदभाव इतना गहरा है कि इसे मिटाने के लिए भी सदियां बीत सकती हैं।

अत: बहुत जरूरी है कि दलितों को उनके सामाजिक व आर्थिक अधिकार दिलाने के लिए संविधान में लिखी व्यवस्था के अनुसार आचरण किया जाए। निश्चित रूप से यह कार्य स्वतन्त्र भारत की राजनीतिक पार्टियों को ही करना होगा, क्योंकि उन्हीं में कोई एक या अधिक दल केन्द्र की सत्ता पर काबिज होते हैं। बाबा साहेब की विरासत भी उसी तरह महत्वपूर्ण है जिस तरह महात्मा गांधी की। बाबा साहेब भारत के औद्योगीकरण के प्रति उतने ही निष्ठावान थे जितने प्रथम प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरू उन्होंने भारत की मुद्रा रुपये पर ही विदेश से अर्थशास्त्र में पीएचडी की थी। वह मानते थे कि जैसे-जैसे भारत का औद्योगीकरण होता चला जायेगा। वैसे-वैसे ही जातिगत कुंठाएं समाप्त होती चली जायेंगी, मगर आज हम उसी विरासत पर दावा करने के लिए राजनीतिक युद्ध में उलझ गये हैं।

ध्यान रखा जाना चाहिए कि अम्बेडकर किसी एक वर्ग या जाति की धरोहर नहीं है बल्कि वह उस प्रत्येक भारतीय की धरोहर हैं, जो इस भू-भाग पर रहता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि उनकी धरोहर को हथियाने के लिए भारत में कुछ राजनीतिक दल बनते-बिगड़ते रहते हैं, यदि गौर से देखें तो भारत किसी गीता, कुरान या बाइबिल के भरोसे नहीं चलता है, बल्कि अम्बेडकर द्वारा लिखे गये संविधान के अनुसार चलता है। यह गांधी का ही फैसला था कि किसी दलित जाति में ही पैदा हुए विद्वान व्यक्ति से भारत का संविधान लिखवाया जाये और इस देश से ऊंच-नीच को समाप्त किया जाये। अत: अम्बेडकर को वर्तमान भारत का पूजनीय महापंडित या महर्षि ही कहा जायेगा।

संसद में प्रियंका का अनोखा प्रदर्शन

ताक-झांक
आर.आर. जैरथ

प्रियंका गांधी का विवादित बैग जिस पर फिलिस्तीन लिखा हुआ था, कोई साधारण बैग नहीं था। यह उन्हें भारत में फिलिस्तीन के प्रभारी डॉ. अबेद एलराज़ेग जैजर ने भेंट किया था। फिलिस्तीनी राजनयिक ने उन्हें

सांसद बनने पर बधाई देने के लिए मुलाकात के दौरान यह बैग भेंट किया था। बैग पर बड़े-बड़े अक्षरों में फिलिस्तीन लिखा हुआ है और उस पर तरबूज़ अंकित है जिसे व्यापक रूप से फिलिस्तीनी मुद्दे के समर्थन के प्रतीक के रूप में पहचाना जाता है। माना जाता है कि प्रियंका ने राजनयिक से कहा कि उन्होंने हमेशा फिलिस्तीनी मुद्दे का समर्थन किया है और वे इस संदेश को संसद तक ले जाएंगी। उन्होंने संसद में वह बैग लेजाकर अपना वादा निभाया, भाजपा ने इसकी तीखी आलोचना की और उनसे पूछा कि बांग्लादेश में हिंदुओं के लिए उनका दिल क्यों नहीं पसीजता। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। अगले दिन, उन्होंने बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के समर्थन का संदेश देते हुए क्रीम रंग का बैग ले लिया। बैग पर बांग्लादेशी रंगों हरे और लाल रंग में मुट्ठी की कढ़ाई की गई थी।

यह बैग तमिलनाडु के तिरुपुर में एक कपड़ा केंद्र में लगभग रातोंरात बनाया गया था। कांग्रेस ने अपने सांसदों के लिये संसद ले जाने के लिए इन बैगों का एक बैच पहले ही मंगवा लिया था। ऐसा लगता है कि प्रियंका एक कदम आगे थीं और उन्होंने भाजपा के विरोध का अनुमान लगा लिया था। उनके पास जवाब तैयार था, लेकिन फिलिस्तीन पर अपनी बात रखने के बाद ही उन्होंने भाजपा को यह जवाब दिया।

कपूर खानदान की पीएम से मुलाकात

राज कपूर परिवार के लिए यह यादों की एक शानदार यात्रा थी, जब उन्होंने हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से ग्रेट शोमैन के शताब्दी समारोह के हिस्से के रूप में मुलाकात की। परिवार के सदस्यों ने जो कई यादें

याद कीं, उनमें 'श्री 420' का एक गाना भी शामिल था, जिसे नरगिस और राज कपूर पर फिल्माया गया था और बारिश में छतरी के नीचे बैठकर गाया गया था। राज कपूर की बेटी रीमा जैन ने गाने की मशहूर लाइनें तुम ना रहोगे, हम ना रहेंगे, याद रहेंगी निशानियां, सुनाईं। यह पीएम मोदी द्वारा राज कपूर की समृद्ध विरासत के बारे में बात करने के बाद उन्होंने सुनाया। राजकपूर परिवार के कई लोग अपने काम से कपूर खानदान की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं जिसमें से कई अभी भी फिल्मों में सुपर स्टार का दर्जा रखते हैं।

अन्य दलों के रास्ते पर अरविंद केजरीवाल

दिल्ली में दस साल तक सत्ता में रहने के बाद अरविंद केजरीवाल दूसरी पार्टियों के रास्ते अपना रहे हैं। इस बार वे दूसरी पार्टियों से आए दलबदलुओं को टिकट देने की होड़ में हैं। सबसे ज्यादा फायदा कांग्रेस के पूर्व नेताओं को हो रहा है। अब तक केजरीवाल ने अपने प्रत्याशियों की सूची में करीब आधा दर्जन पूर्व कांग्रेस नेताओं को जगह दी है। उन्होंने भाजपा से आए करीब तीन दलबदलुओं को भी टिकट दिया है। इस प्रक्रिया में उन्होंने आप के मौजूदा विधायकों को नाराज कर दिया है, जिन्हें इन निर्वाचन क्षेत्रों से टिकट नहीं दिया गया है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि ये कदम संकेत देते हैं कि केजरीवाल चिंतित हैं, खासकर हरियाणा और महाराष्ट्र में हाल ही में हुए विधानसभा चुनावों में भाजपा की शानदार जीत के बाद।

तो राहुल गांधी प्रताप सारंगी का हालचाल पूछना चाहते थे ?

यह दिलचस्प है कि कांग्रेस शीतकालीन सत्र में राजनीतिक मुद्दे उठाने के लिए बैग, कपड़े आदि का सहारा ले रही है। अगर प्रियंका गांधी फिलिस्तीन के मुद्दे पर समर्थन जताने के लिए संसद में फिलिस्तीन का बैग लेकर गईं, तो उन्होंने और उनके भाई राहुल गांधी ने उस दिन संसद को नीले रंग से रंगने का फैसला किया, जिस दिन उन्होंने बी आर अंबेडकर पर केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की टिप्पणियों के खिलाफ धरना दिया था। नीला रंग दलित आंदोलन से जुड़ा हुआ है।

राहुल गांधी ने अपनी खास सफेद टी-शर्ट को नीले रंग में बदल दिया, जबकि प्रियंका वाड्रा ने नीली साड़ी पहनी। संसद के मकर द्वार पर कांग्रेस और भाजपा सांसदों के बीच हुई हाथापाई से उठने वाले कई सवालों के जवाब इलाके के वीडियो फुटेज का अध्ययन करने के बाद सामने आएंगे। संसद और उसका परिसर पूरी तरह से वीडियो कैमरों से ढका हुआ है और कैमरे झूठ नहीं बोलते। हालांकि, एक वीडियो सामने आया है, जिसमें हाथापाई का कुछ हिस्सा

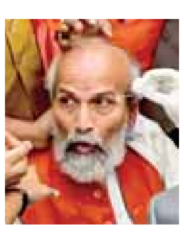

कैद है, जिसमें भाजपा सांसद प्रताप सारंगी घायल हो गए।

फुटेज देखने वाले प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि इस वीडियो से ऐसा लगता है कि सांसद को जमीन पर धकेले जाने के बाद राहुल गांधी सारंगी के पास गए। फुटेज से ऐसा लगता है कि गांधी सारंगी की चोटों के बारे में पूछना चाहते थे। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने उन पर सारंगी को धक्का देने का आरोप लगाया तो वे तुरंत वहां से चले गए। हालांकि, सच्चाई जानने के लिए इस फुटेज को संसद के कैमरों से लिए गए आधिकारिक फुटेज से मिलान करना होगा।

समान पैदावार के साथ स्वास्थ्य जोखिम कम करेगी प्राकृतिक खेती

डॉ. सत्यवान सौरभ

25 नवंबर, 2024 को भारत सरकार ने रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम करने और एक करोड़ किसानों के बीच जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन की शुरुआत की। राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन का उद्देश्य जैविक खेती की ओर बढ़ रहे किसानों को प्रशिक्षित करना और उनका समर्थन करना है, जिसमें गाय के गोबर से बनी खाद और स्थानीय स्तर पर उपलब्ध अन्य गैर-रासायनिक उर्वरकों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। हालांकि, स्वच्छ भारत मिशन के तहत शहरी अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों के साथ इसका एकीकरण कृषि और अपशिष्ट प्रबंधन दोनों में चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक अभिनव समाधान प्रदान करता है। प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों ने पारंपरिक खेती करने वालों के समान ही पैदावार की सूचना दी। कई मामलों में, प्रति फ़सल अधिक पैदावार की भी सूचना मिली। चूंकि प्राकृतिक खेती में किसी भी सिंथेटिक रसायन का उपयोग नहीं किया जाता है, इसलिए स्वास्थ्य जोखिम और खतरे समाप्त हो जाते हैं। भोजन में पोषण घनत्व अधिक होता है और इसलिए यह बेहतर स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है।

प्राकृतिक खेती बेहतर मृदा जीव विज्ञान, बेहतर कृषि जैव विविधता और बहुत कम कार्बन और नाइट्रोजन पदचिह्नों के साथ पानी का अधिक विवेकपूर्ण उपयोग सुनिश्चित करती है। प्राकृतिक खेती का उद्देश्य लागत में कमी, कम जोखिम, समान पैदावार, अंतर-फसल से आय के कारण किसानों की शुद्ध आय में वृद्धि करके खेती को व्यवहार्य और आकांक्षापूर्ण बनाना है। विभिन्न फसलों के साथ काम करके जो एक-दूसरे की मदद करते हैं और वाष्पीकरण के माध्यम से अनावश्यक पानी के नुक़सान को रोकने के लिए मिट्टी को कवर करते हैं, प्राकृतिक खेती 'प्रति बूंद फसल' की मात्रा को अनुकूलित करती है।

भारत में सालाना 5.8 करोड़ टन ठोस कचरा पैदा होता है, जिसमें 1 करोड़ टन जैविक खाद बनाने की क्षमता है। इसके बावजूद, अलग-अलग कचरे से शहरी खाद को अभी तक एकीकृत नहीं किया गया है, जो सालाना 15-20 लाख किसानों की खाद की ज़रूरतों को पूरा कर सकता है। अप्रसंस्कृत नगरपालिका अपशिष्ट अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों के पास लैंडफिल में समाप्त हो जाता है, जिससे पर्यावरण क्षरण और मीथेन उत्सर्जन होता है। शहरी स्थानीय निकाय केवल 30-40% कचरे का प्रसंस्करण करते हैं, वे अपशिष्ट प्रसंस्करण सुविधाओं को क्रियाशील रखने के लिए परिचालन सब्सिडी पर निर्भर रहते हैं।

जैविक खाद की आवश्यकता 2-3 टन प्रति एकड़ है, जो 100-150 किलोग्राम रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता से कहीं अधिक है। यह मॉडल अलग किए गए शहरी गीले कचरे को खेत की भूमि से जोड़ता है, जिससे खेतों पर सीधे खाद बनाना संभव हो जाता है। यह टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देते हुए अपशिष्ट प्रबंधन में चुनौतियों का समाधान करता है। शहरी स्थानीय निकाय अलग किए गए गीले कचरे को अपशिष्ट प्रसंस्करण संयंत्रों या लैंडफिल के बजाय सीधे खेतों में पहुंचाते हैं। किसान पारंपरिक गड्ढा खाद बनाने के तरीकों का उपयोग करते हैं, गीले कचरे को गोबर के घोल और जैव-संस्कृतियों के साथ मिलाकर 2-3 महीनों के भीतर जैविक खाद का उत्पादन करते हैं। एक लाख की आबादी वाला एक शहर प्रतिदिन 10-15 टन गीला कचरा उत्पन्न करता है, जो एक किसान के फ़सल चक्र के लिए प्रतिदिन 3 टन खाद बनाने के लिए पर्याप्त है। अपने खेतों पर निः शुल्क जैविक खाद तक पहुँच, परिवहन और इनपुट लागत में कमी।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com

स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रेस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रेस, 2-प्रिंटिंग प्रेस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रेस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

सर्दी में जरूर करनी चाहिए स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज

सर्दी के दिनों में सुबह उठना काफी मुश्किल लगता है। ठंडे मौसम में बस बाहर निकलते ही कंपकंपी होने लगती है, इसलिए मन करता है कि बस कंबल या रजाई में लिपटकर सोते रहें। हालांकि सर्दियों में ये और भी जरूरी हो जाता है कि सुबह उठकर कुछ स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज या फिर योगा किया जाए। सर्दी के दिनों में ज्यादातर लोगों का मॉर्निंग रूटीन काफी सुस्त हो जाता है और मोटे कपड़े पहनने के वजह से मूवमेंट भी उतने सुचारी रूप से नहीं हो पाते हैं। ऐसे में स्ट्रेचिंग करना बेहद जरूरी होता है। सर्दी के दिनों में सुबह उठकर स्ट्रेचिंग करने के पीछे कई वजह होती हैं। सर्दी में सुबह उठने का मन तो किसी का नहीं करता है, लेकिन कुछ देर का आराम सेहत के लिए काफी नुकसान दायक होता है। सर्दी के ठंडक भरे मौसम में भी हेल्दी रहना हो तो कुछ देर सुबह स्ट्रेचिंग करना जरूरी है. जान लें कि सर्दी के दिनों में बॉडी स्ट्रेचिंग कितनी जरूरी होती है। सर्दी में रोजाना सुबह स्ट्रेचिंग वर्कआउट करने से कई फायदे मिलते हैं तो चलिए जान लेते हैं।

ठंड से होता है बचाव

सुबह बिस्तर से निकलते वक्त भले ही आपको शरीर पर ठंड महसूस हो, लेकिन स्ट्रेचिंग वर्कआउट आपको सर्दी से बचाने का काम करता है। दरअसल जब आप स्ट्रेचिंग करते हैं तो मसल्स की ब्लड वेसल्स खुलती हैं और इससे शरीर को गर्म रखने के लिए शरीर में ब्लड सर्कुलेशन अच्छा होता है साथ ही ऑक्सीजन का प्रवाह भी बढ़ता है। इससे एनर्जी भी बूस्ट होती है और आप ज्यादा एनर्जेटिक महसूस करते हैं।

मसल्स की मोबिलिटी में होता है सुधार

सर्दी के दिनों में में लोगों को मांसपेशियों में जकड़न, दर्द की वजह से उठने-बैठने में रुकावट आना जैसी दिक्कतें होने लगती हैं। इससे बचने का सबसे बढ़िया तरीका है कि रोजाना सुबह स्ट्रेचिंग की जाए। इससे हेल्दी खिचांव आता है और मांसपेशियों और जोड़ो की मोबिलिटी बढ़ती है। दरअसल सर्दी के मौसम में स्टिफनेस बढ़ जाती है, जिससे बचने के लिए फिजिकल एक्टिविटी करते रहना जरूरी होता है।

मसल्स की रिकवरी

सर्दी के दिनों में मसल्स में सिकुड़न हो जाती है और स्ट्रेचिंग करने से मांसपेशियां लचीली बनती हैं, जिससे टूट-फूट होने का डर कम रहता है। वहीं अगर मसल्स और टिश्यूज में चोट लग भी जाती है तो भी स्ट्रेचिंग करने से जल्दी रिकवर करने में मदद मिलती है, क्योंकि इससे रक्त प्रवाह तेज होता है, जिससे न्यूट्रिशन शरीर में फैलते हैं और रिकवरी में तेजी आती है। दर्द से भी राहत मिलती है।

पोस्चर रहता है सही

बहुत सारे लोगों को आज के वक्त में खराब पोस्चर की शिकायत रहती है. दरअसल लंबे समय तक फोन चलाते रहने और एक जगह बैठकर लैपटॉप या डेस्कटॉप पर काम करने वालों में गर्दन, पीठ और शोल्डर के दर्द की समस्या देखी जाती है। इसके अलावा कंधों का झुक जाना और पीठ पीछे की ओर निकलना जैसी दिक्कतें भी होने लगती हैं। ठंडक बढ़ने पर ये दिक्कतें और भी ज्यादा ट्रिगर होती हैं, इसलिए मॉर्निंग में स्ट्रेचिंग करना जरूरी होता है।

मूड होता है बूस्ट

सर्दियां शुरू होते ही बहुत सारे लोगों को मूड खराब रहने जैसे उदास महसूस होना, एंग्जायटी महसूस होने लगती है। इससे बचने के लिए भी जरुरी है कि रोज सुबह उठकर एक्सरसाइज की जाए। इससे दिनभर आप फिजिकली के साथ ही मेंटली भी एनर्जेटिक रहेंगे और मूड बूस्ट होगा।

30 की उम्र में ही बॉडी पेन से रहते हैं परेशान तो ऐसे रखें अपना ख्याल

शरीर में ऐंठन और दर्द होना कोई बड़ी बात नहीं है, अक्सर जब हम ज्यादा चल लेते हैं,काम कर लेते हैं या बीमार होते हैं तो शरीर में दर्द और ऐंठन हो जाती है। वहीं बिना किसी थकान और बीमारी के आप अक्सर ऐंठन और मसल्स स्पैजम से परेशान रहते हैं तो इसपर ध्यान देने की जरूरत है। अक्सर 30 की उम्र में यह समस्या देखने को मिलती है। इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं। इनमें से एक जरूरी कारण है मैग्नीशियम की कमी, हम इस आर्टिकल में आपको बताएंगे कि कैसे मैग्नीशियम आपके शरीर के लिए जरूरी है और मसल्स के दर्द और ऐंठन को कम कर सकता है।

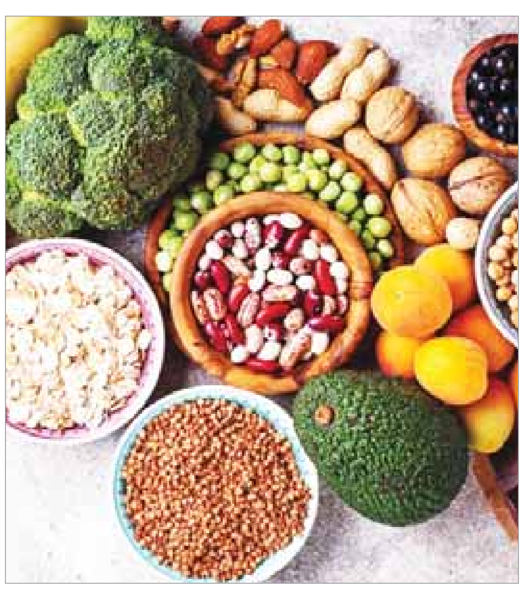

मैग्नीशियम की कमी

मैग्नीशियम एक जरूरी खनिज है जो हमारे शरीर की कई प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह मसल्स और नर्व्स के सही तरीके से काम करने के लिए जरूरी होता है। जब शरीर में मैग्नीशियम की कमी होती है तो मसल्स टाइट रह सकती है, जिसके कारण ऐंठन स्पैजम और दर्द की समस्या पैदा होती है।

मैग्नीशियम मसल्स को रिलैक्स करने में मदद करता है, जब हमारी मसल्स सिकुड़ती है तो उसके बाद उन्हें रिलैक्स होने की जरूरत होती है। मैग्नीशियम इस प्रक्रिया में मदद करता है, वहीं जब शरीर में मैग्नीशियम की कमी होती है तो मसल्स रिलैक्स नहीं हो पाती और लगातार टाइट बनी रहती है।

मैग्निशियम, कैलशियम और पोटेशियम जैसे इलेक्ट्रोलाइट्स के बैलेंस को बनाए रखने में मदद करता है। यह सभी इलेक्ट्रोलाइट्स मसल्स के सही तरीके से काम करने के लिए जिम्मेदार होते हैं। अगर इनका बैलेंस सही नहीं होता है तो इससे मसल्स की फंक्शन प्रभावित होती है जिसे दर्द और ऐंठन जैसी समस्याएं होती है।

मैग्नीशियम की कमी को ऐसे करें पूरी

कद्दू के बीज,डार्क चॉकलेट,ब्राउन राइस,एवोकाडो चिकपीस,काजू,पलक,केला,दाल,अंजीर

ठंड में ज्यादा देर धूप में बैठते हैं तो हो जाएं सावधान

सर्दियों की ठंडी धूप सभी को सुहानी लगती है। अक्सर लोग ठंड से बचने के लिए घंटों धूप में बैठना पसंद करते हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं कि ज्यादा देर तक धूप में बैठने से आपकी त्वचा को गंभीर नुकसान हो सकता है? यही आदत स्किन कैंसर जैसी घातक बीमारी का कारण बन सकती है।

सूर्य की तेज पराबैंगनी किरणें स्किन के सेल्स को नुकसान पहुंचा सकती हैं। यह नुकसान न केवल त्वचा को समय से पहले बूढ़ा बना सकता है, बल्कि स्किन कैंसर का खतरा भी बढ़ा सकता है। विशेषज्ञों के मुताबिक, यूवी किरणें त्वचा की सबसे ऊपरी परत (स्ट्रेटम कॉर्नियम) को कमजोर कर देती हैं, जिससे सनबर्न और कैंसर का खतरा बढ़ जाता है।

स्किन कैंसर के प्रकार

बेसल सेल कार्सिनोमा–यह त्वचा कैंसर का सबसे आम प्रकार है और आमतौर पर चेहरा और हाथ जैसे सूर्य की किरणों के संपर्क में आने वाले हिस्सों को प्रभावित करता है।

स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा– यह भी सूरज के संपर्क में आने वाली त्वचा पर विकसित होता है और अक्सर चेहरे, कान, होंठ और हाथों पर दिखाई देता है।

मेलेनोमा–यह त्वचा कैंसर का सबसे घातक रूप है। यह मौजूदा तिल में विकसित हो सकता है और तेजी से शरीर के अन्य भागों में फैल सकता है।

गुणों का खजाना है खट्टी-मीठी इमली

खट्टी-मीठी इमली का नाम सुनते ही लोगों की बचपन की यादें ताजा हो जाती है। हम सभी ने अपने बचपन में कभी न कभी चटकारे लेकर इमली खाई होगी। इमली कई सारे व्यंजनों को बनाने के लिए भी इस्तेमाल की जाती है। स्वादिष्ट लगने वाली इमली हमारी सेहत के लिए भी कई तरीके से फायदेमंद होती है। इसे खाने के सेहत को कई लाभ मिलते हैं। यह सुपरफूड कई आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर है, जो आपके पूरे स्वास्थ्य को एक से अधिक तरीकों से लाभ पहुंचा सकता है।

आइए जानते हैं इसके कुछ फायदे–

इम्युनिटी बढ़ाने में मददगार

इमली में कई ऐसे गुण होते हैं, जो आपकी इम्युनिटी को मजबूत करने में मदद करती है। इसमें मौजूद विटामिन सी, एंटीऑक्सिडेंट, फ्लेवोनोइड, कैरोटीन और अन्य पोषक तत्व आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए काफी अच्छे माने जाते हैं।

दिल के लिए फायदेमंद

पोटेशियम नेचुरल तरीके से ब्लड प्रेशर को कम करने में मदद कर सकता है। इमली पोटेशियम के साथ-साथ मैग्नीशियम भी भारी मात्रा में पाया जाता है, जो आपको ब्लड प्रेशर मेंटेन रखने में मदद कर सकता है। इसके अलावा इसमें फ्लेवोनोइड्स जैसे पॉलीफेनोल्स भी होते हैं, जो कोलेस्ट्रॉल के लेवल को नियंत्रित करने में मदद कर सकते हैं।

एंटी-फंगल गुण से भरपूर

इमली एंटी-फंगल गुणों से भी भरपूर होती है। दरअसल, इसमें टैमारिनडीनल नामक एक कंपाउंड पाया जाता है, जो एंटीफंगल गुणों से भरपूर होता है।

गट हेल्थ के लिए गुणकारी

विशेषज्ञों के मुताबिक इमली टॉनिक, वातनाशक, एंटीसेप्टिक, सफाई एजेंट और ज्वरनाशक के रूप में कार्य करती है। अपने इन्हीं गुणों की वजह से यह आंतों की कार्यप्रणाली और पाचन को बेहतर बनाने में मददगार है।

अब दानियों के अनुरोध पर 'एक मिशन एक सेवा' का प्रकाशन प्रतिदिन किया जा रहा है ताकि दानदाता अपने प्रियजनों के जन्मदिन, पुण्यतिथि, वैवाहिक वर्षगांठ या किसी खास मौके की तिथि विशेष पर अपनी इच्छानुसार दान राशि प्रकाशित करा सकें।

एक मिशन एक सेवा

पंजाब केसरी दैनिक समाचार पत्र समूह 2000 रु.

दानियों के लिए विशेष सूचना

वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब के लिए दान देने वाले सज्जन अब देशभर में **पंजाब नैशनल बैंक** की किसी भी शाखा में जाकर सहायता राशि जमा करवा सकते हैं, इसके लिए ध्यान रखें कि उक्त राशि **वृद्ध केसरी, रोमेश चंद्र ट्रस्ट के अकाऊंट नंबर** 3075002102006705 में देय होनी चाहिए। हमारा अनुरोध है कि सहायता राशि जमा करवाने के बाद हमें सूचित जरूर करें, ताकि रसीद भेजी जा सके। यह राशि आयकर छूट प्राप्त है। **जो सज्जन पंजाब नैशनल बैंक की किसी शाखा में नकद राशि जमा कराएं, वे बैंक की रसीद हमें कोरियर करा दें, ताकि आपको हम रसीद भेज सकें। सभी दानकर्ताओं से अनुरोध है कि दान भेजते समय पूरा पता, टेलीफोन नंबर और पैन कार्ड नंबर भी साथ में लिखें।**

दिल्ली के बाहर के दानकर्ता 500/- रुपए से कम की दानराशि कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर से ही भेजें

कृपया अपना ड्राफ्ट या चैक **वृद्ध केसरी रोमेश चंद्र ट्रस्ट**, के नाम बना कर हमें भेजें। सभी दानी सज्जनों के नाम प्रति दिन प्रकाशित किए जाएंगे। लेकिन फोटो 5100/- या इससे अधिक की दान राशि देने वाले सज्जनों के प्रकाशित किए जाएंगे। दान के लिए पंजाब केसरी कार्यालय में प्रात: 10 से 5.30 बजे तक सम्पर्क करें।

*** यह राशि आयकर कानून की धारा 80-जी के अन्तर्गत करमुक्त है!**

पता :- वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब
2, प्रिंटिंग प्रेस काम्प्लेक्स, नियर वजीरपुर डिपो, दिल्ली-35

दान के लिए कृपया 01130712376, 09871598497, 9810107375 पर संपर्क करें। यदि कोई सज्जन या संस्था हमारे नाम से पैसा इकट्ठा करे तो इसका जिम्मेदार वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब नहीं होगा।

सिर में होने वाली जूं भी बन सकती है बीमारी की वजह

बचपन में जब सिर में जूं हो जाती थी, तो वो खुजली और खरोच तो आपको भी शायद अब तक याद होगी। सिर खुजलाते-खुजलाते कई बार तो खून भी निकल आता था और फिर उसका दर्द... ! एक ताजा स्टडी के मुताबिक, सिर की जूं एक दुनियाभर में एक बड़ी समस्या बनती जा रही है, जिसके पीछे सबसे बड़ा कारण है सेल्फी लेने का चलन। हेड-टू-हेड संपर्क के कारण जूं एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में तेजी से फैल रही हैं। खासकर बच्चों में यह समस्या बहुत आम है, क्योंकि वे एक-दूसरे के बहुत करीब रहते हैं। भारत में तो सितंबर से दिसंबर तक जूं का मौसम होता है, जिसमें जूं तेजी से पनपती हैं। आइए जानते हैं इससे निपटने के कुछ असरदार तरीके-

जूं

जूं छोटे और बिना पंख वाले कीड़े होते हैं जो बालों में रहकर खून चूसते हैं। यह आमतौर पर सिर या शरीर के ऐसे हिस्सों में पाई जा सकती है जहां बालों की ग्रोथ ज्यादा होती है। जूं के अंडों को लिंट कहा जाता है जो बालों से चिपके रहते हैं।

इस बीमारी की वजह बन सकती है जूं

जूं से होने वाली बीमारियां आम तौर पर गंभीर नहीं होती हैं, लेकिन कुछ मामलों में यह इन्फेक्शन का कारण बन सकती हैं। खासकर जब जूं वाली जगह को बार-बार खुरचा जाता है तो उसमें बैक्टीरिया घुसने का खतरा बढ़ जाता है, जिससे त्वचा में इन्फेक्शन हो सकता है। इसके अलावा, जूं के काटने से एलर्जिक रिएक्शन भी हो सकता है।

छोटे बच्चों में जूं

क्या आपने कभी सोचा है कि छोटे बच्चों में जूं इतनी आम क्यों हैं? इसका सीधा संबंध बच्चों की खेलने-कूदने वाली जिंदगी से है। स्कूल, पार्क या दोस्तों के घर, ये सभी जगहें जूं के फैलने के लिए उपयुक्त माहौल देती हैं। जब बच्चे एक-दूसरे के बालों में उलझ जाते हैं या अपनी चीजें शेयर करते हैं, तो जूं एक बच्चे से दूसरे बच्चे में आसानी से पहुंच जाती हैं। माता-पिता के लिए यह जानना जरूरी है कि जूं किसी की साफ-सफाई पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह एक बच्चे से दूसरे बच्चे में फैलने वाली समस्या है।

जूं से होने वाली बीमारियों के लक्षण

खुजली– जूं के काटने से सबसे आम लक्षण है तेज खुजली।

लाल दाने– जूं के काटने से त्वचा पर छोटे-छोटे लाल दाने हो सकते हैं।

सूजन– कभी-कभी जूं के काटने से त्वचा में सूजन भी हो सकती है।

बालों का झड़ना– अगर जूं की समस्या लंबे समय तक रहे तो बालों का झड़ना भी शुरू हो सकता है।

स्किन इन्फेक्शन– अगर जूं वाली जगह को बार-बार खुरचा जाए तो उसमें बैक्टीरिया घुसने का खतरा बढ़ जाता है, जिससे त्वचा में इन्फेक्शन हो सकता है।

जूं से बचाव के तरीके

साफ-सफाई का ख्याल–नियमित रूप से बालों को धोएं और कंघी करें।

सामान शेयर न करें– कंघी, टोपी और तौलिए जैसी चीजें दूसरों के साथ शेयर न करें।

जूंनाशक दवाओं का इस्तेमाल– अगर जूं की समस्या हो तो डॉक्टर की सलाह पर जूं मारने वाली दवाओं का इस्तेमाल करें।

घर की सफाई– जूं से प्रभावित व्यक्ति के कपड़े, बिस्तर आदि को गर्म पानी से धोएं और हाई टेम्प्रेचर पर सुखाएं।

जूं के अंडे (लिंट) को बालों से हटाना मुश्किल होता है।

जूं मारने वाली दवाओं का इस्तेमाल करते समय इसपर लिखे निर्देशों का पालन जरूर करें।

डिजिटल बर्नआउट को दूर करने के लिए अपनाएं ये तरीके

आज के समय में स्क्रीन के बिना जिन्दगी के बारे में सोचना भी लगभग नामुमकिन सा लगता है। दिन की शुरुआत से ही हमारे फोन में कई तरह के नोटिफिकेशन आने लगते हैं। ऑफिस में स्क्रीन पर लगातार काम करने से लेकर जूम मीटिंग तक, हमें मेंटली काफी थका देती हैं। यहां तक कि हम अपने एंटरटेनमेंट के लिए भी स्क्रीन का ही रुख सकते हैं। रात को सोने से पहले अधिकतर लोगों का जो आखिरी काम होता है, वह है सोशल मीडिया ऐप्स पर वक्त बिताना। इस तरह उनका पूरा दिन स्क्रीन पर ही गुजर जाता है।

लेकिन लगातार स्क्रीन कहीं ना कहीं डिजिटल बर्नआउट की वजह बन सकती है। जिससे आपको ना केवल बेवजह मूड स्विंग्स बल्कि थकान व प्रोडक्टिविटी कम होना जैसी कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। स्क्रीन से पूरी तरह से दूरी बना पाना तो संभव नहीं है, लेकिन फिर भी डिजिटल बर्नआउट को रोकने के लिए आप कुछ आसान उपायों का सहारा ले सकते हैं। तो चलिए आज हम आपको ऐसे ही कुछ तरीकों के बारे में बता रहे हैं-

करें डिजिटल डिटॉक्स

डिजिटल बर्नआउट को दूर करने का सबसे आसान लेकिन प्रभावी तरीका है डिजिटल डिटॉक्स करना। मसलन, आप कुछ वक्त के लिए स्क्रीन से थोड़ ब्रेक लें। इससे आपके दिमाग को थोड़ा रिलैक्स मिलता है और आप फिर से खुद को चार्ज फील करते हैं। इस दौरान आप ऐसी किसी एक्टिविटी को करें, जो पूरी तरह से स्क्रीन फ्री हो। आप चाहें तो वॉक पर जा सकते हैं या फिर कुकिंग कर सकते हैं या फिर एक नैप भी ले सकते हैं।

डिजिटल बर्नआउट की एक मुख्य वजह यह भी है कि हम सभी ने अपनी जिन्दगी को स्क्रीन तक सीमित कर लिया है। शॉपिंग से लेकर दोस्तों से बात करने तक, हम स्क्रीन का ही सहारा लेते हैं। जिसकी वजह से इसका इस्तेमाल जरूरत से ज्यादा होने लगा है। लेकिन यहां आपको यह समझने की जरूरत है कि सोशल मीडिया असली सोशलाइज़िंग का रिप्लेसमेंट नहीं है। डिजिटल बर्नआउट को दूर करने के लिए आप टेक्स्ट करने के बजाय फ्रेंड्स को कॉल करो। दोस्तों और फैमिली के साथ हैंगआउट प्लान करो।

अच्छी नींद लें

डिजिटल बर्नआउट को रोकने के लिए नींद एक दवा की तरह काम करती है। स्क्रीन का ब्लू लाइट आपकी नींद खराब करता है क्योंकि ये नींद लाने वाला हार्मोन अर्थात् मेलाटोनिन को कम करता है। खराब नींद स्ट्रेस को बढ़ाती है। इसलिए, अच्छी नींद लेने की कोशिश करें। अगर स्क्रीन देख रहे हैं तो ब्लू लाइट-ब्लॉकिंग ग्लासेस का इस्तेमाल करें। इसके अलावा, अपने बेडरूम को स्क्रीन-फ्री जोन बनाएं। सोने से पहले फोन स्क्रीन करने की जगह मेडिटेशन करें।

केसरी सूडोकू- 3019

			3	5		6		
		1	2		7			
5				6			1	
	7						2	6
4		6				9		7
3	2						5	
	6			3				2
			6		4	7		
		4		1	2			

हल करने का तरीका

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है।
- आड़ी व खड़ी पंक्ति में और 3x3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सूडोकू 3018 का हल

8	6	7	2	9	3	5	1	4
9	1	4	5	8	7	6	3	2
5	3	2	4	1	6	8	7	9
3	5	8	6	2	9	7	4	1
2	7	9	8	4	1	3	5	6
6	4	1	3	7	5	2	9	8
7	2	6	9	3	4	1	8	5
1	9	5	7	6	8	4	2	3
4	8	3	1	5	2	9	6	7

सर्दियों में गंभीर हो सकते हैं थाइरॉइड के लक्षण

L

यदि आप हाइपोथायराइडिज्म के शिकार हैं और थायराइड की दवाओं का सेवन करते हैं, तो इसके साथ आपको दिनचर्या को ठीक रखना भी जरूरी हो जाता है। ऐसे लोगों को डॉक्टर की सलाह पर बचाव के लिए सभी आवश्यक उपाय जरूर करते रहने चाहिए।

धूप में बिताएं समय

थाइरॉइड की जटिलताओं को कम करने के लिए धूप में समय बिताना फायदेमंद माना जाता है। सूर्य के संपर्क में रहने से शरीर को विटामिन-डी प्राप्त होता है जो इस तरह की समस्याओं को कम करने में आपके लिए लाभकारी है। रोजाना 20-30 मिनट सूर्य के प्रकाश में बैठना थाइरॉइड की जटिलताओं को कम करने के साथ थकान और अवसाद को दूर करने में भी लाभकारी है। हड्डियों को स्वस्थ रखने में भी इससे लाभ पाया जा सकता है।

सर्दियों का यह मौसम सेहत के लिए कई प्रकार से चुनौतीपूर्ण माना जाता है। सभी लोगों को इसमें विशेष सावधानी और सतर्कता बरतते रहने की आवश्यकता होती है। कुछ बीमारियों के शिकार लोगों के लिए यह मौसम जटिलताओं को बढ़ाने वाला माना जाता है- थाइरॉइड की समस्या उनमें से एक है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, ठंड के मौसम में स्वाभाविक रूप से थाइरॉइड ग्रंथि के लिए सामान्य कामकाज करना कठिन हो जाता है। ऐसे में आपको विकारों से संबंधित गंभीर जटिलताएं हो सकती हैं, जिसको लेकर सभी लोगों को ध्यान देते रहने की आवश्यकता है।

सर्दियों का यह मौसम सेहत के लिए कई प्रकार से चुनौतीपूर्ण माना जाता है। सभी लोगों को इसमें विशेष सावधानी और सतर्कता बरतते रहने की आवश्यकता होती है। कुछ बीमारियों के शिकार लोगों के लिए यह मौसम जटिलताओं को बढ़ाने वाला माना जाता है- थाइरॉइड की समस्या उनमें से एक है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, ठंड के मौसम में स्वाभाविक रूप से थाइरॉइड ग्रंथि के लिए सामान्य कामकाज करना कठिन हो जाता है। ऐसे में आपको विकारों से संबंधित गंभीर जटिलताएं हो सकती हैं, जिसको लेकर सभी लोगों को ध्यान देते रहने की आवश्यकता है।

ठंड में बढ़ा देती है थाइरॉइड की जटिलताएं

ठंड के मौसम में थायरॉयड उत्तेजक हार्मोन के स्तर को प्रभावित करता है, जिससे इसमें वृद्धि आ जाती है। यदि आप हाइपोथायरायडिज्म के शिकार हैं और थायराइड की दवाओं का सेवन करते हैं, तो इसके साथ आपको दिनचर्या को ठीक रखना भी जरूरी हो जाता है। ऐसे लोगों को डॉक्टर की सलाह पर बचाव के लिए सभी आवश्यक उपाय जरूर करते रहने चाहिए। टीएसएच हार्मोन के स्तर में होने वाली वृद्धि के कारण कई तरह की स्वास्थ्य जटिलताएं हो सकती हैं, इसमें अधिक थकान महसूस होने, अवसाद, ब्रेन फॉग और वजन बढ़ने का जोखिम अधिक देखा जाता रहा है। स्थिति के सही निदान और समस्या के बारे में जानकारी के लिए डॉक्टर से संपर्क में रहें। वास्तविक स्थिति के लिए नियमित जांच और रक्त स्तर की जांच करवाएं, इसी के आधार पर डॉक्टर दवाइयों को समायोजित करते हैं।

शरीर को ठंड से बचाने के साथ दिनचर्या को ठीक रखना भी जटिलताओं के जोखिम को कम करने के लिए आवश्यक माना जाता है।

ऐसे करें बचाव

नियमित व्यायाम जरूरी

संपूर्ण स्वास्थ्य को बेहतर रखने के लिए विशेषज्ञ सभी लोगों को दिनचर्या में योगासनों-व्यायाम को शामिल करने की सलाह देते हैं। शरीर को सक्रिय रखने और नियमित व्यायाम की दिनचर्या बनाने से थाइरॉइड विकारों में भी लाभ पाया जा सकता है। योग न सिर्फ मानसिक स्वास्थ्य को ठीक रखने में मदद करते हैं, साथ ही इसके नियमित अभ्यास से कई प्रकार की बीमारियों के जोखिमों को कम करने में भी लाभ मिलता है।

चाय, सिगरेट की जोड़ी सेहत को कर सकती है बर्बाद

चाय के साथ सिगरेट पीना कई लोगों के लिए आदत बन चुका है। खासतौर पर ठंड के दिनों में ऐसे लोग इसका सेवन खूब करते नजर आते हैं। एक कप गरम चाय और सिगरेट की कश से कुछ लोगों को ताजगी और राहत का अहसास होता है। हालांकि, वह यह नहीं जानते कि चाय और सिगरेट का यह कॉम्बिनेशन सेहत के लिए कितना हानिकारक हो सकता है।

हेल्थ एक्सपर्ट के अनुसार, चाय और सिगरेट का एक साथ सेवन करने से कई स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप भी ऐसे लोगों में शामिल हैं, तो समय रहते इस आदत को सुधार लें। वरना हाल कितना बुरा हो सकता है इस लेख की मदद से जान लें-

पेट की परेशानी

चाय में कैफीन होता है, जो एक टॉनिक के रूप में काम करता है। यह पाचन तंत्र पर असर डालता है और आंतों के सिकुड़न को बढ़ाता है, जिससे मल त्याग में आसानी होती है। हालांकि, चाय के अत्यधिक सेवन से शरीर में पानी की कमी हो सकती है, जिससे कब्ज और अन्य पाचन संबंधी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

आंतों में सूजन

चाय के अत्यधिक सेवन से पेट में जलन और सूजन भी हो सकती है। अगर आप लैक्टोज असहिष्णु हैं, तो चाय और सिगरेट का संयोजन और भी समस्याएं पैदा कर सकता है, जैसे कि सूजन और पेट की गैस।

सिगरेट का प्रभाव

सिगरेट में मौजूद निकोटीन नर्वस सिस्टम को उत्तेजित करता है और आंतों की गतिविधि को भी प्रभावित करता है। निकोटीन आंतों में ब्लड सर्कुलेशन को कम करता है, जिससे उनके कार्य करने की क्षमता में कमी आती है। लगातार सिगरेट पीने से आंतों के माइक्रोबायोटा का संतुलन भी बिगड़ सकता है, जिससे पाचन प्रक्रिया प्रभावित होती है।

खाना खाते समय आपका बच्चा भी देखता है फोन तो हो सकता है गंभीर बीमारियों का शिकार

बच्चा आसानी से खाना खा ले इसलिए माता-पिता उसको फोन दिखाकर खाना खिलाते हैं, लेकिन धीरे-धीरे ये बच्चे की आदत बन जाती है। ऐसी आदत की फोन देखे बिना खाना खाना मुश्किल हो जाता है, लेकिन बच्चे की ये हैबिट उसकी सेहत के लिए काफी खतरनाक हो सकती है। इससे बच्चे को कई बीमारियों का खतरा रहता है। बच्चा जब मोबाइल देखकर खाना खाता है तो वह ओवरईटिंग या अंडरईटिंग करता है। यानी या तो भूख से कम खाता है या ज्यादा खाता है।

ज्यादा खाता है तो मोटापे का शिकार हो सकता है और कम खाता है तो कुपोषित होने का खतरा रहता है। फोन देखते समय बच्चा खाना चबाता नहीं है बल्कि मुंह में ही निगल लेता है। इससे मेटाबॉलिज्म कमजोर होता है।

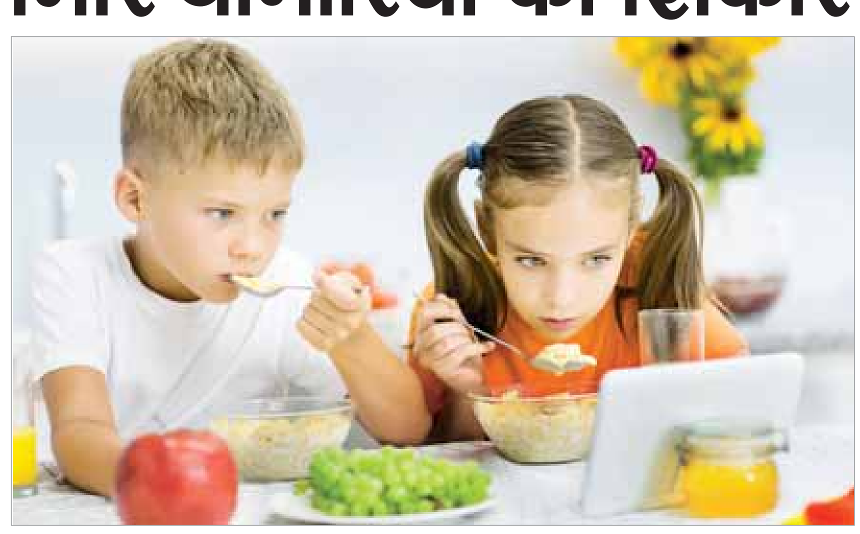

पाचन संबंधी समस्याएं

हैल्थ एक्सपर्ट की माने तो खाना खाते समय फोन देखने से बच्चों का पाचन तंत्र खराब हो सकता है, जिससे पाचन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि फोन देखने के दौरान बच्चा ज्यादा खाता है या कम खाता है। इससे अपच और गैस की समस्या हो सकती है। जो पाचन तंत्र को खराब कर सकता है।

तनाव और चिंता

खाना खाते समय फोन देखने से बच्चे की मानसिक सेहत खराब हो सकती है। ऐसा इसलिए क्योंकि फोन देखने के दौरान बच्चा सही प्रकार से भोजन नहीं करता है। इससे शरीर को पोषण नहीं मिलता है और हार्मोन लेवल बिगड़ सकते हैं। जो खराब मेंटल हेल्थ का एक कारण बन सकते हैं।

सर्दियों में ठंडे-ठंडे पानी से नहाने से मिलते हैं गजब के फायदे

सर्दियों के मौसम में अक्सर लोग गर्म पानी से नहाना करना पसंद करते हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं कि ठंडे पानी से नहाने के भी कई स्वास्थ्य लाभ होते हैं? ठंडे पानी से नहाना आपकी सेहत को कई तरह से फायदा पहुंचा सकता है। चलिए जानते हैं कि इसके क्या-क्या फायदे होते हैं।

तनाव को कम करता है ठंडे पानी से स्नान करने से मानसिक तनाव कम होता है और मूड बेहतर होता है। यह दिमाग को ताजगी और ऊर्जा प्रदान करता है, जिससे दिनभर की थकान और तनाव से राहत मिलती है। अगर आप मानसिक दबाव महसूस कर रहे हैं, तो ठंडे पानी से स्नान करने से आपको मानसिक शांति मिल सकती है।

त्वचा और बालों के लिए फायदेमंद ठंडे पानी से नहाने से त्वचा ड्राई नहीं होती। ठंडा पानी से त्वचा पर तेल और गंदगी जमा नहीं होती और मुंहासे जैसी समस्याएं कम होती हैं। इसके अलावा, ठंडा पानी बालों बालों में चमक लाता है। 3. नींद में सुधार ठंडे पानी से नहाने से नींद की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है। यह शरीर के तापमान को नियंत्रित करता है और शरीर को आराम करने में मदद करता है, जिससे रात को गहरी नींद आने की संभावना बढ़ जाती है।

दिल के लिए फायदेमंद ठंडा पानी नहाने से ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता। यह हृदय को मजबूत करता है और ब्लड सर्कुलेशन को नॉर्मल में मदद करता है। लेकिन यह ध्यान रखना जरूरी है कि हृदय रोग से पीड़ित लोगों को ठंडे पानी से नहाने से पहले डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। 5. मांसपेशियों को आराम मिलता है अगर आप शारीरिक मेहनत करते हैं या कसरत करते हैं, तो ठंडे पानी से नहाने से मांसपेशियों को आराम मिलता है और दर्द में कमी आती है। यह मांसपेशियों में सूजन को कम करने में मदद करता है और रिकवरी प्रक्रिया को तेज करता है। ठंडा पानी रक्त संचार को बढ़ाता है, जिससे मांसपेशियों की थकान और दर्द से राहत मिलती है।

कभी-कभार मीठा खाने से दिल की सेहत हो सकती है बेहतर

चीनी का अधिक सेवन हानिकारक है, लेकिन कभी-कभार मीठा खाने से दिल की सेहत बेहतर हो सकती है। एक नए अध्ययन के अनुसार, मीठे पेय पदार्थ दिल की सेहत के लिए जोखिम बढ़ाते हैं, लेकिन कभी-कभार मीठा नाश्ता करना फायदेमंद हो सकता है।

डॉ. अशोक झिंगन

पीयर-रिव्यू जर्नल फ्रंटियर्स इन पब्लिक हेल्थ में प्रकाशित अध्ययन से पता चला है कि चीनी-मीठे पेय पदार्थ पीने से स्ट्रोक, हार्ट फेलियर और एट्रियल फाइब्रिलेशन जैसी हृदय संबंधी बीमारियों का जोखिम बढ़ जाता है।

दूसरी ओर, जो लोग कभी-कभार मीठा नाश्ता जैसे पेस्ट्री या शहद से बने व्यंजन खाते हैं, उनमें उन लोगों की तुलना में हृदय रोग का जोखिम कम होता है जो चीनी से पूरी तरह परहेज करते हैं।

शोध में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि आप कितनी चीनी खाते हैं, यह मायने नहीं रखता, बल्कि यह कहां से आता है और यह आपकी जीवनशैली में कैसे फिट बैठता है, इससे फर्क पड़ता है।

फिजी सोडा जैसे मीठे पेय विशेष रूप से खतरनाक पाए गए।

इनसे इस्केमिक स्ट्रोक, हार्ट फेलियर, एट्रियल फाइब्रिलेशन और एब्डॉमिनल एओर्टिक एन्यूरिज्म का जोखिम काफी बढ़ जाता है।

-तरल ब्लड शुगर अक्सर भूख को संतुष्ट करने में विफल रहती है, जिससे अधिक खपत हो सकती है।

-पाचन तंत्र में तरल ब्लड शुगर अधिक तेजी से अवशोषित होती है।

-सोडा, ऊर्जा पेय, और मीठी चाय या कॉफी - यह कहते हुए कि इन पेय पदार्थों में उच्च ग्लाइसेमिक इंडेक्स होता है, जिसका अर्थ है कि वेब्लड शुगर के स्तर को तेज़ी से बढ़ाते हैं।

-इससे इंसुलिन में भी वृद्धि होती है, जो कोशिकाओं को ग्लूकोज को अवशोषित करने में मदद करने के लिए जिम्मेदार हार्मोन है।

-उच्च-चीनी पेय का सेवन आपके शरीर की शुगर के उच्च प्रवाह को संभालने की क्षमता को प्रभावित कर सकता है।

-यह इंसुलिन में योगदान देता है जो एक ऐसी स्थिति है जहां आपके शरीर की कोशिकाएं इस हार्मोन के प्रति अपनी प्रतिक्रिया खो देती हैं।

-समय के साथ, इसका परिणाम बिगड़ा हुआ ग्लूकोज चयापचय हो सकता है, जो वसा भंडारण, सूजन और रक्त वाहिकाओं को नुकसान से जुड़ा हुआ है - हृदय रोग के लिए सभी जोखिम कारक है।

इसके विपरीत, मीठे व्यंजनों का सेवन आमतौर पर संयम से और अक्सर सामाजिक सेटिंग्स में किया जाता है। कभी-कभार खाने से इस तरह की स्थिति पैदा नहीं होती है।

Price Rs. 4.50 (वार्षिक शुल्क 1980 रुपए डाक द्वारा) PunjabKesari.com PunjabKesari.com @punjabkesaricom
पंजाब केसरी DELHI
R.N.I. No. 404 74/83, Postal Regn.No. DL(N)/0169/2018-20, Posted at Delhi RMS Delhi-6

ग्लोबल Window

दिसंबर तनाव और अव्यवस्था दूर करने का समय : उर्मिला

मुंबई, (आईएएनएस) : अभिनेत्री उर्मिला मातोंडकर का कहना है कि चूंकि यह दिसंबर है, इसलिए यह समय तनाव और अव्यवस्था को दूर करने का समय है। उर्मिला ने इंस्टाग्राम पर एक तस्वीर साझा की, जिसमें वह पार्क में बैठकर ध्यान लगाती नजर आईं। सोशल मीडिया पर सक्रिय रहने वाली अभिनेत्री उर्मिला अक्सर अपने पोस्ट साझा करती रहती हैं। उन्होंने ताजा पोस्ट में कहा कि नए साल का जश्न मनाने का सबसे अच्छा तरीका आंतरिक शांति लाना है। अभिनेत्री ने कैप्शन में लिखा, सुप्रभात, चूंकि यह दिसंबर है, तनाव दूर करने और अव्यवस्था दूर करने का समय है। नए साल के लिए तैयार होने का इससे बेहतर तरीका और क्या हो सकता है कि आप आंतरिक शांति लाएं और अपने शरीर और आत्मा से जुड़ें। अभिनेत्री ने आगे लिखा, हमारे आस-पास मौजूद सकारात्मकता और अच्छाइयों को महसूस करें। हर समय आभारी, सहानुभूतिपूर्ण बनने की कोशिश करें।

रूस और यूक्रेन ने एक दूसरे पर की मिसाइलों की बारिश

कीव में एक की मौत, 9 घायल, 630 आवासीय इमारतों को नुकसान

कीव, (एपी): रूस ने शुक्रवार तड़के यूक्रेन की राजधानी कीव पर बैलिस्टिक मिसाइल से हमला किया, जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई जबकि नौ अन्य घायल हो गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। दूसरी ओर, रूस ने कहा कि यूक्रेन के हमले के जवाब में यह कार्रवाई की गई है। कीव में सूर्योदय से ठीक पहले कम से कम तीन धमाकों की आवाज सुनाई दी। मिसाइल हमले से तीन जिलों में नुकसान हुआ और आग लग गई। शहर के प्रशासन ने यह जानकारी दी । प्रशासन ने कहा कि इस हमले में 630 आवासीय इमारतों, 16 चिकित्सा केंद्रों और 30 स्कूलों को नुकसान हुआ। रूसी रक्षा मंत्रालय ने कहा कि यह हमला दो दिन पहले रोस्तोव सीमा क्षेत्र पर यूक्रेनी मिसाइल हमले के जवाब में

- 16 चिकित्सा केंद्रों और 30 स्कूलों को भी नुकसान, रूस ने कहा यूक्रेन के हमले का बदला लिया

किया गया। रूस के अनुसार, यूक्रेन ने हमले में अमेरिका में निर्मित छह 'आर्मी टैक्टिकल मिसाइल सिस्टम" मिसाइलों और ब्रिटेन से मिलीं चार 'स्टॉर्म शैडो एयर-लॉन्च' मिसाइलों का इस्तेमाल किया था।

यूनान में एक बार फिर पलटी नौका, 8 लोगों की मौत

एथेंस, (एपी): प्रवासियों को ले जा रही एक नौका शुक्रवार सुबह पूर्वी द्वीप रोड्स के निकट पलट गई, जिसमें आठ लोगों की मौत हो गई और 18 को बचा लिया गया। यूनान के अधिकारियों ने यह जानकारी दी। तट रक्षक बल ने कहा कि यह घटना उस समय हुई, जब नौका गश्ती जहाज से बचने का प्रयास कर रही थी। इसने बताया कि नौका पलटने की घटना के कारण प्रवासी समुद्र में गिर गए। अधिकारियों ने बताया कि तट

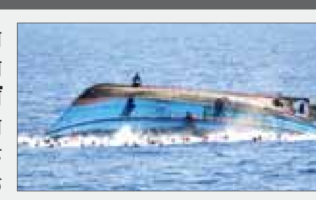

रक्षक जहाजों और एक हेलीकॉप्टर की मदद से बचाव अभियान जारी है। रोड्स, तुर्किये के तट के निकट स्थित कई बड़े ग्रीक द्वीपों में से एक है और तस्कर अक्सर इसके जलमार्ग का इस्तेमाल करते हैं। पिछले सप्ताह प्रवासियों से जुड़ी यह ऐसी दूसरी घटना है। सप्ताहांत में क्रीट द्वीप के दक्षिण में एक नाव के आंशिक रूप से डूबने से सात प्रवासियों की मौत हो गई थी तथा कई लोगों के लापता होने की आशंका है।

स्पोर्ट्स राउंडअप

'भारत के सुमित नागल ने विश्व टेनिस लीग के तीसरे मैच में टीएसएल हॉक्स की ऑनरएफएक्स ईगल्स पर 21-14 की जीत में अहम भूमिका अदा की। हॉक्स ने शानदार वापसी की जिसमें नागल ने पुरुष एकल और युगल में महत्वपूर्ण योगदान दिया और अपनी टीम को सत्र की पहली जीत दिलाई।'

कोंस्टास आस्ट्रेलियाई टीम में, नाथन मैकस्वीनी बाहर

मेलबर्न, (भाषा) : युवा सैम कोंस्टास को भारत के खिलाफ बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के आखिरी दो मैचों के लिये शुक्रवार को पहली बार आस्ट्रेलियाई टीम में शामिल किया गया जबकि सलामी बल्लेबाज नाथन मैकस्वीनी को जगह नहीं मिल सकी है।

उन्नीस वर्ष के कोंस्टास पिछले 70 साल में आस्ट्रेलिया के लिये पदार्पण करने वाले सबसे युवा टेस्ट बल्लेबाज होंगे। पहले तीन टेस्ट में आस्ट्रेलिया के शीर्षक्रम खासकर मैकस्वीनी के खराब प्रदर्शन के बाद कोंस्टास को टीम में जगह मिली। दो अक्टूबर को अपना उन्नीसवां जन्मदिन मनाने वाले कोंस्टास अगर बॉक्सिंग डे टेस्ट के लिये चुने जाते हैं तो वह आस्ट्रेलिया के टेस्ट कप्तान पैट कमिंस के बाद पदार्पण करने वाले सबसे युवा खिलाड़ी होंगे। कमिंस ने 2011 में जोहानिसबर्ग में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पदार्पण किया तब वह 18 वर्ष 193 दिन के थे। कोंस्टास इसके साथ ही इयान क्रेग के बाद आस्ट्रेलिया के लिये टेस्ट पदार्पण करने वाले सबसे युवा बल्लेबाज बन जायेंगे। क्रेग ने 1953 में एमसीजी पर दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेला तब वह 17 वर्ष 239 दिन के थे। पर्थ में पहले टेस्ट में पदार्पण करने वाले 25 वर्ष के मैकस्वीनी एक भी अर्धशतक नहीं लगा सके और छह पारियों में 10, 0, 39, नाबाद 10, नौ और चार स्कोर किया। वहीं कोंस्टास ने न्यू साउथवेल्स के लिये शेफील्ड शील्ड के दो मैचों में शतक जमाया । भारत ए के खिलाफ एमसीजी पर मैच में उन्होंने नाबाद 73 रन बनाये जबकि कैनबरा में भारत के खिलाफ प्रधानमंत्री एकादश के लिये गुलाबी गेंद के मैच में 107 रन की पारी खेली। आस्ट्रेलिया के मुख्य चयनकर्ता जॉर्ज बेली ने कहा कि सैम को पहली बार टेस्ट टीम में शामिल किया गया है । उसकी बल्लेबाजी की शैली अलग है। हमें विश्वास है कि नाथन के पास काबिलियत है और उसे भविष्य में टेस्ट क्रिकेट में औंर मौके मिलेंगे। उसे बाहर रखने का फैसला कठिन था।

चौथे और पांचवें टेस्ट के लिये आस्ट्रेलियाई टीम

पैट कमिंस (कप्तान), सीन एबोट, स्कॉट बोलैंड, एलेक्स कैरी, ट्रेविस हेड, जोश इंगलिस, उस्मान ख्वाजा, सैम कोंस्टास, मार्नस लाबुशेन, नाथन लियोन, मिचेल मार्श, झाय रिचर्डसन, स्टीव स्मिथ, मिचेल स्टार्क, ब्यू वेबस्टर।

मैकस्वीनी को बाहर करना घबराहट : ह्यूज

आस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज मर्व ह्यूज ने हालांकि अगले दो टेस्ट के लिये टीम में बदलाव से बचने की ताकीद की थी। पूर्व चयनकर्ता ने कहा था कि इस बदलाव की कोई जरूरत नहीं है । पिछला टेस्ट ड्रॉ रहा है । एक टेस्ट जीता है और एक ड्रॉ खेला है तो घबराने की क्या जरूरत है।

युगांडा में रहस्यमयी वायरस डिंगा-डिंगा से सैकड़ों बीमार

कंपाला, (एजेंसी): नोवल कोरोना वायरस के बाद अफ्रीका में एक नई बीमारी सामने आई है। इस बीमारी ने अफ्रीकी देश युगांडा के कई लोगों को अपनी चपेट में ले लिया है। इस रहस्यमयी बीमारी का नाम डिंगा डिंगा बताया जा रहा है। खबरों की मानें तो युगांडा में 300 से ज्यादा लोग इस बीमारी की चपेट में आ गए हैं। डॉक्टर भी इस बीमारी का तोड़ निकालने में जुटे हैं। हैरानी की बात तो यह है कि युगांडा की ज्यादातर महिलाएं और लड़कियां ही इस बीमारी का शिकार हो रही हैं।

इस वायरस की चपेट में आने पर मरीज के शरीर में तेज कंपकंपी होने लगती है। ये कंपकंपी इतनी तेज होती है कि देखने पर ऐसा लगता है कि जैसे मरीज नाच रहा हो। संक्रमण अधिक होने पर मरीज को लकवा भी मार सकता है। युगांडा के जिस बुंदीबग्यो में इस बीमारी का सबसे

- बुखार के साथ शरीर में हो रही कंपकंपी

ज्यादा प्रकोप है, वहां के जिला स्वास्थ्य अधिकारी कियिता क्रिस्टोफर के मुताबिक इस वायरस के बारे में पहली बार 2023 में पता चला था। इसके बाद से युगांडा की सरकार इसकी जांच कर रही है। गनीमत यह है कि अभी तक डिंगा डिंगा वायरस से किसी की मौत होने की कोई जानकारी नहीं है। विभाग ने समय रहते लोगों को दवाई लेने की सलाह दी है।

रिपोर्ट के मुताबिक अब तक इस बीमारी से बचने के लिए कोई वैक्सीन नहीं है। युगांडा के स्वास्थ्य अधिकारियों ने लोगों से अपील की है कि अगर किसी को डिंगा डिंगा के लक्षण महसूस होते हैं तो बिना देर किए अस्पताल आएं।

आगे भी एक्शन लेते रहेंगे

वाशिंगटन, (भाषा): अमेरिका के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बृहस्पतिवार को कहा कि पाकिस्तान के लंबी दूरी के बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम को समर्थन देने से इनकार करना वाशिंगटन की पुरानी नीति है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि हम इस तरह की एक्टिविटी के खिलाफ आगे भी एक्शन लेते रहेंगे। यह टिप्पणी बाइडेन प्रशासन की ओर से पाकिस्तान सरकार के स्वामित्व वाली प्रमुख एयरोस्पेस और रक्षा एजेंसी-राष्ट्रीय विकास परिसर (एनडीसी) पर प्रतिबंध लगाने के एक दिन बाद आई है।

विदेश विभाग के प्रधान उप प्रवक्ता वेदांत पटेल ने अपने दैनिक संवाददाता सम्मेलन में कहा, 'यह इनकार पाकिस्तान के लंबी दूरी के बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम के संबंध में हमारी चिंताओं पर आधारित हैं, लेकिन इनसे अन्य क्षेत्रों में अमेरिका और पाकिस्तान के बीच मौजूद व्यापक सहयोग प्रभावित नहीं होता।' अमेरिका ने पाकिस्तान के बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम में

- विदेश विभाग के प्रवक्ता वेदांत पटेल ने कहा कि पाकिस्तान का एजेंडा सही नहीं है

योगदान देने के आरोप में चार पाकिस्तानी कंपनियों पर बुधवार को प्रतिबंध लगाया था। इनमें इस्लामाबाद स्थित एनडीसी के अलावा कराची स्थित अख्तर एंड संस प्राइवेट लिमिटेड, एफिलिएट्स इंटरनेशनल और रॉकसाइड एंटरप्राइज शामिल हैं। एक सवाल के जवाब में पटेल ने कहा, 'अमेरिका वैश्विक परमाणु अप्रसार व्यवस्था को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है और पाकिस्तान इसमें एक महत्वपूर्ण भागीदार है।

भारत अंडर 19 महिला टी20 एशिया कप फाइनल में

सिंगापुर, (भाषा): भारत ने अंडर 19 महिला टी20 एशिया कप में अपना अपराजेय अभियान जारी रखते हुए श्रीलंका को चार विकेट से हराकर शुक्रवार को फाइनल में प्रवेश कर लिया। आयुषी शुक्ला ने भारत के लिये चार ओवर में दस रन देकर चार विकेट लिये। भारत ने टॉस जीतकर गेंदबाजी करते हुए श्रीलंकाई टीम को नौ विकेट पर 98 रन पर रोक दिया । पारूणिका सिसोदिया ने दो विकेट लिये। श्रीलंका के लिये सिर्फ सुमुदु निसांसाला (21) और कप्तान मानुदी एन (33) ही दोहरे अंक तक पहुंच सकी। भारत की शुरूआत भी अच्छी नहीं रही और सलामी बल्लेबाज ईश्वरी असवारे तीसरी ही गेंद पर आउट हो गई । लेकिन जी कमलिनी (28) और जी त्रिशा (32) ने टीम को जीत तक पहुंचाया। भारत ने पहले मैच में पाकिस्तान को नौ विकेट से हराया था ।

12 जनवरी को होगा जय शाह के उत्तराधिकारी का चयन

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) बीसीसीआई की आमसभा की विशेष बैठक 12 जनवरी को मुंबई में होगी जिसमें जय शाह और आशीष शेलार की जगह नये सचिव और कोषाध्यक्ष का चुनाव होगा। बीसीसीआई का संविधान कहता है कि किसी भी रिक्त पद पर एसजीएम बुलाकर 45 दिन के भीतर नियुक्ति होनी चाहिये । बीसीसीआई की आगामी एसजीएम समय सीमा के 43 दिन के भीतर होगी । एक प्रदेश संघ के अध्यक्ष ने बताया कि शीर्ष परिषद की बृहस्पतिवार को हुई बैठक के बाद प्रदेश ईकाइयों को एसजीएम के लिये अधिसूचना भेजी गई। एसजीएम 12 जनवरी को बीसीसीआई मुख्यालय पर आयोजित की जायेगी ।''शाह एक दिसंबर को आईसीसी के सबसे युवा चेयरमैन बने जबकि भाजपा

- मुंबई में होगी बीसीसीआई की एसजीएम, कोषाध्यक्ष आशीष शेलार की जगह भी नया पदाधिकारी लेगा जगह

के नेता शेलार को महाराष्ट्र सरकार में कैबिनेट मंत्री बनाया गया है। उच्चतम न्यायालय द्वारा मंजूर लोढा समिति के सुधारों के अनुसार एक व्यक्ति दो पदों पर नहीं रह सकता । शाह का कार्यकाल अभी एक साल का बाकी था लेकिन वह दो पदों पर नहीं रह सकते । इसके अलावा लोढा समिति के सुझावों के तहत कोई मंत्री या जनसेवक बीसीसीआई का पदाधिकारी नहीं हो सकता।

1971 से आगे बढ़ने का समय

इस्लामाबाद, (आईएएनएस) : काहिरा में विकासशील देशों के 'डी-8 शिखर सम्मेलन' के दौरान बंगलादेश की अंतरिम सरकार के नेता मोहम्मद यूनुस ने पाकिस्तान के पीएम शहबाज शरीफ से मुलाकात की। यूनुस ने मुलाकात के दौरान 1971 में इस्लामाबाद से ढाका के अलग होने से जुड़ी शिकायतों को हल करने की इच्छा जताई।

मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक यूनुस ने पीएम शहबाज से कहा, ये मुद्दे बार-बार सामने आते रहे हैं। आइए हम इन मुद्दों को सुलझा लें ताकि हम आगे बढ़ सकें। पाकिस्तान पीएमओ की ओर से जारी एक बयान में कहा गया, प्रधानमंत्री शहबाज ने डॉ. यूनुस के साथ बैठक के दौरान दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संबंधों पर

- शहबाज शरीफ से मुलाकात के दौरान यूनुस का उमड़ा 'पाकिस्तान प्रेम'

प्रकाश डाला। उन्होंने द्विपक्षीय सहयोग, विशेष रूप से व्यापार, लोगों के बीच संपर्क और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने की पाकिस्तान की गहरी इच्छा व्यक्त की।

मेडिकल सीटें बर्बाद नहीं होनी चाहिए : सुप्रीम कोर्ट का निर्देश

नई दिल्ली, (भाषा): उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को कहा कि ऐसे समय में जब देश डॉक्टरों की भारी कमी से जूझ रहा है, 'कीमती' मेडिकल सीटें बर्बाद नहीं होनी चाहिए। न्यायालय ने प्राधिकारियों को निर्देश दिया कि वे रिक्त सीटों को भरने के लिए नये सिरे से काउंसलिंग आयोजित करें। न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन की पीठ ने दाखिल देने वाले प्राधिकारियों को विशेष काउंसलिंग आयोजित करने और 30 दिसंबर तक मेडिकल पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्रक्रिया पूरी करने को कहा। पीठ ने आदेश दिया, ''विशिष्ट तथ्यों और परिस्थितियों तथा इस बात पर ध्यान रखते हुए कि देश डॉक्टरों की भारी कमी से जूझ रहा है, बहुमूल्य मेडिकल सीटें व्यर्थ नहीं जानी चाहिए, हम अंतिम अवसर के रूप में अवधि बढ़ाने के लिए इच्छुक हैं।'' शीर्ष अदालत ने यह आदेश उन याचिकाओं पर विचार करते हुए दिया, जिनमें दाखिला देने वाले प्राधिकारियों को पांच दौर की काउंसलिंग के बाद भी खाली बची सीटों के लिए काउंसलिंग का एक विशेष दौर आयोजित करने का निर्देश देने का अनुरोध किया गया है।

- 30 दिसंबर तक मेडिकल पाठ्यक्रम में प्रवेश प्रक्रिया भी पूरी की जाए और काउंसलिंग नए सिरे से की जाए

साव अपना दुश्मन खुद है: एमसीए

मुंबई, (भाषा) मुंबई क्रिकेट संघ (एमसीए) ने विजय हजारे ट्रॉफी की टीम से बाहर किये जाने पर पृथ्वी साव की भड़ास को तूल नहीं देते हुए कहा कि वह लगातार अनुशासन तोड़ता रहा है और अपना दुश्मन खुद है। एमसीए के एक सीनियर अधिकारी ने कहा कि खराब फिटनेस, रवैये और अनुशासन मसले के कारण कई बार टीम को मैदान पर उसे छिपाने पर मजबूर होना पड़ता था। साव ने 16 सदस्यीय विजय हजारे ट्रॉफी टीम में जगह नहीं मिलने पर सोशल मीडिया पोस्ट के जरिये गुस्सा निकाला था । वह सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी जीतने वाली मुंबई टीम का हिस्सा थे। अधिकारी ने कहा कि सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में हम दस फील्डरों के साथ खेल रहे थे क्योंकि साव को छिपाना पड़ता था। गेंद उसके पास से निकल जाती थी और वह पकड़ नहीं पाता था। उन्होंने कहा कि बल्लेबाजी के दौरान भी उसे गेंद तक पहुंचने में दिक्कत हो रही थी।

धीरज और दीपिका बने राष्ट्रीय चैम्पियन

जमशेदपुर, (पंजाब केसरी): धीरज बोम्मादेवरा और दीपिका कुमारी की ओलंपियन जोड़ी ने शुक्रवार को यहां अपने प्रतिद्वंद्वियों की कड़ी चुनौती से पार पाते हुए तीरंदाजी सीनियर राष्ट्रीय प्रतियोगिता में क्रमश: पुरुष और महिला रिकर्व खिताब हासिल किया। पैट्रोलियम खेल संवर्धन बोर्ड (पीएसपीबी) का प्रतिनिधित्व कर रही दीपिका ने पेरिस ओलंपिक की अपनी साथी अंकिता भकत को महिलाओं के फाइनल में 6-2 से शिकस्त दी। हरियाणा के उभरते हुए तीरंदाज दिव्यांश चौधरी ने भी भारत के अंतरराष्ट्रीय तीरंदाज धीरज के सामने कड़ी चुनौती पेश की लेकिन सेना के तीरंदाज ने 6-2 से पुरुष खिताब अपनी झोली में डाला। टीम स्पर्धा में सेना को उलटफेर का सामना करना पड़ा जिसमें दूसरी वरीयता प्राप्त टीम को कांस्य पदक से संतोष करना पड़ा। सेना ने राजस्थान को 5-4 (29-28) के अंतर से मात दी। रेलवे ने हरियाणा को 6-2 से हराकर पुरुष टीम स्पर्धा का स्वर्ण पदक अपने नाम किया। दीपिका ने पीएसपीबी के लिए दो स्वर्ण पदक जीते। उन्होंने मिश्रित टीम स्पर्धा में अतनु दास के साथ मिलकर पंजाब को 6-2 से हराकर दूसरा स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

उस्ताद जाकिर हुसैन सुपुर्द-ए-ख़ाक

न्यूयॉर्क, (भाषा): विश्व प्रसिद्ध तबला वादक जाकिर हुसैन को बृहस्पतिवार को सैन फ्रांसिस्को में सुपुर्द-ए-खाक किया गया। प्रसिद्ध तालवादक ए. शिवमणि और अन्य कलाकारों ने कुछ दूरी से तबला वादक को संगीतमय विदाई दी। दुनिया के सबसे बेहतरीन तबला वादकों में से एक हुसैन का फेफड़ों की बीमारी 'इडियोपैथिक पल्मोनरी फाइब्रोसिस' से उत्पन्न जटिलताओं के कारण सोमवार को सैन फ्रांसिस्को के एक अस्पताल में निधन हो गया था। वह 73 वर्ष के थे। उन्हें बृहस्पतिवार को सैन फ्रांसिस्को के फर्नवुड कब्रिस्तान में सुपुर्द-ए-खाक किया गया।

हुसैन के अंतिम संस्कार में उनके सैकड़ों प्रशंसक उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्र हुए। शिवमणि और कई अन्य संगीतकारों ने उन्हें श्रद्धांजलि देने

तबलावादक शिवमणि ने संगीतमय विदाई दी

के लिए थोड़ी दूरी पर खड़े होकर ड्रम बजाया। शिवमणि ने कहा, ताल ही ईश्वर है, वह (ताल) आप हैं जाकिर भाई। 1982 से लेकर अब तक के हमारे सफर में मैंने बहुत कुछ सीखा। हर पल आप ताल में हमारे साथ होते हैं। जब भी मैं लय पकड़ता हूं, आप वहां होते हैं। हम आपसे प्यार करते हैं जाकिर भाई। आपकी यात्रा सुखद रहे। कृपया सभी उस्तादों को मेरा प्रणाम कहना।' सैन फ्रांसिस्को में भारत के महावाणिज्य दूत डॉ. के. श्रीकर रेड्डी ने भी हुसैन को श्रद्धांजलि अर्पित की।

सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, 'महान तबला वादक और पद्म विभूषण से सम्मानित उस्ताद जाकिर हुसैन के पार्थिव शरीर को आज दोपहर सैन फ्रांसिस्को के पास मिलवैली के फर्नवुड कब्रिस्तान में दफनाया गया।' इसने कहा, 'भारत सरकार और भारत के लोगों की ओर से महावाणिज्य दूत डॉ श्रीकर रेड्डी ने उस्ताद जाकिर हुसैन के पार्थिव शरीर पर भारतीय राष्ट्रीय ध्वज रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की। उनकी पत्नी एंटोनिया मिन्नेकोला और उनके परिवार के सदस्यों के प्रति संवेदना व्यक्त की। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का श्रद्धांजलि संदेश भी पढ़ा।'

क्रोएशिया के स्कूल में चाकू हमला

जगरेब, (एजेंसी): क्रोएशिया की राजधानी जगरेब के एक स्कूल में चाकू से किए गए हमले में 7 साल की एक लड़की की मौत हो गई और कम से कम पांच अन्य छात्र और एक शिक्षक घायल हो गए। रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार, स्थानीय अस्पताल ने कहा कि घायल शिक्षक को जानलेवा चोटें आई हैं। अधिकारियों ने बताया कि हमला स्थानीय समयानुसार सुबह 9:50 बजे इसी नाम के पड़ोस में प्रेको एलीमेंट्री स्कूल में हुआ। उन्होंने हमलावर को "युवा पुरुष" बताया और कहा कि उसे हिरासत में लिया गया है। क्रोएशिया के आंतरिक मंत्रालय ने कहा कि हमलावर 19 साल का था। स्थानीय मीडिया ने बताया कि हमलावर स्कूल का पूर्व छात्र था और उसने स्कूल की इमारत से बच्चों के भागते और स्कूल के प्रांगण में एक मेडिकल हेलीकॉप्टर के उतरने के वीडियो फुटेज दिखाए।

निगाहें होंगी वरुण चक्रवर्ती पर

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) : भारत को आठ हफ्ते से भी कम समय में चैंपियंस ट्रॉफी खेलनी है और शनिवार से देशभर में शुरू हो रही विजय हजारे ट्रॉफी के लिए आगामी राष्ट्रीय एक दिवसीय चैंपियनशिप के दौरान एक बेहतरीन कलाई के स्पिनर, ऋषभ पंत का साथ देने के लिए दूसरे विकेटकीपर और मुख्य तेज गेंदबाजों की फॉर्म पर सबकी नजरें लगी होंगी।

हालांकि 50 ओवर की टीम के मुख्य खिलाड़ी अभी ऑस्ट्रेलिया में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए खेल रहे हैं लेकिन राष्ट्रीय प्रतियोगिता का अपना महत्व है क्योंकि बड़ौदा के ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या जैसे कुछ सितारों को इसमें खेल का महत्वपूर्ण समय मिलेगा। पंजाब के अर्शदीप सिंह, मध्य प्रदेश के आवेश खान, राजस्थान के खलील अहमद, बंगाल के मुकेश कुमार, उत्तर प्रदेश के यश दयाल भी गेंदबाजी समूह में शामिल होना चाहेंगे जिसकी कमान अगर सब कुछ ठीक रहा तो उम्मीद है कि जसप्रीत बुमराह संभालेंगे। कुलदीप यादव का 'ग्रोइन' चोट के कारण एनसीए (राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी) में लंबे समय तक 'रिहैबिलिटेशन' में रहना चयन समिति को अक्षर पटेल और वाशिंगटन सुंदर के साथ एक अच्छे विकल्प की तलाश करने के लिए मजबूर कर सकता है। चक्रवर्ती और गुजरात के रवि बिश्नोई दो कलाई के स्पिनर हैं जिन्होंने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। बिश्नोई ने 2022 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अपना एकमात्र वनडे खेला था और कुलदीप की अनुपस्थिति ने उन्हें 50 ओवर की टीम में दावा पेश करने का मौका दिया है।

- रवि बिश्नोई भी चैंपियंस ट्रॉफी टीम में जगह बनाने के लिये दावेदारी पेश करेंगे : वाशिंगटन सुंदर, अक्षर पटेल और यजुवेंद्र चहल भी टीम में जगह बनाने के दावेदार